भाषा और संस्कृति

खण्ड-1

(1)
मातृभूमि
(मैथिलीशरण गुप्त)

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. मातृभूमि कविता में मातृभूमि के आभूषण क्या–क्या हैं?

उत्तर– नीलांबर, सूर्य–चन्द्र युग, रत्नाकर, नदियाँ, फूल तारे, खग–वृंद, शेषफन आदि मातृभूमि के आभूषण हैं।

प्रश्न–2. 'तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?' ऐसा क्यों कहा गया है?

अथवा

'तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा?'– पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– मातृभूमि माँ के समान है। जिस प्रकार बेटा माँ की ममता का प्रत्युपकार कर नहीं सकते हैं अर्थात् बदला नहीं चुका सकता है, उसी प्रकार हम मातृभूमि का भी प्रत्युपकार नहीं कर सकते हैं। क्योंकि मातृभूमि का स्थान सर्वोच्च है और वह हमारी माँ है।

प्रश्न–3. छह ऋतुओं के नाम बताइए।

उत्तर– शरद, शिशिर, हेमन्त, बसन्त, ग्रीष्म एवं पावस (वर्षा) ऋतु।– छह ऋतुएँ एक वर्ष में होती हैं।

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. मैथिलीशरण गुप्त का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

अथवा

कविवर मैथिलीशरण गुप्त जी के जीवन–वृत्त एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– जीवन–वृत्त– मैथिलीशरण गुप्त जी का जन्म उत्तरप्रदेश के झाँसी जिले के 'चिरगाँव' नामक ग्राम में 3 अगस्त सन् 1886 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामचरण और माताश्री का नाम श्रीमती काशीबाई था। आपके माता–पिता वैष्णव–भक्त थे। इसीलिए राम–भक्ति के संस्कार आपको अपने माता–पिता से प्राप्त हुए थे।

शिक्षा– आपकी प्रारंभिक–शिक्षा चिरगाँव के प्राथमिक विद्यालय में हुई तथा माध्यमिक–शिक्षा झाँसी नगर में हुई। आगे की शिक्षा आपने घर पर ही स्वाध्याय से प्राप्त की।

कवित्व– आपमें बाल्यावस्था से ही काव्यात्मक–प्रवृत्ति विद्यमान थी। आप अल्पावस्था में ही छुटपुट काव्य रचनाएँ करने लगे थे। गुप्त जी मुख्यतः भारतीय संस्कृति एवं वैष्णव परम्परा के प्रतिनिधि कवि हैं।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सम्पर्क में आने के बाद उनकी प्रेरणा से काव्य–रचनाएँ लिखकर आपने हिन्दी–काव्य–धारा को समृद्ध किया। आपकी कविता में मुख्य रूप से राष्ट्र–भक्ति एवं राष्ट्र–प्रेम का स्वर मुखरित हुआ है। इसीलिए आपको 'राष्ट्र–कवि' की

उपाधि से विभूषित किया गया था। आप गाँधीवादी–दर्शन से प्रभावित रहे और स्वाधीनता–आन्दोलन में कार्य करते हुए आपने वर्ष 1941 में जेल–यात्रा भी की। अन्त में 12 दिसम्बर सन् 1964 को आप पंचतत्व में विलीन हो गए।

कृतित्व– आपकी रचनाओं को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है– (1) मौलिक रचनाएँ, (2) अनूदित रचनाएँ।

(1) मौलिक रचनाएँ– (1) साकेत महाकाव्य, (2) भारत–भारती, (3) यशोधरा, (4) द्वापर, (5) जयभारत, (6) विष्णु–प्रिया आदि।

(2) अनूदित रचनाएँ– (1) वीरांगना, (2) मेघनाद–वध, (3) वृत्त–संहार, (4) स्वप्नवासवदत्ता, (5) प्लासी का युद्ध, (6) विरहिणी व्रजांगना आदि।

काव्य–सौन्दर्य– आपके काव्य में कला–पक्ष एवं भाव–पक्ष का सुन्दर समन्वय है। आपने खड़ी बोली हिन्दी में रचनाएँ लिखी हैं। आपकी भाषा सरल, सुबोध एवं भावनुगामिनी है। गुप्त जी सहज कवि थे। इसीलिए अलंकारों ने स्वयं ही इनके काव्य में स्थान पा लिया है। इनके काव्य में मुख्यतः उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास, श्लेष आदि अलंकारों का प्रयोग–वैशिष्ट्य दर्शनीय है। आपके काव्य में प्रायः सभी रसों का परिपाक दृष्टिगोचर होता है। काव्य–गुणों का सहज समावेश है। रचनाएँ छन्दोबद्ध हैं। गीत–शैली की काव्य–रचना में आप विशिष्ट हैं।

सम्मान एवं पुरस्कार– वर्ष 1937 में आपको हिन्दी साहित्य–सम्मेलन द्वारा 'साकेत महाकाव्य' के लिये 'मंगलाप्रसाद' पुरस्कार दिया गया। सन् 1953 में भारत–सरकार ने इन्हें 'पद्म–विभूषण' से सम्मानित किया गया। सन् 1954 में साहित्य एवं शिक्षा–क्षेत्र में आपको 'पद्म–भूषण' से सम्मानित किया गया।

सारांशतः हम कह सकते हैं कि मैथिलीशरण गुप्त जी की रचनाओं में भारतीय–संस्कृति से प्रेम और राष्ट्रानुराग पूर्ण रूप से अभिव्यक्त हुआ है। उनके काव्यों में भारत वर्ष का गौरवमय अतीत, भारतीय नारी का आदर्श एवं कर्मशीलता की प्रतिष्ठा केन्द्रीय–भावना के रूप में मुखरित है।

प्रश्न–2. 'मातृभूमि' कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर– श्री मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के प्रसिद्ध कवि हैं। वे राष्ट्रकवि माने जाते हैं। 'मातृभूमि' गुप्त जी की एक प्रसिद्ध कविता है, जिसमें वे जन्मभूमि का गुणगान करके उसके लिए अपनी जान भी देने का आह्वान करते हैं। मातृभूमि के हरियाली के लिए नीलाकाश एक सुन्दर वस्त्र की तरह शोभित है। सूरज और चाँद इसके मुकुट हैं, सागर (समुद्र) इसकी करधनी है। यहाँ बहने वाली नदियाँ प्रेम का प्रवाह है। तारे और फूल इसके आभूषण हैं। पक्षियों का समूह इसके स्तुतिपाठक हैं, आदिशेष का सहस्र फन सिंहासन है। बादल पानी बरसाकर इसका अभिषेक करते हैं। कवि अपनी मातृभूमि के इस सुन्दर रूप पर अपना आत्मसमर्पण करते हैं। वे कहते हैं कि वास्तव में तू सगुण–साकार मूर्ति है।

जन्मभूमि से अपने बचपन का संबंध व्यक्त करते हुए कवि कहते हैं कि इसकी धूली में लोट–लोटकर वह बड़े हुए हैं। इसी भूमि पर घुटनों के बल सरक–सरक कर ही उसने अपने पैरों पर खड़ा रहना सीखा है। यहाँ रहकर ही बचपन में उसने श्री रामकृष्ण परमहंस की तरह सभी आनंद को भोगा है। इसके कारण ही वे धूली भरे हीरे कहलाये। इस जन्मभूमि की गोदी

में खेलकूद कर उसने (कवि) हर्ष का अनुभव किया है। ऐसी मातृभूमि को देखकर हम आनंद से मग्न हो जाते हैं। कवि कहते हैं– जो सुख–शांति हमने भोगी है, वे सब तुम्हारी (भूमि की) ही देन है। तेरे (भूमि) द्वारा किए गए उपकारों का बदला चुकाना आसान नहीं है। यह देह तेरी है, तुझसे ही बनी हुई है, तेरे ही जीव–जल से सनी हुई है। अन्त में मृत्यु होने पर इस निर्जीव शरीर को तू ही अपनाएगी। हे मातृभूमि! अन्त में हम सब तेरी ही मिट्टी में विलीन हो जाएंगे। सरल शब्दों में कवि मातृभूमि के लिए युवकों को अपनी जान अर्पित करने की प्रेरणा देता है। आधुनिक समाज में देशप्रेम की आवश्यकता निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। आतंकवाद, साम्प्रदायिकता आदि को रोकने के लिए हमें देशप्रेमी होने की अति आवश्यकता है।

(2)
शतरंज के खिलाड़ी
(मुंशी प्रेमचन्द)

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के पात्रों के नाम लिखिए।

उत्तर– 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के मुख्य–पात्र– (1) मिरजा सज्जाद, (2) मीर रोशन अली हैं।

गौण–पात्र– (1) मिरजा की बेगम साहिबा, (2) मीर साहब की बेगम, (3) हरिया नौकर एवं अन्य नौकर, (4) बादशाही फौज का अफसर।

प्रश्न–2. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का उद्देश्य लिखिए।

उत्तर– कहानी का उद्देश्य– इस कहानी का नाम है 'शतरंज के खिलाड़ी'। शतरंज के खेल में बहुत बुद्धि लगानी पड़ती है। जिस प्रकार युद्ध के मैदान में बचाव और आक्रमण का महत्व होता है, वैसे ही शतरंज के खेल में भी होता है। प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से भारतवर्ष के पराधीन होने के कारणों को उजागर करते हुए यह संदेश दिया है कि मिरजा और मीर जैसे लोग यदि अपना दिमाग देश को बचाने में लगाते तो अंग्रेजों की गुलामी से भारतवर्ष को बचाया जा सकता था।

स्वाधीनता आन्दोलन के समय की अनेक रचनाओं में इतिहास से सबक लेने की बात कही जा रही थी। प्रेमचंद ने इस कहानी में भी स्वाधीनता आन्दोलन में लगे नेताओं और उनके पीछे चलने वाली जनता को यह सीख दी कि देश और स्वाधीनता के हित में हमें अपने आराम तथा विलास को त्याग देना चाहिए और अपनी जिम्मेदारियों को निभाना चाहिए। लेकिन 'शतरंज के खिलाड़ी' के दोनों खिलाड़ी देश और समाज की उपेक्षा करके शतरंज में ही डूबे रहते हैं। वे अपनी बुरी आदतों के पक्ष में कहते हैं कि शतरंज खेलने से बुद्धि तीक्ष्ण होती है। लेकिन उनकी तीक्ष्ण बुद्धि का कोई सामाजिक उपयोग कहानी में नहीं दिखा। स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति का कोई भी पक्ष तब तक सकारात्मक नहीं बन पाता, जब तक कि उसका संबंध समूह के हित से न हो। इस कहानी में शतरंज, मीर और मिरजा– ये सब अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं बल्कि इनके माध्यम से कही गई बात महत्वपूर्ण है। यही प्रेमचंद का उद्देश्य भी है। प्रेमचंद देश को गुलामी से मुक्त देखना चाहते थे, इसलिए उन्होंने गुलाम बनाने वाली स्थितियों का चित्रण करके पाठकों को सतर्क किया है। इसके साथ–साथ यह भी बताया है कि

मानसिक प्रवृत्तियों का भी संक्रमण होता है, अर्थात् एक वर्ग की बुरी आदतें, दूसरे वर्ग तक पहुँचती हैं। कहानी में नवाब, मीर, मिरजा सब निष्क्रिय विलासी और सुख–सविधाओं में डूबे हैं। वे संघर्ष करने से बचते हैं। इन बातों का असर जनता पर भी पड़ता है। इसलिए समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक–दूसरे से कटा हुआ, व्यक्तिगत राग–रंग में डूबा है। इसका परिणाम यह होता है कि न तो देश बचता है, न ही व्यक्ति। नबाब बंदी हो गए और मीर और मिरजा व्यक्तिगत झूठी शान के कारण एक–दूसरे की हत्या कर देते हैं। बचते हैं– खण्डहर, टूटी दीवारें, धूल–धूसरित मीनारें। ये सब मिलकर मिरजा और मीर पर रोते हैं।

प्रश्न–3. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के किसी एक पात्र का परिचय दीजिए।

अथवा

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी के किसी एक पात्र की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी मुंशी प्रेमचन्द जी की महत्वपूर्ण कहानियों में से एक है। प्रस्तुत कहानी का सम्पूर्ण कथानक मुख्यतः दो पात्रों– मिरजा सज्जाद और मीर रोशन अली के इर्द–गिर्द घूमता है। यहाँ 'मिरजा सज्जाद' का परिचय प्रस्तुत है–

'मिरजा सज्जाद' 'शतरंज–खेल' के एक कुशल खिलाड़ी हैं। वे लखनऊ की किसी मौरूसी जागीर के जागीरदार हैं। सुबह से शाम तक अपने अजीज मित्र मीर रोशन अली के साथ 'शतरंज–खेलना' ही उनका काम है।

'मिरजा सज्जाद' के घर में कोई बड़ा–बूढ़ा न था, केवल उनकी बेगम साहिबा थीं। मिरजा की बेगम अपने पति मिरजा को शतरंज के खेल में प्रतिदिन मशगूल रहने के कारण अवसर खोज–खोज कर लताड़ती रहती थीं, लेकिन मिरजा पर इसका कोई प्रभाव न पड़ता था। वे अपनी सफाई देने के लिए सारा इल्जाम मीर साहब को देते थे।

'मिरजा' अंग्रेज–बादशाह के फौज के अफसर से घबराते हैं, उन्हें डर है कि कहीं उन्हें मोर्चे पर न जाना पड़े और वे बेमौत मारे जायें। इसीलिए वे अपने दोस्त मीर के साथ गोमती नदी के पास किसी वीरान मस्जिद पर 'शतरंज' खेलने लगते हैं। इस वीरान मस्जिद को शायद लखनऊ के नबाब आसफउद्दौला ने बनवाया था। वे दोपहर नानबाई की दुकान पर जाकर खाना खाते हैं और सुबह से शाम तक वहीं मीर के साथ शतरंज खेलते हैं। उन्हें अंग्रेजों द्वारा लखनऊ रियासत को हड़पने की साजिश की जरा भी फिक्र न थी। वे तो विलासिता और शतरंज के नशे में डूबे हुए थे।

लखनऊ के नबाब बाजिद अली को अंग्रेजी सैनिकों द्वारा पकड़े जाने पर मिरजा सज्जाद का मन थोड़ा उदास होता है, लेकिन 'शतरंज' की शह और मात उन्हें राजनैतिक संकट के विषय में कुछ भी सोचने का अवसर नहीं देती है।

इस प्रकार मिरजा सज्जाद 'शतरंज' खेलते–खेलते जब हारने लगते हैं, तब आपस में वे दोनों शतरंज के खेल में लड़ने लगते हैं। अन्त में तलवारों से एक–दूसरे को मार डालते हैं।

अन्ततः कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द जी लिखते हैं कि मिरजा सज्जाद विलासी थे, लेकिन कायर नहीं थे। उनमें राजनीतिक भावों का अधःपतन हो गया था। इसलिए मिरजा ने बादशाह और बादशाहत के लिए प्राणों की बाजी न लगाकर 'शतरंज के बजीर' की रक्षा में अपने मित्र के प्राण ले लिए और प्राण दे दिए।

अतः यह कहना समीचीन है कि प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने मिरजा सज्जादं पात्र के माध्यम से तत्कालीन जागीरदारों की विलासी मनोवृत्ति, बादशाह और बादशाहत के प्रति गद्दारी को अभिव्यंजित करके भारतवर्ष की पराधीनता के कारणों को रेखांकित किया है।

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'प्रेमचन्द' का जीवन–परिचय सविस्तार लिखिए।

अथवा

'मुंशी प्रेमचन्द' के जीवन–कृत एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'मुंशी प्रेमचन्द' जी के 'रचना–वैशिष्ट्य' को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– जीवन–वृत्त– हिन्दी के कथा–सम्राट मुंशी प्रेमचन्द जी का जन्म 31 जुलाई सन् 1880 को वाराणसी जिले के लमही गाँव के कायस्थ परिवार में हुआ था। इनका वास्तविक नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। इनकी माता आनन्द देवी एक कुशल गृहिणी जबकि पिता मुंशी अजायबराय डाक–मुंशी तथा खेतिहर किसान थे। सात वर्ष की आयु में आपकी माता का तथा चौदह वर्ष की आयु में पिता जी का स्वर्गवास हो गया। इसलिए आपका प्रारंभिक–जीवन अत्यन्त संघर्षमय हो गया, किन्तु आपने साधनहीन होकर भी अपनी कुशाग्र–बुद्धि एवं परिश्रम से अपना अध्ययन जारी रखा।

अध्ययन एवं अध्यापन– आपकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू एवं फारसी में हुई। आपको बचपन से ही पढ़ने का बड़ा शौक था। यही कारण है कि 13 वर्ष की उम्र में ही आपने 'तिलिस्म–ए–होशरूबा' पढ़ लिया था। सन् 1898 में आपने मैट्रिक (कक्षा–8वीं) की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली थी। इसके बाद वे एक विद्यालय में शिक्षक पद पर नियुक्त हो गए थे। नौकरी के साथ–साथ उन्होंने अपना अध्ययन बंद नहीं किया, अपितु आपने विद्याध्ययन करते हुए सन् 1910 में अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास विषय के साथ इंटर (12वीं) की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1919 में बी.ए. उत्तीर्ण करके शिक्षा–विभाग के इंस्पेक्टर (जिला शिक्षा अधिकारी) के पद पर नियुक्त हो गए।

वैवाहिक–जीवन एवं देहावसान– मुंशी प्रेमचन्द जी का पहला विवाह 15 वर्ष की उम्र में हुआ जो सफल नहीं रहा। वे आर्य समाज से प्रभावित होने के कारण हमेशा विधवा–विवाह का समर्थन करते थे। अतः आपने अपने विचारों के अनुरूप सन् 1906 में बाल–विधवा शिवरानी से दूसरा विवाह कर लिया। आपके दो पुत्र–श्रीपतराय और अमृतराय थे तथा एक पुत्री कमला देवी थी।

मुंशी प्रेमचन्द जी ने 33 वर्षों तक अनवरत रूप से अपने रचनात्मक जीवन में हिन्दी–साहित्य की सेवा की। उन्होंने 8 अक्टूबर सन् 1936 को शरीर त्याग दिया।

कृतित्व– मुंशी प्रेमचन्द ने कथा–साहित्य का लेखन नवाबराय के नाम से उर्दू भाषा में प्रारंभ किया था। उनकी पहली पुस्तक 'सोजे वतन' देशभक्ति की पाँच कहानियों का संग्रह है। इसकी 700 प्रतियाँ अंग्रेज शासकों द्वारा जब्त करके जला दी गई थीं। आपने 15 उपन्यास 300 से अधिक कहानियाँ, 5 नाटक, 10 अनूदित पुस्तकें और 7 बाल–पुस्तकों की रचनाएँ कीं। आपकी कहानियाँ मानसरोवर के आठ भागों में संकलित हैं। इनमें पंच परमेश्वर,

बूढ़ी काकी, बड़े घर की बेटी, सुजान–भगत, पूस की रात, ईदगाह, मुक्त का यश, गुल्ली–डंडा, शतरंज के खिलाड़ी और कफन मुख्य हैं।

इसी प्रकार सेवा–सदन, प्रेमाश्रय, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला, गबन, कर्मभूमि और गोदान मुख्य उपन्यास हैं। उपन्यास के क्षेत्र में आपके योगदान से प्रभावित होकर बंगाल के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरतचन्द चट्टोपाध्याय ने आपको 'उपन्यास–सम्राट' कहकर सम्बोधित किया था। इसके अतिरिक्त आपने 'जागरण', 'हंस' आदि पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन–कार्य भी किया।

साहित्यिक–वैशिष्ट्य– मुंशी प्रेमचन्द जी का यह साहित्यिक–वैशिष्ट्य है कि आपने जिस गाँव और शहर के परिवेश को देखा और स्वयं उसे जिया उसी की अभिव्यक्ति आपने अपनी रचनाओं में की है। यही कारण है कि आपका सम्पूर्ण लेखन आदर्शों से भरा है और यथार्थ का जीता–जागता चित्रण है। आपकी रचनाओं के मूल विषय किसानों और मजदूरों की दयनीय स्थिति, वंचितों का शोषण, समाज में स्त्री की दुर्दशा और स्वाधीनता–आन्दोलन आदि हैं।

भाषा–शैली– मुंशी प्रेमचन्द जी ने सर्वप्रथम उर्दूभाषा में लिखना आरंभ किया था, यही कारण है कि आपकी रचनाओं में उर्दू के मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग प्रचुर–मात्रा में मिलता है। आपकी भाषा सदैव पात्रानुकूल रही है। वे पात्रों के स्वरूप के अनुसार भाषा को परिवर्तित कर लेते हैं। इससे भाषा में स्वाभाविकता स्वतः आ गई है। सादगी और आलंकारिता का समन्वय आपकी भाषा की प्रमुख विशेषता है। आपकी रचनाओं में वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक, भावात्मक तथा विवेचनात्मक– ये चार प्रकार की शैलियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। चित्रात्मक शैली तो आपकी रचनाओं की प्राण–तत्व है।

इस प्रकार मुंशी प्रेमचन्द जी ने विषय–वैविध्य, सहज, सुबोध एवं प्रभावी भाषा–शैली तथा राष्ट्रीय भावों की सहज अभिव्यक्ति के द्वारा एक ओर हिन्दी–माता के साहित्य–भण्डार में श्रीवृद्धि की तो दूसरी ओर हिन्दी साहित्य के नवीन युग की आशाओं–आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का सहज–सरल मार्ग प्रशस्त किया।

सम्मान– मुंशी प्रेमचन्द की जन्म शताब्दी 31 जुलाई 1980 को भारत–शासन के भारतीय डाक–तार विभाग द्वारा 30 पैसे मूल्य का डाक टिकट जारी किया गया। गोरखपुर के जिस स्कूल में मुंशी प्रेमचन्द जी शिक्षक थे, वहाँ 'प्रेमचन्द साहित्य संस्थान' की स्थापना की गई है तथा उनकी एक प्रतिमा भी स्थापित की गई है। मुंशी प्रेमचन्द जी की 125वीं जयन्ती पर शासन की ओर से उनकी जन्म–भूमि 'लमही गाँव' में प्रेमचन्द–स्मारक तथा 'शोध–अध्ययन–केन्द्र–संस्थान' की स्थापना की गई है।

सारांशतः हम कह सकते हैं कि मुंशी प्रेमचन्द जी ने जिन मानवीय मूल्यों के लिए अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में पात्रों को संयोजित किया, वे सभी पात्र यथार्थ–जीवन के पात्र हैं, और जो सहृदय पाठक को अभिभूत करने में पूर्ण समर्थ रहे हैं। मुंशी प्रेमचन्द जी अपनी रचनाओं के माध्यम से मानव–मात्र के अन्दर आदर्श की स्थापना करना चाहते थे। आपके रचना–वैशिष्ट्य के आधार पर हम कह सकते हैं कि वे अपने उद्देश्य में पूर्ण रूप से सफल हुए हैं।

प्रश्न–2. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का सारांश अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– यह लखनऊ विलासिता के रंग में डूबी पृष्ठभूमि पर लिखी गयी कहानी है। बाजिद अली शाह का राज था जो स्वयं, राजकाज में कम और विलासिता के रंग में डूबा रहता था। जहाँ देखो वहाँ नाच–गाने की मजलिसें सचती रहती थीं।

मिर्जा सज्जाद अली और मीर रौशन अली अपना अधिकांश समय शतरंज खेलकर बिताते थे। दोनों के पास मौरूसी जागीरें होने से जीविका की कोई चिन्ता उन्हें नहीं थी। प्रातः काल दोनों मित्र नाश्ता करके, बिसात बिछाकर बैठ जाते, मुहरें सजाते और लड़ाई के दाँव–पेंच होने लगते। फिर पता न चलता कि कब दोपहर हुयी, कब तीसरा पहर, कब शाम? उनके इस शौक से दोनों के परिवार वाले नाराज रहते थे पर इन्हें किसी बात की चिन्ता नहीं थी। राज्य में हाहाकार मचा हुआ था। प्रजा दिन दहाड़े लूटी जा रही थी। अंग्रेजी कम्पनी का कर्ज दिन–दिन बढ़ता जा रहा था। रेजीडेण्ट बार–बार चेतावनी देता था पर यहाँ किसी के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती थी।

एक दिन एक घुड़सवार मीर साहब के घर आया। उसने मीर साहब के विषय में पूछा। चूँकि पहले से नौकरों को हिदायत थी और उसी के मुताबिक नौकर ने कह दिया कि मीर साहब घर पर नहीं हैं। दोबारा नवाब साहब का बुलावा न आ जाय, इस डर से दोनों दोस्त अब घर के बजाय शहर से दूर बीराने में एक मस्जिद में शतरंज जमाकर बैठते।

इधर देश की राजनीतिक दशा खराब हो रही थी। अंग्रेज फौजें लखनऊ की ओर बढ़ रही थीं। सारे शहर में हलचल मची हुयी थी। लोग बाल–बच्चों को लेकर देहातों की ओर भाग रहे थे पर इन दोनों खिलाड़ियों को इसकी कोई चिन्ता नहीं थी।

एक दिन दोनों मित्र खण्डहर में बैठे शतरंज खेल रहे थे। इतने में कम्पनी के गोरे सैनिकों की फौज आती दिखायी दी जो लखनऊ पर अधिकार करने के लिये आयी थी। फौज लखनऊ शहर की ओर निकल गयी। मीर साहब को चिन्ता हुयी कि शहर घिर गया तो घर कैसे पहुंचेंगे? पर दोनों फिर खेलने में मस्त हो गये। चार बजे के करीब गोरों की फौज वापिस लौटी। नवाब वाजिद अली पकड़ लिये गये। अवध के विशाल देश का नबाव बन्दी बना लिया गया और लखनऊ अभी भी ऐश की नींद में मस्त था। बादशाह को लेकर सेना निकल गयी।

धीरे–धीरे शाम हो गयी। खेल ही खेल में दोनों में झगड़ा हो गया। बात– बात दादों के बखान करने तक जा पहुंची। दोनों दोस्तों ने कमर से तलवारें निकाल लीं। तलवारें चमकने लगीं। दोनों जख्म खाकर गिरे और दोनों ने तड़प–तड़प कर जान दे दी। अपने बादशाह के लिये जिनकी आँखों से एक बूँद आँसू न निकला, लेकिन शतरंज के बजीर की रक्षा के लिये दोनों ने अपने प्राण दे दिये।

प्रश्न–3. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी अपने युग की किस मानसिकता को उजागर करती है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'शतरंज के खिलाड़ी' नामक कहानी के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण कीजिये।

उत्तर– इस कहानी में मुख्यतः दो पात्र हैं– मिरजा और मीर तथा गौण रूप से मिरजा तथा मीर की बेगमें भी हैं। वास्तव में इन दो पात्रों को एक विशेष उद्देश्य की सिद्धि में लिए गढ़ा गया है– यानि एक पतनशील समाज में शतरंज के दो खिलाड़ियों को इस तरह प्रयुक्त

किया गया है कि शतरंज के परिवेश की उनकी मानसिकता और गतिविधियों की तो तस्वीर उभरे ही, साथ ही उनके माध्यम से पतनशील समाज के व्यक्तियों की भी तस्वीर उभरे। वे दोनों पात्र परिवार या समाज की किसी समस्या से नहीं टकराते और टकराहट से उत्पन्न होने वाली मानसिक स्थिति से नहीं गुजरते। वे केवल शतरंज खेलते हैं, इसलिए इनके चरित्र के कुछ निजी और विशिष्ट पहलू नहीं उभरते। ये दोनों उच्च वर्ग और ऊँची हैसियत के हैं और दोनों शतरंज खेलते हुए शतरंजी बोली बोलते हैं। दोनों शह और मात के बारे में सोचते हैं जब मीर की बाजी कमजोर पड़ती है तब वे समाज की ओर देखते हैं और मिरजा उन्हें बाजी की ओर घसीटते हैं और जब मिरजा की बाजी कमजोर पड़ती है तब उन्हें समाज की चिन्ता हो उठती है और मीर उन्हें बाजी की ओर घसीटते हैं। जीत की मानसिकता में कभी एक गुनगुनाता है कभी दूसरा। कभी एक झल्लाता है तो कभी दूसरा और दोनों इसी झल्लाहट की चरम सीमा पर पहुँच कर अपनी जान दे देते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि ये दोनों ऐसे वर्गीय पात्र हैं जो एक विशेष उद्देश्य की सिद्धि के लिए रखे गये हैं। उनके चारित्रिक वैशिष्ट्य को उभारना लेखक का उद्देश्य नहीं है। इनकी अपेक्षा इनकी पत्नियों की चरित्र की निजी विशेषताएँ अधिक उभरी हैं। मिरजा की बीवी शतरंज का विरोध करती है क्योंकि वह इस मनहूस खेल के मारे मिरजा का साहचर्य नहीं प्राप्त कर पाती। दूसरी ओर मीर की बेगम व्यक्तिगत कारणों से मीर को शतरंज खेलने के लिए उत्साहित करती है किन्तु अपने घर में नहीं, बाहर। वह मिरजा की बेगम के विपरीत मीर के साहचर्य से बचना चाहती है। लेखक ने मिरजा और मीर के बीच चारित्रिक वैशिष्ट्य की रेखा भले न खींची हो, किन्तु उन दोनों को शतरंज के खिलाड़ियों की भूमिका में पूरी तरह उतारा है। इस प्रकार लेखक ने पात्रों की विलासी मानसिकता और असामाजिक क्रियाकलापों को बड़े कौशल से उभार कर उन्हें शतरंज के दो खिलाड़ियों का चरित्र प्रदान किया है। दोनों ही पात्र बहुत यथार्थ और जीवंत लगते हैं, जो तत्कालीन युग की विलासी, सुख–सुविधा–भोगी, स्वार्थपरता और समाज के उत्तरदायित्वों से विमुख रहकर ज़ीवन जीने की मानसिकता को उजागर करते हैं।

(3)
जीप पर सवार इल्लियाँ
(शरद जोशी)

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. लेखक ने 'इला' और 'इल्ली' को किस प्रकार परिभाषित किया है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

लेखक ने इला को अन्न की अधिष्ठात्री देवी तथा इल्ली को अन्न की नष्टार्थी देवी क्यों बताया?

उत्तर– 'इला' का अर्थ पृथ्वी होता है। सारा अन्न पृथ्वी से ही उत्पन्न होता है। 'इला' का एक दूसरा अर्थ 'आहार' भी होता है। इसे एक देवी के रूप में माना जाता है जो सभी प्राणियों को अन्न देती है। लेखक ने इसी आशय से इला को अन्न उत्पन्न करने वाली देवी या माता कहा है। इल्ली एक ऐसा कीड़ा होता है, जिसे कृषि की जानकारी रखने वाले लोग हरे पौधों पर लगने वाला रोग कहते हैं। यह रातोंरात सारे खेतों को चट कर जाता है। इल्ली लगने से

चना आदि अनाज के खेतों को काफी नुकसान पहुँचता है इससे अन्न का उत्पादन घट जाता है। इसी कारण लेखक ने इल्ली को अन्न की नष्टार्थी देवी या विनाश करने वाली कहा है।

प्रश्न–2. 'जीप पर सवार इल्लियाँ' व्यंग्य–पाठ में अफसरों की किस मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है?

उत्तर– 'जीप पर सवार इल्लियाँ' पाठ में अफसरों की सरकारी काम के बहाने सैर–सपाटा करने की, स्वार्थ साधने की और गरीब जनता का शोषण करने की मनोवृत्ति पर व्यंग्य किया गया है। सरकारी अफसर दूसरे विभागों की आलोचना करते हैं, परन्तु स्वयं कोई काम जिम्मेदारी से करने में रूचि नहीं लेते हैं।

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'जीप पर सवार इल्लियाँ' व्यंग्य–निबंध का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

अथवा

शरद जोशी के व्यंग्य–निबंध– 'जीप पर सवार इल्लियाँ' का सार संक्षेप में लिखिए।

उत्तर– **निबंध का परिचय–** 'जीप पर सवार इल्लियाँ' निबंधकार शरद जोशी जी का एक महत्वपूर्ण व्यंग्य निबंध है। इसमें निबंधकार ने चने की खेती में नुकसान पहुँचाने वाले 'इल्ली' नामक कीड़े का वर्णन करते हुए सरकारी कर्मचारियों की लालफीताशाही, दायित्व–विहीनता तथा गरीब जनता का शोषण करने की मनोवृत्ति को लक्ष्य करके 'जीप पर सवार इल्लियाँ' कहकर व्यंग्य किया है। प्रस्तुत व्यंग्य निबंध का सारांश निम्नानुसार दृष्टव्य है–

प्रारंभ– निबंधकार ने 'चना' नामक अनाज के बारे में सामान्य जानकारी के साथ व्यंग्यात्मक ढंग से प्रस्तुत निबंध को प्रारंभ किया है। पानी बरसने एवं सर्दी पड़ने से चने के खेतों में इल्लियाँ लग गईं, जिससे किसानों की चने की फसलों को काफी नुकसान हुआ है। अखबारों में इसे प्रमुख समाचार के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। एक अखबार में चने के पौधों पर बैठी हुई इल्ली की तस्वीर छपती है, जो बड़ी सुन्दर लग रही है। निबंधकार व्यंग्य करते हैं कि देखिए चना हमने भी कम नहीं खाया है, लेकिन कितना पक्षपात है कि अखबार वाले ने तस्वीर इल्ली की छापी है।

वैचारिक चिंतन– निबंधकार लिखते हैं कि उन्हें एक विद्वान् मित्र ने बताया था कि 'इला' अन्न की अधिष्ठात्री देवी है और 'इला' शब्द 'पृथ्वी' शब्द का पर्यायवाची है। वे इला और इल्ली में सम्बन्ध के बारे में सोचते हैं और लिखते हैं कि 'इला' अन्न की अधिष्ठात्री देवी है तो इल्ली अन्न की नष्टार्थी देवी हुई। शायद ये इल्लियाँ इसी इला की हैं। उनकी पुत्र 'प्राकृतिक/प्रकृति–विज्ञान–चारे' को देखकर उन्हें बताती है कि 'इल्ली' ही तितली बनती हैं। वे 'तितली' के बारे में नाना प्रकार के विचार करने लगते हैं। एकाएक उनके मन में विचार आया कि चने के खेतों को इल्लियाँ उजाड़ रही हैं। अगले वर्ष चना और चने से बनने वाली चीजें महंगी हो जायेंगी।

घटना वर्णन– अखबारों में इल्लियों के द्वारा फसलों को हो रहे नुकसान का जोर–शोर से प्रचार हो रहा था, जिससे नेताओं, अफसरों और सरकारी कर्मचारियों की नींदें हराम हो गईं थीं। सभी सक्रिय हो गए थे। हवाई जहाजों द्वारा दवाओं का छिड़काव होने लगा था। विरोधी पार्टी वाले नेता भी सरकार के प्रयास को देखकर चिंतित थे कि अब ये सरकार जनता पर अपना प्रभाव जमा लेगी और हमारा प्रभाव कम हो जाएगा।

भ्रमण– स्वयं निबंधकार भी आलस के कारण कहीं फसल देखने नहीं गए, सारी खबरें अखबारों में पढ़ते रहे। एक दिन एक कृषि अधिकारी के साथ निबंधकार भी 'इल्ली–उन्मूलन' की प्रगति देखने गए। बड़े अफसर एवं छोटे अफसर के साथ जीप पर सवार होकर जा रहे थे। रास्ते में परस्पर अन्य अफसरों की बुराइयाँ करते रहे।

घटना अवलोकन– बड़े अफसर और छोटे अफसर ने खेतों पर पहुँचकर मुआयना किया कि किस–किस खेत का नुकसान हुआ है? दवा–छिड़काव की चर्चा हुई। इसी चर्चा में बड़े अफसर ने छोटे अफसर से 'हरे चनों' की फरमाइश की। छोटे अफसर ने किसान को इल्ली लाने की बात को लेकर हड़काया और 'हरे–हरे चने' लाकर जीप में रखने का आदेश दे दिया और स्वयं टहलते हुए 'ग्राम–जीवन' के महत्व पर अनेकानेक बातें कहने लगे। थोड़ी देर बाद सभी लोग जीप पर सवार होकर वापस चल दिये और रास्ते में जीप में रखे हरे चने खाने लगे।

व्यंग्यात्मक चिंतन का सार– निबंधकार को एकाएक लगा कि हम तीनों ही तीन इल्लियाँ हैं, जो जीप पर सवार होकर किसान के चने के खेत को नुकसान पहुँचाकर, सरकारी–सहायता से किसानों को वंचित करके अपने कर्तव्य–कर्म को नहीं कर रहे हैं। वे कहते हैं कि ये तीन बड़ी–बड़ी इल्लियाँ केवल तीन ही नहीं, ऐसी हजारों–लाखों इल्लियाँ हमारे देश में हैं, जो जनता का शोषण करके अपना पेट भर रही हैं और जनता का सेवक होने का ढोंग कर रही हैं। इसीलिए हमारे देश की भोली–भाली जनता गरीब और दुःखी है।

प्रश्न–2. सरकार द्वारा बनाई गई योजनाओं को किस तरह आम जनता तक पहुँचाया जा सकता है?

उत्तर– हमारा देश ग्राम–प्रधान देश है। हमारे देश की अधिकांश जनता गाँवों में रहती है। हमारे देश के गाँव आज़ आजादी के 75 वर्ष बाद भी अविकसित हैं, पिछड़े हैं, जीवन के आवश्यक संसाधनों से या बिल्कुल विहीन हैं या फिर आधे–अधूरे संसाधन वाले हैं। एक ओर हमारे गाँव गरीबी, अशिक्षा, पारस्परिक द्वेष– कलह, मन–मुटाव, वैचारिक मतभेदों, जातीय–विद्वेष आदि के कारण वैमनस्यता से ग्रस्त हैं, तो दूसरी ओर सरकारी–कुप्रबंधन एवं शोषण से त्रस्त हैं।

शहरों में रहने वाली आम जनता भी वर्तमान संदर्भों में खुशहाल नहीं है। यहाँ की अधिकांश जनता भी उक्त समस्याओं से ग्रस्त है। दैनिक जीवन–यापन के संसाधन भी पूर्ण रूप से सुलभ नहीं हैं। इसके साथ–साथ परस्पर भाईचारे की भावनाओं का ह्रास हो रहा है।

उक्त स्थितियों को सुधारने के लिए सरकार द्वारा केन्द्र एवं राज्य–स्तरों से अनेकानेक विविध क्षेत्रों के लिए योजनाएँ बनाई गई हैं और क्रियान्वित की जा रही हैं, लेकिन इनका पूर्ण लाभ आम जनता को नहीं मिल रहा है। आम जनता तक इन योजनाओं को पहुँचाने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाने चाहिए–

(1) योजनाओं को बनाने एवं उनके क्रियान्वयन के प्रत्येक स्तर पर आम–जनता के समाजसेवी, ईमानदार एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों को भागीदार बनाया जाना चाहिए।

(2) योजनाएँ आम जनता की आवश्यकताओं, सुख–सुविधाओं और उसके विकास को ध्यान में रखकर बनाई जानी चाहिए।

(3) योजनाओं का स्वरूप यथार्थवादी होना चाहिए उसमें दिखावा, आडम्बर, विलासिता एवं कोरा आदर्श बिल्कुल नहीं होना चाहिए।

(4) योजनाओं की सफलता–असफलता के मूल्यांकन के अधिकारी आम जनता से दिये जाने चाहिए।

(5) योजनाओं की सम्पूर्ण जानकारी सम्पूर्ण आम जनता के लोगों को दी जानी चाहिए, जिससे वे उनका लाभ ले सकें।

(6) योजनाओं के लाभ प्राप्त करने के नियम एवं तरीके सरल और सुगम होने चाहिए जिससे आम लोगों को योजनाओं का लाभ लेने में किसी प्रकार की कठिनाई न हो।

(7) योजनाओं का लाभ विशेष रूप से गरीबों, पिछड़े मजदूरों, छोटे किसानों, विकलांगों, विधवाओं, अनाथ बच्चों, बेसहारा (वृद्ध–स्त्री–पुरुषों) को शत–प्रतिशत मिलना चाहिए।

(8) योजनाओं का लाभ किसी जाति–विशेष के लिए नहीं होना चाहिए क्योंकि हमारा भारतवर्ष अनेक होकर भी एक है।

(9) योजनाएँ दलगत राजनीति से प्रेरित होकर न तो बनाई जानी चाहिए न ही क्रियान्वित की जानी चाहिए।

(10) आम–जनता के लिए बनाई जाने वाली योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में विरोधी दलों की भी सहभागिता ली जानी चाहिए, जिससे योजनाओं के निर्माण एवं क्रियान्वयन में किसी के द्वारा किसी प्रकार का व्यवधान न पैदा किया जावे।

उक्त बातों को ध्यान में रखकर यदि सरकार द्वारा योजनाओं का क्रियान्वयन किया जायेगा तो संभवतः योजनाओं का लाभ आम–जनता को अवश्य मिल सकेगा, ऐसी आशा है।

इकाई-2

(1)
भारतीय-भाषाओं में राम
(प्रो. उमेश कुमार सिंह)

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. टिप्पणी लिखिए– (1) लोक के राम, (2) वचन पालक राम, (3) वंचितों के हितैषी राम, (4) प्रजावत्सल राम।

उत्तर– पाठ–परिचय– प्रो. उमेश कुमार सिंह जी अपने लेख– 'वैचारिक–भारतीय–भाषाओं में राम' से भगवान श्रीराम के चरित्र के विविध रूपों–पक्षों का विशद् विवेचन किया है। आपने लगभग सभी 'श्रीराम' के वृत्त पर आधारित 'राम–काव्यों–ग्रंथों' का विशद् विवेचन किया है। प्रश्नानुसार, यहाँ भगवान् श्रीराम के पावन–चरित्र के प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण रूपों का विवेचन प्रस्तुत है–

(1) **लोक के राम–** 'राम' को 'श्रीराम', श्रीरामचन्द्र, रघुवचन, राघव आदि हजारों नामों से जाना जाता है। बाल्मीकि–रामायण और तुलसीदासकृत रामचरित मानस के अनुसार श्रीराम के पिता अयोध्या के राजा दशरथ और माताश्री कौशल्या थीं। श्रीराम अपने पिता के चारों पुत्रों में सबसे बड़े थे। श्रीराम का विवाह जनकपुरी के राजा जनक की पुत्री सीता जी से हुआ था।

'श्रीराम' ने लोक–मर्यादाओं के पालन और लोक–कल्याण को अपने जीवन में सर्वोपरि माना और इसका पूर्ण–रूपेण पालन भी किया। आपने इसके लिए राज्य, मित्र, माता, पिता, कुटुम्ब यहाँ तक अपनी पत्नी सीता का भी परित्याग किया।

आप पिता के द्वारा माता कैकेयी को दिये गए वचनों के पालन में 14 वर्षों तक वनवास में रहे। श्रीराम की यह विशेषता रही कि उन्होंने वनवास अवधि में सम्पर्क में आने वाले छोटे से छोटे व्यक्ति का भी सहयोग लिया और उनका मान बढ़ाया, जैसे– केवट, भील राजा गुह, निषादराज शबरी, सुग्रीव, हनुमान, विभीषण और वनवासी ऋषि–मुनि आदि।

श्रीराम समुद्र पर पुल बनाकर लंका पहुँचकर आततायी राक्षस रावण का वध करके सीता जी को वापस लाए और विभीषण को लंका का राजा बनाया। वापस अयोध्या आकर श्रीराम ने अयोध्या राज्य में आदर्श सुराज्य की स्थापना की, जिसे आज भी 'रामराज्य' कहा जाता है। उक्त श्रीराम की चारित्रिक–विशेषताओं के कारण ही उन्हें लोक–पालक और लोक–रंजक श्रीराम कहा जाता है।

(2) **वचन पालक राम–** गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने महाकाव्य 'रामचरित मानस' में 'श्रीराम' के 'रघुवंश–कुल' की परम्परा का वर्णन करते हुए लिखा है कि–

'रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाएँ पर वचन न जाई।।'

श्रीराम भी अपने कुल की परम्परा का पूर्ण रूप से पालन करते हैं। उन्होंने वन में विचरते हुए ऋषियों–मुनियों के समक्ष उनके संरक्षण की भुजा उठाकर प्रतिज्ञा की और अपनी प्रतिज्ञा का पूर्ण रूप से पालन किया। सुग्रीव को दिए गए वचनों के अनुसार बालि का वध करके उन्हें किष्किन्धा का राजा बनाया और बालि को दिये वचन के पालन में उसके पुत्र 'अगंद' को किष्किन्धा–राज्य का 'युवराज' बनाया। विभीषण को रावण का वध करने से पूर्व ही लंका का राजा बनाने का वचन दिया और रावण का वध करने के बाद विभीषण को लंका का अधिपति बनाया। इतना ही नहीं अपने भाई भरत को दिए गए वचनों को पूरा करने के लिए उन्होंने चौदह वर्ष की वनवास अवधि व्यतीत करके अयोध्या वापस आकर स्वयं का राज्याभिषेक कराया। प्रजा को दिए गए आश्वासन के पालन में श्रीराम ने 'राम–राज्य' की व्यवस्था की।

इस प्रकार श्रीराम ने लोक कल्याण के लिए एक अनुकरणीय जीवन जीकर अन्त में काल के आमंत्रण पर स्वैच्छिक सचेतन देह का परित्याग किया। इससे सिद्ध होता है कि श्रीराम ने अपने वंश की मर्यादा के अनुरूप वचन–पालन धर्म का पूर्ण रूप से पालन किया है।

(3) **वंचितों के हितैषी राम–** 'वंचितों' से आशय उन व्यक्तियों से है, जिन्हें ऊँच–नीच, छूत–अछूत, धनी–गरीब, छोटे–बड़े का भेदभाव करके समाज के उच्च एवं कुलीन वर्ग द्वारा उपेक्षित किया गया था। भगवान श्रीराम ने समाज के उपेक्षितों को आश्रय देकर सम्मान दिया

और उन्हें समाज में यथायोग्य प्रतिष्ठा दी। श्रीराम ने अपने वनवास की चौदह वर्ष की अवधि में निषाद को गले लगाकर छुआ–छूत के भेदभाव को मिटाया। केवट को अपना मित्र बनाकर उसका समाज में मान बढ़ाया। शबरी के झूठे बेर खाकर प्रतीक्षारत भीलनी को मातृवत् सम्मान दिया। अपने पति के शाप से शापित पत्थर की ऋषि–पत्नी अहिल्या के पश्चाताप का शमन करके उसे शाप से मुक्ति प्रदान करके जीवन दान दिया। गीधराज जटायु का अपने हाथ से मृत्यु–संस्कार करके उसे मुक्ति प्रदान की। इसी प्रकार सुग्रीव से मित्रता करके भाई बालि से पीड़ित सुग्रीव को बालि का वध करके न्याय दिलाया और उन्हें किष्किन्धा का राजा बनाया। इस प्रकार श्रीराम ने अपने सम्पर्क आने वाले सभी वंचितों को अपना वरदहस्त प्रदान करके यथोचित सम्मान दिया।

(4) **प्रजावत्सल राम–** गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने महाकाव्य 'रामचरित मानस' में 'श्रीराम' को 'प्रजावत्सल आदर्श राजा' के रूप में अभिचित्रित किया है। वे श्रीराम के आदर्श–राज्य के स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि–

'दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराजनहिकाहूँहि व्यापा।
अल्पमृत्यु नहिं कबनिउ पीरा। सब सुन्दर विरुज सरीरा।।
नहि दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।'

अर्थात् श्रीराम के राज्य में राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक व्यवस्थाएँ इतनी अच्छी थीं कि किसी से भी दैहिक, दैविक और भौतिक पीड़ाएँ नहीं थीं। आर्थिक और स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी प्रकार व्यवस्थाएँ इतनी सुदृढ़ थीं कि किसी की भी छोटी अवस्था में मृत्यु नहीं होती थी। सभी शरीर से सुन्दर और नीरोगी थे। कोई दरिद्र, दुःखी, दीन और मूर्ख नहीं था। राम राज्य में शिक्षा और संस्कार की व्यवस्था ऐसी थी कि सभी घमण्ड रहित, धर्म परायण, पुण्यात्मा, चतुर, गुणवान, पंडित और ज्ञानी थे। सभी कृतज्ञ थे। किसी में भी कपट (धूर्तता) की प्रवृत्ति नहीं थी। वे प्रजा को पुत्र की तरह प्यार करते थे और उसका पूर्ण रूप से भली प्रकार पालन–पोषण करते थे। इसीलिए उन्हें 'प्रजावत्सल' और 'भक्त–वत्सल' भी कहा जाता है।

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'वाल्मीकि–रामायण' के आधार पर राम के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

अथवा

महर्षि वाल्मीकि ने अपने महाकाव्य में 'श्रीराम' की किन–किन चारित्रिक–विशेषताओं को प्रतिपादित किया है? संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर– महर्षि वाल्मीकि जी के द्वारा सर्वप्रथम महाकाव्य 'रामायण' की रचना करके श्रीराम–कथा को प्रकाशित किया गया। 'रामायण' महाकाव्य संस्कृत–साहित्य का 'आदिकाव्य' है इसीलिए महर्षि वाल्मीकि को 'आदिकवि' कहा जाता है। 'रामायण' महाकाव्य का शुभारम्भ 'अनुष्टुप्–छन्द' में हुआ है। अतः इसे 'आदि–छन्द' कहा जाता है। 'वाल्मीकि–रामायण' महाकाव्य के 'नारद–वाल्मीकि–संवाद' से श्रीराम का 'सम्पूर्ण चारित्रिक–वैशिष्ट्य' प्राप्त होता है। श्रीराम की चारित्रिक–विशेषताएँ बिन्दुवार निम्नानुसार दृष्टव्य हैं–

(1) **भारतीय ज्ञान के प्रति श्रद्धालु और मातृभूमि–प्रेमी–** 'श्रीराम' भारत वर्ष की महान् विभूति हैं, उनमें भारतीय–ज्ञान के प्रति अटूट श्रद्धा भाव है। इसीलिए ईश्वर के अवतारी

महामानव होकर भी वनवास अवधि में ऋषियों–मुनियों के आश्रम जा–जाकर विनम्र श्रद्धा भाव से ज्ञान प्राप्त करते हैं। इसके साथ ही उनमें अपनी मातृभूमि के प्रति असीम प्रेम है। यही कारण है कि वैभवशाली लंका को जीत करके भी उन्हें अपनी मातृभूमि अयोध्या वापस आना ही रूचिकर है। वे अपने अनुज लक्ष्मण से कहते हैं–

'जननी–जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।'

(2) प्रजावत्सल एवं आदर्श राजा– श्रीराम प्रजा से पुत्रवत् प्यार करते हैं। इसीलिए उनके राज्य की प्रजा सभी प्रकार से सुखी, नीरोगी, सदाचारी, धार्मिक और ज्ञानवान् है।

(3) प्रकृति–प्रेमी– श्रीराम प्रकृति–प्रेमी हैं, इसीलिए उन्होंने बड़ी प्रसन्नता के साथ चौदह वर्ष का वन में वास करना स्वीकार कर लिया। उनके राज्य में वन और वन्य प्राणी संरक्षित और सुरक्षित हैं। वृक्ष सदा फूलों–फलते हैं। हाथी–सिंह, पशु–पक्षी आदि सभी स्वाभाविक–बैर को भुलाकर आपस में प्रेम से एक साथ आहार–निहार करते हैं। शीतल, मंद, सुगंधित वायु बहती है। सभी ऋतुएँ समयानुसार आती–जाती हैं। नदी, तालाब और समुद्र अपनी मर्यादा में रहकर जल से परिपूर्ण रहते हैं। यह सब श्रीराम के चरित्र का प्रभाव है और प्रकृति के प्रति उनके प्रेम का प्रतिफल है।

(4) क्षात्र–धर्म पालक– श्रीराम ने रघुवंश में जन्म लेकर क्षत्रिय–धर्म का पूर्ण रूप से पालन किया है। उन्होंने ऋषियों–मुनियों के समक्ष पृथ्वी को आततायी राक्षसों से मुक्त करने की प्रतिज्ञा की और उसे पूरा किया। क्योंकि क्षत्रिय वही है, जो नष्ट होने से बचावे। इस प्रकार श्रीराम ने क्षत्रिय धर्म का पालन पूर्ण निष्ठा से करके क्षत्रिय रूप को सार्थक बनाया।

(5) ऋषि संस्कृति के संरक्षक– श्रीराम ऋषियों की भारतीय–संस्कृति के पोषक और रक्षक हैं। उन्होंने स्वयं ईश्वर के अवतारी होकर भी एक सामान्य राज–पुत्र के रूप में गुरुकुल व्यवस्था में ही शिक्षा प्राप्त की। गुरु वशिष्ट और गुरु विश्वामित्र से उन्होंने एक शिष्य के रूप में शिक्षा प्रदान की। तद्नुसार जीवन पर आदर्श आचरण से ज़ीवन–यापन किया।

(6) पराक्रमी राम– श्रीराम ने मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में आदर्श जीवन जीते हुए अद्भुत पराक्रम का प्रदर्शन करके पृथ्वी को आततायी राक्षसों से मुक्त कराया।

(7) वंचितों के हितैषी– श्रीराम ने समाज द्वारा उपेक्षितों–वंचितों को अपनाकर उनका कल्याण किया।

(8) वचनपालक– श्रीराम ने अपने वचन–पालन की अपने कुल की परम्परा का पूर्ण से निर्वाह किया।

इस प्रकार श्रीराम ने अपने सभी मानवीय कर्तव्यों का पालन करते हुए एक 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के आदर्शों को समाज में प्रतिष्ठित किया।

प्रश्न–2. आज के संदर्भ में 'रामराज्य' का औचित्य अपने शब्दों में समझाइए।

अथवा

आधुनिक भारतीय समाज में 'रामराज्य' के आदर्शों की प्रासंगिकता पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर– 'श्रीराम' की कथा अर्थात् श्रीराम का मर्यादित चरित्र आज भी हमारी स्मृति का अनिवार्य हिस्सा है। क्योंकि भारतीय संस्कृति और जन–मन की आन्तरिक संरचना के ताने–बाने की रचना में 'श्रीराम कथा' की सर्वाधिक भूमिका रही है और आज भी है। इसका प्रमुख

कारण यह है कि भारतीय समाज में मानवीय चेतना के उदात्त–मूल्यों का सृजन 'श्रीराम कथा' के आधार पर ही हुआ है और आज भी भारतीय समाज के दैनिक जीवन में ये मूल्य रचे बसे हैं।

वर्तमान समय में वैश्विक परिदृश्य बाजारवादी और उपभोक्तावादी है। मानवीय मूल्यों का दिन–प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और नैतिक स्तर की स्थितियों में दिन–प्रतिदिन ह्रास होता जा रहा है, जिससे मानव–जीवन के मूल्यों में गिरावट आती जा रही है। इसके बाद भी 'श्रीराम–चरित' शाश्वत भारतीय मानव–मूल्यों के रूप में विश्व का आज भी आदर्श है, क्योंकि हम देखते हैं कि 'श्रीराम' के जीवन के आदर्श भारतीय संस्कृति की व्यापकता के साथ–साथ इतिहास के परिवर्तन में भी विस्तार पाते गए हैं। श्रीराम ने अपने जीवन में लोक की संवेदनाओं को समृद्ध किया है और उनके साथ जीवन जिया है। इसी कारण लोक ने भी 'श्रीराम कथा' को युगानुरूप विकसित किया है। फलतः आज की स्थिति में 'श्रीराम कथा' पर आधारित ग्रंथ 'तीन सौ' से लेकर 'तीन हजार' तक की संख्या में विविध रूपों में मिलते हैं। सम्पूर्ण भारत वर्ष में 'श्रीराम–कथा' का प्रचार–प्रसार विद्वानों के प्रवचनों, धार्मिक–आयोजनों, शोध–कार्यों और मंदिरों–मठों में पूजा–अर्चना द्वारा आज भी हो रहा है।

उक्त 'श्रीराम कथा' के प्रचार–प्रसार के बाद भी आज भी भारत वर्ष के पारिवारिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक और नैतिक–स्तर की स्थितियों में मानवीय–मूल्यों एवं आदर्शों का पतन होता जा रहा है। अतः आज भी भारतवर्ष के लिए श्रीराम–कथा में वर्णित 'रामराज्य' का औचित्य बना हुआ है और श्रीराम के जीवन के आदर्श आज भी हमारे लिए प्रासांगिक हैं। इन आदर्शों को वर्तमान के समाज में आज पुनः स्थापित किए जाने की आवश्यकता है, क्योंकि उन आदर्शों को अपने–अपने जीवन में अपना करके ही आज का भारतीय मानव और भारतीय समाज 'सुख–शान्ति' का अनुभव कर सकता है और हमारा देश 'अखण्ड भारत' के रूप में समृद्ध होकर विश्व में सिरमौर बन सकता है।

(2)
उत्साह
(आचार्य रामचन्द्र शुक्ल)

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'उत्साह' क्या है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

उत्साह किसे कहते हैं?

उत्तर– उत्साह साहसपूर्ण आनन्द की उमंग है। जिस आनन्द से कर्म की उत्तेजना होती है और जो आनन्द कर्म करते समय तक बराबर बना रहे उसे ही उत्साह कहते हैं।

प्रश्न–2. 'उत्साह' निबंध का मूल–भाव स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'उत्साह' निबंध के केन्द्रीय विचार को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– 'उत्साह' निबंध आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का एक भावमूलक निबंध है। शुक्ल जी के मनोभावों पर आधारित निबंधों में 'उत्साह' निबंध एक श्रेष्ठ एवं महत्वपूर्ण निबंध है।

'उत्साह' भाव मनुष्य के मन के अन्दर उत्पन्न होने वाला एक मनोभाव है। मनुष्य के मन में उत्पन्न होने वाले विविध मनोभावों में 'उत्साह' एक महत्वपूर्ण मनोभाव है।

प्रस्तुत निबंध में आचार्य शुक्ल जी ने 'उत्साह' मनोभाव को परिभाषित करते हुए लिखा है कि साहसपूर्ण उमंग का नाम 'उत्साह' है। आनन्द वर्ग के मनोभावों में 'उत्साह' मनोभाव का महत्वपूर्ण स्थान है। वे 'उत्साह' मनोभाव के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि लोग जिस आनन्दपूर्ण तत्परता के साथ किसी कार्य में प्रवृत्त होते हैं वह 'उत्साह' ही है। इस प्रकार 'उत्साह' में 'कष्ट' या 'हानि' सहने की दृढ़ता के साथ कर्म में प्रवृत्त होने के आनन्द का योग रहता है। कर्म–सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं।

साहित्य मीमांसकों ने कष्ट या हानि के भेद के अनुसार 'उत्साह' मनोभाव के भेद किए हैं– युद्धवीर, दानवीर, दयावीर आदि। युद्ध–वीरता में साहस और प्रयत्न के साथ–साथ आनन्दपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कंठा का योग होना चाहिए। 'दान वीरता' में अर्थ–त्याग के साहस के साथ ही पूर्ण तत्परता और आनन्द की अनुभूति होने पर ही 'उत्साह' का स्वरूप प्रकट होता है। दुःखियों, असहायों, पीड़ितों के प्रति सच्ची अनुभूति से उच्चाशय वाले गंभीर पुरुषों द्वारा आनन्दपूर्वक की जाने वाली सहायता को दया–वीरता की संज्ञा दी जाती है।

इस प्रकार 'उत्साह' मनोभाव एक उच्च सद्गुण है। 'उत्साही' व्यक्ति का ध्यान सर्वदा आदि से अन्त तक पूरी कर्म–श्रृंखला पर से होता हुआ उसकी सफलता–रूपी समाप्ति तक फैला रहता है। इसी ध्यान में जो आनन्द की तरंगें उठती हैं, वे ही सम्पूर्ण प्रयत्न को आनन्दमय कर देती हैं। इस आनन्द का विधान हमें तीन रूपों– कर्म भावना से उत्पन्न, फल भावना से उत्पन्न और विषयान्तर से प्राप्त दृष्टिगोचर होता है। इसमें कर्म भावना से प्रसूत आनन्द को ही सच्चे वीरों का आनन्द समझना समझना चाहिए। कर्म–भावना प्रधान उत्साह ही सच्चा उत्साह कहा जाता है।

इस प्रकार प्रस्तुत निबंध में निबंधकार ने 'उत्साह' मनोभाव के स्वरूप, विशेषताओं एवं उसके विविध रूपों को मुख्य रूप से प्रतिपादित किया है। यही इस निबंध का मूलभाव है और केन्द्रीय विचार है।

प्रश्न–3. 'उत्साह' निबन्ध किस प्रकार का निबन्ध है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

आचार्य शुक्ल को 'उत्साह' निबंध को किस कारण भावमूलक निबन्ध कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी द्वारा विरचित 'उत्साह' नामक निबन्ध एक भावमूलक या भावात्मक निबन्ध है।

आचार्य शुक्ल जी ने मनुष्य के अनेक मनोभावों जैसे– क्रोध और श्रद्धा–प्रेम आदि पर निबन्धों की रचनाएँ की हैं। 'उत्साह' भी मनुष्य मन में उत्पन्न होने वाले आनन्द–वर्ग के मनोभावों में से एक उत्तम कोटि का मनोभाव है। इसीलिए यह 'उत्साह' नामक निबन्ध एक भावमूलक भावात्मक निबन्ध है।

प्रस्तुत निबन्ध में निबन्धकार ने 'उत्साह' मनोभाव के मनुष्य के मन में उत्पन्न होने की स्थितियों, क्रियाओं एवं क्रियाओं के स्वरूप आदि का वर्णन करते हुए 'उत्साह' मनोभाव के स्वरूप, विशेषताओं तथा प्रत्यक्ष की जाने वाली अनुभूतियों आदि का विवेचनात्मक ढंग से वर्णन किया है। इससे स्पष्ट है कि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित प्रस्तुत 'उत्साह' निबन्ध एक भावमूलक उत्तम कोटि का भावात्मक निबन्ध है।

प्रश्न–4. 'उत्साह' कितने प्रकार के होते हैं? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

साहित्य मीमांसकों ने 'कष्ट' या 'हानि' के आधार पर 'उत्साह' के कितने भेद किए है? संक्षेप में प्रकश डालिए।

उत्तर– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने अपने 'उत्साह' नामक निबन्ध में मनुष्य के मन में उत्पन्न होने वाले 'उत्साह' मनोभाव को परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'मनुष्य के मन में साहस के साथ कार्य करने की उमंग का नाम ही 'उत्साह' है।' वे लिखते हैं कि जिन कर्मो में किसी प्रकार का कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है, उन सबके प्रति उत्कंठापूर्ण उत्साह के अन्तर्गत लिया जाता है। इसीलिए इस मनोभाव को आनन्द–वर्ग के मानोभावों में गणना की जाती है।

आगे वे लिखते हैं कि 'कष्ट' या 'हानि' सहन करने के भेद के अनुसार 'उत्साह' मनोभाव के भी भेद हो जाते हैं। साहित्य–मीमांसकों ने इस दृष्टि से युद्ध–वीर, दान–वीर, दया–वीर, बुद्धि–वीर आदि भेद किए हैं। इनमें सबसे प्राचीन और प्रधान युद्ध–वीरता जनक उत्साह है। इसमें व्यक्ति को आघात, पीड़ा और मृत्यु तक की चिन्ता नहीं रहती है। युद्ध–वीरता में साहस और प्रयत्न दोनों चरमोत्कर्ष पर पहुँचते हैं। इसके साथ ही इसमें आनन्दपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कंठा का भी योग रहता है। इसी में 'उत्साह' के दर्शन होते हैं।

दानवीरता में अर्थ के त्याग का साहस रहता है। इसमें दानी को दान देते हुए अपने जीवन में कष्ट या कठिनता की मात्रा या संभावना जितनी अधिक होती है, दानवीरता उतनी ऊँची समझी जाती है। इसमें अर्थ त्याग के साहस के साथ पूर्ण तत्परता और आनन्द का योग होने पर 'उत्साह' के स्वरूप के दर्शन होते हैं। दयावीरता में दुःखियों, असहायों, पीड़ितों और उपेक्षितों के प्रति सच्ची अनुभूतियों के साथ उच्चाशय वाले गंभीर व्यक्तियों द्वारा आनन्दपूर्वक की जाने वाली सहायता दयावीरता कहलाती है।

'बुद्धि–वीर' उसे कहते हैं, जो किसी शास्त्रार्थी पंडित से भिड़ने के लिए सभा में आगे आकर शास्त्रार्थ करता है। उस समय उसके बुद्धि–साहस की प्रशंसा अवश्य होती है। वह जीते या हारे, उसे बुद्धि–वीर ही समझा जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'उत्साह' एक यौगिक भाव है, जिसें 'साहस' और 'आनन' का योग रहता है और कर्म भावना ही 'उत्साह' मनोभाव को उत्पन्न करती है, वस्तु अथवा व्यक्ति की भावना नहीं। अतः कर्म भावना से प्रसूत आनन्द को ही सच्चे वीरों का आनन्द समझना चाहिए।

निष्कर्षतः इस कह सकते हैं कि कर्म भावना प्रधान उत्साह ही सच्चा उत्साह है। यही कारण है कि कर्म भावना के आधार ही निबन्धकार ने 'उत्साह' के भेद स्वीकार किए हैं।

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'उत्साह' निबंध का सारांश लिखिये।

अथवा

'उत्साह' निबंध का सार लिखिये।

अथवा

'उत्साह' निबंध जीवन में क्या संदेश देता है?

उत्तर– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा लिखित 'उत्साह' उच्चकोटि का निबंध है। इसमें उत्साह की अभिव्यक्ति, उसके भेद तथा उसके सम्पूर्ण स्वरूप की सूक्ष्म विवेचना बड़े ही आकर्षक ढंग से प्रस्तुत की गई है। लेखक ने उत्साह निबंध में उत्साह तथा साहस के सूक्ष्म भेद को बड़ी ही कुशलता से विभाजित करने का प्रयास किया है।

जो स्थान दुःख के वर्ग में भय का है, वही स्थान आनन्दवर्ग में उत्साह का है। उत्साह में व्यक्ति को आने वाली कठिन स्थिति कष्ट या हानि को सहने की दृढ़ता के साथ कर्म में प्रवृत्ति होने के आनन्द का योग रहता है। साहसपूर्ण आनन्द की उमंग का नाम उत्साह है। साहित्य मीमांसकों ने उत्साह के युद्धवीर, दानवीर तथा दयावीर तीन भेद किये हैं। इनमें सबसे प्राचीन युद्धवीरता है, जिसमें साहस और प्रयत्न दोनों चरमोत्कर्ष पर पहुँचते हैं। बिना बेहोश हुये भारी फोड़े चीरा लगाने हेतु तैयार होना साहस कहा जाता है उत्साह नहीं। कठिन से कठिन प्रहार सहकर भी अपनी जगह से टस से मस न होना धीरता कही जायेगी, उत्साह नहीं। साहस और धीरता को हम उत्साह के अन्तर्गत तभी ला सकेंगे जब कि साहसी या धीर उस काम को आनन्द के साथ करेगा।

दूसरे भेद दानवीर में अर्थ–त्याग का साहस अर्थात् उसके कारण होने वाले कष्ट अथवा कठिनता को सहने की क्षमता अन्तर्निहित रहती है। अर्थ–त्याग के साहस के साथ जब तक पूर्ण तत्परता और आनन्द दिखाई नहीं पड़ेगा तब तक वह उत्साह न होगा।

मनुष्य शारीरिक कष्ट से पीछे हटने वाला प्राणी नहीं है, लेकिन मानसिक क्लेश, उपहास, निन्दा की संभावना से वह कई कल्याणकारिणी कार्यों को करने का साहस नहीं कर पाता है। कुछ लोग सामाजिक कुप्रथाओं का अनुसरण इसलिये करते हैं कि उनके त्याग से वे समाज में अपना सम्मान गँवा बैठेंगे। लेकिन किसी शुभ परिणाम पर दृष्टि रखकर निन्दा–स्तुति, मान–अपमान आदि की जरा भी चिंता न करके प्रचलित कुप्रथाओं का उल्लंघन करने वाले वीर या उत्साही कहे जाते हैं। समाज–सुधार के वर्तमान आन्दोलनों में जिस प्रकार सच्ची अनुभूति से प्रेरित उच्चाशय और गंभीर पुरुष पाये जाते हैं, वहीं तुच्छ मनोवृत्तियों से प्रेरित लोग भी मिलते हैं, जो सुधार के कार्य में कुछ सहायता पहुँचाने के स्थान पर बाधा पहुँचाने का काम करते हैं।

उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है। किसी भाव के अच्छे या बुरे होने का निश्चय अधिकांशतः उसकी प्रवृत्ति के शुभ या अशुभ परिणाम के विचार से होता है। उत्साह में साहस का पूरा योग रहता है। कर्ममात्र के संपादन में तो तत्परतापूर्ण आनन्द देखा जाता है वह भी उत्साह कहा गया है। प्रयत्न और कर्म संकल्प, उत्साह नामक आनन्द के नित्य लक्षण हैं। प्रत्येक कर्म में थोड़ा योग बुद्धि का भी रहता है। उत्साह की उमंग जिस प्रकार हाथ–पैर चलवाती है उसी प्रकार बुद्धि से भी काम करवाती है। जिस समय कोई विद्यार्थी किसी बड़े शास्त्रार्थी पंडित

से शास्त्रार्थ करने हेतु साहस के साथ आगे जाता है, उस समय उसके बुद्धि और साहस की प्रशंसा अवश्य होती है चाहे वह जीते या फिर हारे।

लेखक के विचार से उत्साही वीर का ध्यान आदि से अन्त तक पूरी कर्म–श्रृंखला पर होता हुआ उसकी समाप्ति तक बना रहता है। इसी ध्यान से जो आनंद की तरंगें उठती हैं वे ही सारे प्रयत्न को आनन्दमय कर देती हैं। किसी कर्म के संबंध में जहाँ आनन्दपूर्ण तत्परता दिखाई पड़ती है उसे उत्साह कहते हैं। कर्म के अनुष्ठान में जो आनन्द होता है उसका विधान तीन रूपों में दिखाई देता है–

(1) कर्म की भावना से उत्पन्न आनन्द– कर्म भावना प्रसूत आनन्द को ही सच्चे वीरों का आनन्द समझना चाहिये क्योंकि इसमें प्रायः साहस का योग अधिक रहता है। सच्चे वीर के कर्म और फल के बीच कोई अन्तर नहीं होता। वह अपने कर्मों की ओर इस प्रकार लपकता है जैसे लोग कर्मफल की ओर लपकते हैं। कर्मभावना प्रधान उत्साह बराबर एक रस रहता है। कर्मासक्त उत्साही केवल कर्मानुष्ठान के पूर्व की अवस्था में हो जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि कर्म भावना–प्रधान उत्साह ही सच्चा उत्साह है।

(2) फल भावना से उत्पन्न आनन्द– फल की भावना से उत्पन्न आनन्द भी मनुष्य को साधक कर्मों की ओर हर्ष और तत्परता के साथ प्रवृत्त करता है। परन्तु जहाँ फल का लोभ प्रधान रहता है वहाँ कर्म–विषयक आनन्द उसी फल की भावना की तीव्रता और मन्दता पर निर्भर करता है। अतः फल भावना–प्रधान उत्साह तो लाभ का ही एक प्रच्छन्न रूप है।

(3) विषयान्तर से उत्पन्न आनन्द– फल की विशेष आसक्ति से कर्म के लालच की वासना उत्पन्न होती है, मन में यही विचार आता है कि कर्म करके बड़ा फल प्राप्त हो जाये परन्तु कर्म में आनन्द अनुभव करने वाले ही का नाम कर्मण्य है। उच्च कर्मों के विधान में ही ऐसा दिव्य आनन्द भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फलस्वरूप लगते हैं।

इसी प्रकार से किसी उत्तम फल या सुख–प्राप्ति की आशा या निश्चय से उत्पन्न आनन्द, फलोन्मुख प्रयत्नों के अलावा और दूसरे व्यापारों के साथ संलग्न होकर उत्साह के रूप में दिखाई पड़ता है। हमारा चित्त किसी विषय में उत्साहित रहता है तो अन्य विषयों में भी उत्साह दिखता है। हम बहुत से काम प्रसन्नतापूर्वक करने के लिये तैयार हो जाते हैं। इसी बात का विचार करके सलाम–साधक लोग हाकिमों से मुलाकात करने के पहले चपरासियों से उनका मूड पूछ लिया करते हैं।

प्रश्न–2. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का संक्षिप्त जीवन–परिचय लिखिए।

अथवा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के जीवन–वृत्त एवं कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

अथवा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भाषा–शैलीगत विशेषताएँ संक्षेप में लिखिए।

उत्तर– आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जीवन–वृत्त– आचार्य शुक्ल का जन्म 11 अक्टूबर सन् 1884 में बस्ती जिले के 'अगोना' नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता जी का नाम पं. चन्द्रबली शुक्ल और माता जी का नाम निवासी था। जब शुक्ल जी 9 वर्ष के थे, तभी उनकी माँ का स्वर्गवास हो गया।

शिक्षा एवं रचनात्मक व्यक्तित्व– आपने सन् 1901 में मिर्जापुर के 'लंदन–मिशन–स्कूल' से एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपके पिता जी आपको नायब तहसीलदार बनाना चाहते थे, लेकिन आपकी साहित्यिक–अभिरूचि के कारण आपका रूझान रचनात्मक–विधा की ओर हो गया।

फलतः आपने वर्ष 1903 से 1908 तक 'आनन्द–कादम्बिनी' के सहायक–सम्पादक का कार्य किया। 1908 में काशी नागरी–प्रचारिणी–सभा ने उन्हें 'हिन्दी–शब्दसागर' के सहायक सम्पादक का कार्यभार सौंप दिया। सन् 1919 में वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हुए और वर्ष 1937 से जीवन के अंतिम काल सन् 1941 तक हिन्दी–विभाग के विभागाध्यक्ष रहे। 2 फरवरी सन् 1941 को हृदय गति रूक जाने से शुक्ल जी का देहान्त हो गया।

कृतित्व–

(क) आलोचनात्मक ग्रंथ– काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद, रसमीमांसा, कविता क्या है? काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था, साधारणीकरण और व्यक्ति वैचित्र्यवाद, चिंतामणि, हिन्दी साहित्य का इतिहास, भारतेन्दु–हरिश्चन्द्र, तुलसी का भक्ति–मार्ग, मानस की धर्म–भूमि आदि।

(ख) अनूदित कृतियाँ– 'शशांक', विश्वप्रपंच आदर्श–जीवन, मैगस्थनीज का भारतवर्षीय–वर्णन, कल्पना का आनन्द।

(ग) सम्पादित–ग्रंथ– हिन्दी शब्द–सागर, नागरी–प्रचारिणी–पत्रिका, भ्रमर–गीत–सार, 'सूर–तुलसी–जायसी–ग्रंथावली' आदि।

रचनात्मक वैशिष्ट्य–

(क) भाषा–सौष्ठव– शुक्ल जी के गद्य–साहित्य की भाषा खड़ी बोली है। आलोचनात्मक निबन्धों में भाषा का क्लिष्ट–रूप मिलता है, लेकिन स्पष्टता उसमें सदैव बनी रहती है। शुक्ल जी के निबन्धों में उनकी अभिरूचि, विचारधारा और अध्ययन की गंभीरता के दर्शन होते हैं। वे लोकादर्श के पक्के समर्थक थे।

आपके मनोवैज्ञानिक निबन्धों में भाषा का सरल एवं व्यावहारिक रूप दिखाई देता है। आपने प्रायः हिन्दी के प्रचलित शब्दों के साथ–साथ यथास्थान उर्दू एवं अंग्रेजी भाषाओं के भी प्रचलित शब्दों का उपयोग किया है। ग्रामीण बोलचाल के शब्दों, मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग भी किया गया है।

(ख) शैली–वैशिष्ट्य– शुक्ल जी की शैली के मुख्यतः तीन रूप– आलोचनात्मक, गवेषणात्मक तथा भावात्मक दृष्टिगोचर होते हैं। सामान्यतः आपकी शैली अत्यन्त प्रौढ़ और मौलिक है. उसने 'गागर में सागर' पूर्ण रूप से विद्यमान है।

आलोचनात्मक–शैली की भाषा गंभीर तत्सम शब्दावली वाली है। वाक्य छोटे, संयत और मार्मिक हैं। गवेषणात्मक–शैली की भाषा क्लिष्ट है और यह शैली अधिक गंभीर तथा दुरुह है। भावात्मक शैली का उपयोग मनोवैज्ञानिक निबन्धों में हुआ है। यह शैली गद्य–काव्य जैसा आनन्द देती है। इसमें छोटे एवं बड़े दोनों प्रकार के वाक्यों का प्रयोग मिलता है। बहुत से वाक्य 'सूक्ति रूप' में प्रयुक्त हुए हैं। जैसे– 'बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है'। इन निबन्धों

में निगमन–पद्धति का प्रयोग करते हुए अलंकारों, तुकदार शब्दों, हास्य–व्यंग्य वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है।

सम्मान– 'आलोचना' और 'निबंन्ध' के क्षेत्र में आपकी प्रतिष्ठा युग प्रवर्तक की रही है। आपको 'काव्य में रहस्यवाद' निबन्ध के लिए हिन्दुस्तानी अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया था तथा 'चिंतामणि' रचना के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के द्वारा 'मंगला प्रसाद' पारितोषिक प्रदान किया गया था।

(ञ)
भारत एक है
(रामधारी सिंह 'दिनकर')

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'एक ही संस्कृति के मंदिर दिखाई देंगे'– पंक्ति का अर्थ समझाइए।

अथवा

'एक ही संस्कृति के मंदिर दिखाई देंगे'– पंक्ति से निबन्धकार का क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– प्रस्तुत कथन/पंक्ति निबन्धकार श्री रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित निबन्ध 'भारत एक है' से अवतरित है।

प्रस्तुत कथन दिनकर जी ने अपने निबन्ध 'भारत एक है' में विविधता में एकता के स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए भारतवर्ष में विद्यमान 'एकता' के सम्बन्ध में प्रमाण देते हुए लिखा है कि हम उत्तर या दक्षिण चाहे जहाँ भी जाएँ। हमें जगह–जगह पर एक ही संस्कृति के मंदिर दिखाई देंगे और एक तरह के आदमियों से मुलाकात होगी।

कहने का आशय यह है कि हमारे भारतवर्ष की संस्कृति अर्थात् रहन–सहन, पूजा–पाठ, तीर्थ–व्रत आदि में एक समता दिखाई देती है। सभी के देवी–देवता, पूजा–अर्चना की सामग्री तथा पूजा–अर्चना की विधि आदि में समानता विद्यमान है। यहाँ तक कि मंदिरों के ढाँचे का स्वरूप, मूर्तियों के आकार–प्रकार आदि में एकरूपता, दृष्टिगोचर होती है। इतना ही नहीं, जीवन जीने के नियम–संयम, आचार–विचार में भी बहुत कुछ समानताएँ विद्यमान हैं। यही कारण है कि आज हमें सम्पूर्ण भारतवर्ष में एक ही संस्कृति के मंदिर दिखाई देते हैं।

प्रश्न–2. 'भाषा–भेद' की समस्या जरा कठिन है।'– ऐसा दिनकर जी ने क्यों कहा? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'भाषा–भेद' की समस्या जरा कठिन है।'– कथन के माध्यम से दिनकर जी ने किन भाषाई–समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'भारत एक है' निबन्ध में निबन्धकार रामधारी सिंह 'दिनकर' जी भारतीय विविधताओं का निरूपण करते हुए लिखते हैं कि यह सच है कि भारतवर्ष विविधता वाला देश है, क्योंकि इसकी विविधता का सबसे बड़ा लक्षण यह है कि हमारे देश में अनेक प्रकार की भाषाएँ बोली जाती हैं। इसके कारण कभी–कभी हम सभी आपस में अजनबी से हो जाते हैं। तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम आदि उत्तरी प्रदेशों की भाषाओं से एकदम भिन्न

उच्चारण एवं लिखावट वाली है, क्योंकि इनकी शब्द–रचनाओं में भिन्नता है, लेकिन भाषा द्वारा व्यक्त किए जाने वाले भावों, विचारों, विश्वासों आदि में समानता विद्यमान है। यद्यपि भाषा–भेद की समस्या राष्ट्रीय–एकता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है।

आगे दिनकर जी लिखते हैं कि हिन्दी–भाषा का अच्छा प्रचार–प्रसार होने से इस समस्या को हल किया जा सकता है। क्योंकि हिन्दी, उर्दू, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़, उड़िया, पंजाबी, कश्मीरी और संस्कृत आदि भाषाओं में लिखे गये और लिखे जाने वाले साहित्य में भाव–धाराएँ विचार–धाराएँ और उनके उद्देश्य एक हैं। केवल शब्दगत भेद हैं, अर्थगत नहीं।

दिनकर जी ने लिखा है कि हमारे रचनाकारों ने प्रायः एक ही तरह के विचारों, भावों और कथाओं को लेकर अपनी–अपनी बोली में रचनाएँ की हैं। इससे स्पष्ट है कि वैचारिक और भावात्मक एकता हमारी भाषाओं के साहित्य में विद्यमान हैं।

उन्होंने 'रामायण' और 'महाभारत' का उदाहरण देकर यह लिखा है कि इनकी विषय–वस्तु को लेकर भारत की विविध भाषाओं में रचनाएँ की गई हैं। उनमें भावों एवं विचारों में एकरूपता विद्यमान है। विचारों की एकता किसी भी जाति की सबसे बड़ी एकता होती है। अतएव भारतीय जनता की एकता के महत्वपूर्ण वास्तविक भारतीय–दर्शन और भारतीय साहित्य हैं।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भाषा–भेद की समस्या कठिन होने पर भी भारतवर्ष की विविधता की द्योतक होकर भी भारतीय–एकता में बाधक नहीं है।

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. विविधता के भीतर हमारी एकता कहाँ छिपी हुई है? इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

अथवा

विविधता में एकता से दिनकर जी का क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– विविधता में एकता से तात्पर्य यह है कि भारत में अनेकों भाषायें (17 से भी अधिक भाषायें) बोली जाती हैं लेकिन उसके भीतर बहने वाली हमारी भावधारा एक है। हम प्रायः एक ही तरह के विचारों और कथावस्तुओं को लेकर अपनी–अपनी बोली में साहित्य–रचना करते हैं। विविधता में एकता का एक उदाहरण भारतीय दर्शन और साहित्य है, जो अनेक भाषाओं में लिखे जाने पर भी अन्त में एक ही साबित होते है। हमारी एकता का अन्य प्रमाण यह है कि उत्तर या दक्षिण चाहे जहाँ भी चले जायें, हमें जगह–जगह पर एक ही संस्कृति के मन्दिर दिखाई देंगे, एक ही तरह के लोगों से मुलाकात होगी, जो चन्दन लगाते हैं, स्नान व पूजा करते हैं, तीर्थ–व्रत में विश्वास करते हैं। उत्तर भारत के लोगों का जो स्वभाव है तथा जीवन को देखने का जो उनका दृष्टिकोण है, वही स्वभाव और दृष्टि दक्षिण वासियों की भी है। सबसे विचित्र बात यह है कि भारत सरकार ने 17 से अधिक भाषाओं को तो स्वीकृति दे दी है। इन भाषाई विविधताओं की दीवार के आर–पार बैठे हुये भी सब एक ही हैं। एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के हम सभी भागीदार हैं। आज हमारा पार्लियामेन्ट और शासन–विधान एक है। हिन्दू और मुस्लिम धर्म के मूलभूत तत्वों में समानता है, इसके साथ ही सांस्कृतिक दृष्टि से भी हिन्दुओं और मुसलमानों में समानता का

भाव दृष्टि गोचर होता है। इस प्रकार भारतवर्ष में भाषा, धर्म साहित्य, दर्शन एवं संस्कृति की दृष्टि से विविधता होते हुए भी एकता विद्यमान है।

प्रश्न–2. नदियों और बड़े–बड़े पहाड़ों के गुण समझाइए।

अथवा

'भारत एक है', निबन्ध के आधार पर नदियों और पहाड़ों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

भारतीय–जीवन में नदियों एवं पहाड़ों के महत्व को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– 'भारत एक है' निबन्धकार श्री रामधारी सिंह दिनकर जी का एक महत्वपूर्ण निबन्ध है। इस निबन्ध में दिनकर जी ने भारतवर्ष की विविधता में विद्यमान एकता के स्वरूप पर प्रकाश डाला है।

श्री रामधारी सिंह दिनकर जी एक राष्ट्र कवि और लेखक थे। आपने 'भारत एक है' निबन्ध में भारतवर्ष की प्राकृतिक सम्पदाओं का वर्णन करते हुए लिखा है कि भारतवर्ष प्राकृतिक–सम्पदाओं से सम्पन्न देश है। निबन्धकार ने प्रस्तुत निबन्ध के प्रारम्भ में लिखा है कि प्राकृतिक–दृष्टि से हमें भारतवर्ष के तीन भाग बिल्कुल स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं–

पहला तो भारतवर्ष का उत्तरी भाग है, जो लगभग हिमालय पर्वत के दक्षिण से लेकर विंध्याचल पर्वत के उत्तर तक फैला हुआ है, दूसरा विंध्याचल से दक्षिण में कृष्णा नदी के उत्तर तक फैला हुआ है, जिसे हम दक्षिणी प्लेटो कहते हैं, तीसरा इस प्लेटो के दक्षिण कृष्णा नदी से लेकर कुमारी अन्तरीय तक का वह भाग है, जो प्रायद्वीप जैसा है। ये तीनों खण्ड भारतवर्ष के इतिहास के भी तीन क्रीड़ास्थल रहे हैं अर्थात् इन भागों में ही महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ घटित हुई हैं।

वे लिखते हैं कि पहाड़ों और समुद्रों से घिरे हुए इस विशाल देश में जो मौलिक एकता का भाव विद्यमान है, वह हमारे भूगोल की देन है। इस प्रकार हमारा भारतवर्ष भीतर से कुछ–कुछ बँटा हुआ–सा है, पर बाहर से बिल्कुल एक है। यह भारतवर्ष की एकता महत्वपूर्ण विशेषता है। इस विशेषता को बनाये रखने में हमारे देश की नदियों और पहाड़ों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। संक्षेप में, इन भारतीय नदियों एवं पहाड़ों के गुण या विशेषताएँ निम्नानुसार दृष्टव्य हैं–

(1) हमारे देश की नदियाँ देश के विभिन्न भागों को एक–दूसरे से जोड़ती हैं।
(2) नदियों के जल से फसलों की सिंचाई होती है।
(3) नदियाँ भूमि की उर्वरा–शक्ति को बढ़ाती हैं।
(4) हमारे देश की नदियों का जल पेय है और मधुर है, जो मनुष्यों को ही नहीं समस्त जीव–जन्तुओं को जीवन प्रदान करता है।
(5) नदियाँ लोगों को जीविका प्रदान करती है। मछली पालन के व्यवसाय का आधार नदियाँ ही हैं।
(6) नदियाँ प्राकृतिक वन–सम्पदा का संरक्षण एवं संवर्धन करती हैं।
(7) नदियों का सांस्कृतिक और धार्मिक दृष्टि से भी भारतीय जीवन में विशेष महत्व है।

(8) आज के वैज्ञानिक युग में नदियों का विशेष महत्व है क्योंकि ये नदियाँ आज ऊर्जा का स्रोत भी बन गई हैं।

(9) पहाड़ों का महत्व भी भारतीयों के जीवन में विशिष्ट स्थान रखता है।

(10) पहाड़ों से बहुमूल्य वनस्पतियाँ, खनिज–पदार्थ, लकड़ी आदि प्राप्त होती है।

(11) पहाड़ भी देश के एक भाग से दूसरे भाग को जोड़कर एकता में सहायक बनते हैं।

(12) पहाड़ों पर निवास करने वाले जीव–जन्तुओं का संरक्षण और संवर्धन होता है।

(13) पहाड़ और नदियाँ हमारी प्राकृतिक जलवायु को हमारे जीवन के अनुकूल बनाने में मदद करते हैं।

(14) पहाड़ और नदियाँ हमारे देश को प्राकृतिक रूप से सौन्दर्यशाली बनाने में सहायक हैं।

(15) पहाड़ और नदियाँ हमें बाहरी आक्रान्ताओं से सुरक्षा भी प्रदान करती हैं।

(16) वैदिक–काल से आज तक की भारतीय संस्कृति में पहाड़ों एवं नदियों को ईश्वरीय वरदान माना जाता है। इसलिए इनकी प्रार्थनाओं के मंत्र वेदों में आज भी विद्यमान हैं।

(17) भारतवर्ष के पहाड़ों एवं नदियों के भूगोल के साथ–साथ इनका एक इतिहास भी है।

(18) भारतवर्ष के पहाड़ और नदियों का साहित्यिक महत्व होने के साथ–साथ, धार्मिक रूपसे विशेष महत्व है। गंगा नदी का 'गंगा जल' अमृत माना जाता है। इसीलिए गंगा नदी को सबसे अधिक पवित्र नदी माना गया है।

इस प्रकार भारतीय जीवन में हिमालय और विंध्याचल पर्वतों का विशेष महत्व है। यही कारण है कि इनका वर्णन व चित्रण साहित्यकारों द्वारा प्राचीनकाल से आज तक किया जाता रहा है।

प्रश्न–3. 'भारत की एकता' का सार लिखिये।

अथवा

'भारत एक है' निबंध का सारांश लिखिये।

अथवा

'विविधता में एकता' के संदर्भ में भारत एक है पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिये।

उत्तर– 'भारत एक है' नामक निबंध श्री रामधारी सिंह दिनकर जी की पुस्तक 'हमारी सांस्कृतिक एकता' से लिया गया है, जिसमें लेखक ने भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता को रेखांकित किया है। प्रायः कहा जाता है कि भारतवर्ष की एकता उसकी विविधताओं में छिपी हुई है और यह बात किंचित–मात्र भी गलत नहीं है, क्योंकि अपने देश की एकता जितनी प्रकट है, उसकी विविधतायें भी उतनी ही प्रत्यक्ष हैं। भारतवर्ष में यहाँ का प्राकृतिक वातावरण और जलवायु भी भिन्नता पैदा करती है। धरती की प्रकृति व जलवायु का प्रभाव मनुष्य के शरीर तथा दिमाग पर पड़ता है। पहाड़ी इलाके के लोग अलग मनोवृत्ति के और पठार व तलहटी में रहने वाले अलग मनोवृत्ति के होते हैं। जलवायु एवं क्षेत्रीय सुविधा के अनुसार लोगों के पहनावे, ओढ़ावे तथा खान–पान में अन्तर होते हैं। विविधता की सबसे बड़ी विशेषता हमारे देश में अनेक भाषाओं का बोला जाना है जिसके कारण हम आपस में

अजनबी से हो जाते हैं। उत्तर भारत में तो गुजरात से लेकर बंगाल तक जनता के बीच खूब सम्पर्क हुआ लेकिन कोई उत्तरवासी दक्षिण में जाता है और दक्षिणवासी उत्तर में जाता है तो मुश्किल में पड़ जाता है। भाषा–भेद की यह समस्या हमारी राष्ट्रीय एकता की सबसे बड़ी बाधा है। विज्ञान के अनेक सुगम साधनों के द्वारा पहाड़ों और नदियों को लाँघना अब आसान हो गया है। प्राकृतिक बाधायें भी अब कम हो गई हैं लेकिन भाषा–भेद की समस्या समाप्त होने में थोड़ा समय लगेगा। सौभाग्य की बात है कि इस दिशा में अब काम शुरू हो चुका है। यह तो हुई विविधता की बात, अब हम देखेंगे इस विविधता के भीतर हमारी एकता कहाँ छिपी है? सबसे विचित्र बात यह है कि भारत सरकार ने भारत में 17 से भी अधिक भाषाओं को स्वीकृति दे दी है। यहाँ भिन्न–भिन्न भाषायें बोली जाती हैं परन्तु इन भाषाओं में बहने वाली हमारी भावधारा एक ही है हम प्रायः एक ही तरह के विचारों और कथावस्तु को लेकर अपनी–अपनी बोली में साहित्य–रचना करते हैं।

प्रायः रामायण और महाभारत को लेकर सभी में अद्भुत एकता देखने को मिलती है। विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है। अतएव भारतवासियों की असली एकता का आधार भारतीय दर्शन और साहित्य है। भाषा की दीवार यदि टूट जाये तो सब लोग बहुत अधिक नजदीक आ जायें। ये एक धर्म के अनुयायी और संस्कृति की एक ही विरासत के भागीदार हैं। देश के सभी कोनों में बसने वाले मुसलमानों के भीतर जहाँ एक धर्म को लेकर एक तरह की आपसी एकता है, वहाँ वे संस्कृति की दृष्टि से हिन्दुओं के भी अधिक करीब हैं। सदियों तक हिन्दू–मुसलमान साथ–साथ रहने के कारण उनके बीच संस्कृति और तहजीब में काफी समानता देखने को मिलती है। यह समानता जो कि हिन्दू समाज में मिलेगी, जो मुस्लिम समाज में मिलेगी, जो पारसी और क्रिस्तानी समाज में भी मिलेगी, लेकिन धर्म के केन्द्र से बाहर जो संस्कृति की विशाल परिधि है उसके भीतर बसने वाले सभी भारतीयों के बीच एक तरह की सांस्कृतिक एकता भी है जो उन्हें दूसरे देशों के लोगों से अलग करती है। यदि किसी भारतीय को दूसरे देश की लिबास तथा भाषा से युक्त कर दिया जाये तब भी वह पहचान लिया जायेगा कि वह भारतीय है।

भारतवासी इतिहास के किसी भी काल में अन्य देशों के लोगों के बीच खप नहीं सकते। भारत में जो एक समान भाव है वह हमारे भूगोल की देन है। यह भीतर से कुछ–कुछ बँटा हुआ पर बाहर से बिल्कुल एक है। भूगोल ने भारत की जो चौहद्दी बाँध दी है उसके साथ छोड़छाड़ करने का प्रयास कभी भी सफल नहीं हुआ। सीमा के बाहर की दुनिया से भारत को अलग रखकर उसे भीतरी एकता के सूत्र में बाँधने की प्रेरणा यहाँ भूगोल की सबसे बड़ी शिक्षा रही है। जो भारत की चौहद्दी से बाहर पड़ता है और जिसे भारत का भूगोल अपने भीतर पचा नहीं सकता। दुनिया के हिस्से को काटकर उसे भारत के साथ मिलाये रखने का काम उतना ही अप्राकृतिक साबित हुआ है जितना कि भारत के किसी अंग को काटकर उसे अलग जिन्दा रखने का प्रयास। असली बात यह है कि जैसे दुनिया के और भी कई देश दुनिया से अलग और अपने आप में पूर्ण हैं वैसे ही प्रकृति ने भारतवर्ष को भी एक स्वतंत्र देश के रूप में सिरजा है, जो दुनिया से अलग और अपने आप में पूर्ण है और जिसके भीतर बसने

वाले सब लोग भारतीय हैं। भारत एक बहुभाषा–भाषी देश है, लेकिन इन विभिन्न भाषाओं के भीतर बहने वाली हमारी संस्कृति एक है।

(ब)
आदि शंकराचार्य
(प्रो. उमेश कुमार सिंह)

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'दसनामी सम्प्रदाय' क्या है? संक्षेप में प्रकाश डालिए।

अथवा

शंकराचार्य ने किस प्रकार 'दसनामी सम्प्रदाय' बनाया? संक्षिप्त रूप से परिचय दीजिए।

उत्तर– आदिशंकराचार्य ने तत्कालीन भारतीय समाज के विविध मतों के प्रचार–प्रसार में लगे सभी मतानुयायियों और सम्प्रदायों की जातियों को एक सूत्र में बाँधने के लिए इन्हें इकट्ठा करके प्रथमतः इन्हें संन्यास आश्रम में दीक्षित किया और सभी मतों को छोड़कर एक 'दसनामी सम्प्रदाय' की स्थापना की। इन दसों के नाम से संन्यासियों की दस पद्धतियाँ विकसित हुईं। 'दसनामी सम्प्रदाय' में शैव मतानुयायी और वैष्णव–मतानुयायी दोनों ही प्रकार के साधु होते हैं। ये 'दसनामी सम्प्रदाय' इस प्रकार हैं–

(1) गिरी, (2) पर्वत, (3) सागर, (4) भृगपुरी, (5) भारती, (6) सरस्वती, (7) वन, (8) अरण्य, (9) तीर्थ, (10) आश्रम।

उक्त 'दसनामी सम्प्रदाय' के साधु प्रायः गेरुआ वस्त्र पहनते हैं तथा एक भुज वाली लाठी रखते हैं और 54 रूद्राक्षों की माला अपने गले में पहनते हैं। कठिन योग साधना और सनातन धर्म के प्रचार–प्रसार में ही इनका सम्पूर्ण जीवन व्यतीत होता है।

प्रश्न–2. शंकराचार्य ने कितने पीठ स्थापित किए? संक्षिप्त परिचय दीजिए।

अथवा

आदिशंकराचार्य ने मठों की स्थापना क्यों की और कितने मठों की स्थापना की? संक्षिप्त रूप में प्रकाश डालिए।

उत्तर– आदिशंकराचार्य ने सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण करते हुए जब धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को देखा तो उन्होंने भारतवर्ष को राष्ट्रीयता के सूत्र में बाँधने के लिए तथा संसार के अन्य देशों के लोगों को भारतवर्ष की सनातन–संस्कृति का साक्षात्कार कराने के लिए भारतवर्ष की चारों दिशाओं में चार पीठों या मठों की स्थापना की। ये भारतवर्ष की अलग–अलग चारों दिशाओं में स्थापित पीठ आज भी भारतीय संस्कृति एवं हिन्दू–धर्म के केन्द्र हैं।

(1) श्रृंगेरी–मठ या पीठ– यह जगद्गुरु शंकराचार्य जी का पहला मठ है। इस मठ की स्थापना उन्होंने दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य के चिकमंगलूर नामक जिले में की है। यह तुंगा–नदी के किनारे पर स्थापित है। इस मठ की स्थापना 'यजुर्वेद' के आधार पर की गई है।

(2) शारदा–मठ या पीठ– इस पीठ की स्थापना भारतवर्ष की पश्चिम दिशा में गुजरात प्रदेश की द्वारिकापुरी में की गयी है। इस पीठ की स्थापना आदिशंकराचार्य ने 'सामवेद' के आधार पर की है।

(3) ज्योतिर्मठ– इस मठ की स्थापना आदिशंकराचार्य ने उत्तर–भारत के बद्रिकाश्रम में की है। शंकराचार्य जी ने अपने शिष्य तोटकाचार्य को इस मठ का मठाधीश बनाया था। इस मठ का निर्माण 'अथर्ववेद' के आधार पर किया गया है।

(4) गोवर्धन मठ– इस मठ की स्थापना भारतवर्ष की पूर्व दिशा में स्थित उड़ीसा राज्य की जगन्नाथपुरी में की गई है। जगन्नाथपुरी के मंदिर को इस मठ का भाग ही माना जाता है। इस मठ का निर्माण आदिशंकराचार्य जी के द्वारा 'ऋग्वेद' के आधार पर कराया गया था।

स्थापित पीठों या मठों का महत्व– आदिशंकराचार्य जी ने भारतवर्ष की चारों दिशाओं में अलग–अलग चार पीठों अर्थात् मठों की स्थापना वेदान्त–मत का सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रचार–प्रसार करने तथा भारतवर्ष को सनातन धर्म एवं राष्ट्रीयता के सूत्र में बाँधने के लिए इन मठों की स्थापना की। हिन्दू धर्म के अनुसार कोई भी व्यक्ति यदि इन चारों मठों की यात्रा कर लेता है, तो वह मोक्ष–प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर हो जाता है।

प्रश्न–3. शंकराचार्य के प्रमुख शिष्यों के नाम बताइए।

अथवा

शंकराचार्य के प्रमुख चार शिष्य कौन–कौन थे? संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर– आदिशंकराचार्य के प्रमुख रूप से चार शिष्य थे। इनके नाम इस प्रकार हैं–

(1) पद्मपाद इन्हें 'सनन्दन' भी कहते हैं, (2) हस्तामलक, (3) मंडन मिश्र इन्हें सुरेश्वराचार्य भी कहते हैं। (4) तोटकाचार्य हैं।

उक्त सभी शिष्यों ने आदिगुरु शंकराचार्य के आदेशानुसार वेदान्त मठ का प्रचार–प्रसार करने के लिए महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचनाएँ कीं तथा स्तोत्र–साहित्य का भी निर्माण किया। इन्होंने भारतवर्ष में वैदिक–धर्म एवं दर्शन को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए अनेक श्रमण, बौद्धों तथा अन्य सम्प्रदाय के विद्वानों से शास्त्रार्थ भी किया। इस प्रकार आदि गुरु शंकराचार्य के शिष्यों का इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

प्रश्न–4. शंकराचार्य जी के द्वारा स्थापित बारह ज्योतिर्लिंगों के नाम बताइए।

अथवा

आदिगुरु शंकराचार्य जी ने किन–किन स्थानों पर किन–किन नामों से ज्योतिर्लिंगों की स्थापना की थी?

उत्तर– आदिगुरु शंकराचार्य ने भारतवर्ष को राष्ट्रीयता के सूत्र में पिरोने के लिए देश की चारों दिशाओं में चार पीठों की स्थापना की। इसके साथ ही आपने 12 ज्योतिर्लिंगों की भी स्थापना की। इनके नाम निम्नानुसार हैं–

(1) **सोमेश्वर–** सौराष्ट्र अर्थात् महाराष्ट्र में आपने 'सोमेश्वर' नाम से प्रथम ज्योतिर्लिंग की स्थापना की। इन्हें 'सोमनाथ' नाम से भी पुकारा जाता है।

(2) **मल्लिकार्जुन–** श्रीशैले या 'मल्लिकार्जुन' नाम द्वितीय ज्योतिर्लिंग की स्थापना आपने की। यह महादेव जी का द्वितीय अवतर भी कहा जाता है।

(3) **महाकालेश्वर–** महादेव जी का तीसरा अवतार 'महाकालेश्वर' या 'महाकाल' के नाम से माना जाता है। मध्यप्रदेश के उज्जैन नगर में 'महाकालेश्वर' नाम से भगवान महादेव जी के तीसरे ज्योतिर्लिंग की स्थापना मानी जाती है।

(4) **ओंकारेश्वर या अमलेश्वर–** ओंकारेश्वर में शिव जी का पार्थिवलिंग स्थापित किया गया जो दो भागों में विभक्त हो गया। इसीलिए नर्मदा नदी के एक किनारे पर 'ओंकारेश्वर' और दूसरे किनारे पर 'अमलेश्वर' स्थापित है।

(5) **केदारनाथ का केदारेश्वर–** केदार पर्वत पर केदारनाथ के नाम से पाँचवे ज्योतिर्लिंग की स्थापना की गई है। इन्हें 'केदारेश्वर' के नाम से भी जाना जाता है।

(6) **भीमशंकर–** डाकिनी में 'भीमशंकर' नाम से ज्योतिर्लिंग की स्थापना की गई।

(7) **विश्वेश्वर–** उत्तरप्रदेश की काशी (वाराणसी) में सातवें ज्योतिर्लिंग की स्थापना 'विश्वेश्वर' नाम से की गई। इन्हें 'विश्वनाथ' नाम से भी जाना जाता है।

(8) **त्र्यम्बकेश्वर–** आठवां ज्योतिर्लिंग 'त्र्यम्बकेश्वर' नाम से प्रसिद्ध है।

(9) **वैद्यनाथेश्वर–** नवां ज्योतिर्लिंग 'वैद्यनाथेश्वर' या 'वैद्यनाथ' के नाम से प्रसिद्ध है।

(10) **नागेश्वर–** दसवां ज्योतिर्लिंग माता अम्बिका सहित 'नागेश्वर' के नाम से 'दारुक-वन' में स्थित है।

(11) **रामेश्वर–** ग्यारवां ज्योतिर्लिंग सेतु–बंध पर 'रामेश्वर' के नाम से स्थापित है।

(12) **घूमेश्वर–** बारहवां ज्योतिर्लिंग 'घूमेश्वर' के नाम से स्थापित है।

इस प्रकार बारह ज्योतिर्लिंगों की स्थापना महादेव जी के बारह नामों से की गई है। हिन्दू धर्म में इन 12 ज्योतिर्लिंगों की पूजा–अर्चना का विशेष महत्व माना जाता है।

प्रश्न–5. चारों मठों में वेदों का अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य किस प्रकार होगा? इसका विधान शंकराचार्य जी ने किस प्रकार किया? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

आदिगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठों या पीठों में वेदों के अध्ययन एवं अनुसंधान की शंकराचार्य द्वारा की गई व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– आदिगुरु शंकराचार्य ने भारतवर्ष को राष्ट्रीयता के एक सूत्र में पिरोने के उद्देश्य से देश की अलग–अलग चारों दिशाओं में क्रमशः ज्योतिर्मठ, शारदामठ, श्रंगेरीमठ और गोवर्धन मठ की स्थापना की थी।

आपने इन चारों मठों में वेदों के अध्ययन–अध्यापन तथा अनुसंधान कार्य की भी व्यवस्था की। इसके अनुसार शारदा मठ में सामवेद, गोवर्धन मठ में ऋग्वेद, ज्योतिर्मठ में अथर्ववेद और श्रंगेरी मठ में यजुर्वेद के अध्ययन–अध्यापन तथा अनुसंधान कार्य की व्यवस्था की। इतना ही नहीं, आपने चारों मठों में ब्राह्मण ग्रंथों के इन चार महावाक्यों का क्रमशः 'ॐ तत्त्वमसि', 'ॐ प्रज्ञानं ब्रह्म', 'ॐ अयमात्मा ब्रह्म' और 'ॐ ब्रह्मास्मि' की प्रधानता तथा अवलम्बन का विधान भी किया।

इस प्रकार आदिगुरु शंकराचार्य जी ने अपनी तपस्या और श्रम से जो अध्यात्म–ज्ञान अर्जित किया, उसे भावी–पीढ़ी तक पहुँचाने तथा वेदान्त–धर्म का प्रचार–प्रसार करने के लिए और भारतवर्ष की अखण्डता एवं राष्ट्रीयता को मजबूती प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं।

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. शंकराचार्य का संक्षिप्त जीवन–परिचय दीजिए।

अथवा

(4) **ओंकारेश्वर या अमलेश्वर**– ओंकारेश्वर में शिव जी का पार्थिवलिंग स्थापित किया गया जो दो भागों में विभक्त हो गया। इसीलिए नर्मदा नदी के एक किनारे पर 'ओंकारेश्वर' और दूसरे किनारे पर 'अमलेश्वर' स्थापित है।

(5) **केदारनाथ का केदारेश्वर**– केदार पर्वत पर केदारनाथ के नाम से पाँचवे ज्योतिर्लिंग की स्थापना की गई है। इन्हें 'केदारेश्वर' के नाम से भी जाना जाता है।

(6) **भीमशंकर**– डाकिनी में 'भीमशंकर' नाम से ज्योतिर्लिंग की स्थापना की गई।

(7) **विश्वेश्वर**– उत्तरप्रदेश की काशी (वाराणसी) में सातवें ज्योतिर्लिंग की स्थापना 'विश्वेश्वर' नाम से की गई। इन्हें 'विश्वनाथ' नाम से भी जाना जाता है।

(8) **त्र्यम्बकेश्वर**– आठवां ज्योतिर्लिंग 'त्र्यम्बकेश्वर' नाम से प्रसिद्ध है।

(9) **वैद्यनाथेश्वर**– नवां ज्योतिर्लिंग 'वैद्यनाथेश्वर' या 'वैद्यनाथ' के नाम से प्रसिद्ध है।

(10) **नागेश्वर**– दसवां ज्योतिर्लिंग माता अम्बिका सहित 'नागेश्वर' के नाम से 'दारुक-वन' में स्थित है।

(11) **रामेश्वर**– ग्यारवां ज्योतिर्लिंग सेतु–बंध पर 'रामेश्वर' के नाम से स्थापित है।

(12) **घूमेश्वर**– बारहवां ज्योतिर्लिंग 'घूमेश्वर' के नाम से स्थापित है।

इस प्रकार बारह ज्योतिर्लिंगों की स्थापना महादेव जी के बारह नामों से की गई है। हिन्दू धर्म में इन 12 ज्योतिर्लिंगों की पूजा–अर्चना का विशेष महत्व माना जाता है।

प्रश्न–5. चारों मठों में वेदों का अध्ययन एवं अनुसंधान कार्य किस प्रकार होगा? इसका विधान शंकराचार्य जी ने किस प्रकार किया? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

आदिगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठों या पीठों में वेदों के अध्ययन एवं अनुसंधान की शंकराचार्य द्वारा की गई व्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– आदिगुरु शंकराचार्य ने भारतवर्ष को राष्ट्रीयता के एक सूत्र में पिरोने के उद्देश्य से देश की अलग–अलग चारों दिशाओं में क्रमशः ज्योतिर्मठ, शारदामठ, श्रंगेरीमठ और गोवर्धन मठ की स्थापना की थी।

आपने इन चारों मठों में वेदों के अध्ययन–अध्यापन तथा अनुसंधान कार्य की भी व्यवस्था की। इसके अनुसार शारदा मठ में सामवेद, गोवर्धन मठ में ऋग्वेद, ज्योतिर्मठ में अथर्ववेद और श्रंगेरी मठ में यजुर्वेद के अध्ययन–अध्यापन तथा अनुसंधान कार्य की व्यवस्था की। इतना ही नहीं, आपने चारों मठों में ब्राह्मण ग्रंथों के इन चार महावाक्यों का क्रमशः 'ॐ तत्त्वमसि', 'ॐ प्रज्ञानं ब्रह्म', 'ॐ अयमात्मा ब्रह्म' और 'ॐ ब्रह्मास्मि' की प्रधानता तथा अवलम्बन का विधान भी किया।

इस प्रकार आदिगुरु शंकराचार्य जी ने अपनी तपस्या और श्रम से जो अध्यात्म–ज्ञान अर्जित किया, उसे भावी–पीढ़ी तक पहुँचाने तथा वेदान्त–धर्म का प्रचार–प्रसार करने के लिए और भारतवर्ष की अखण्डता एवं राष्ट्रीयता को मजबूती प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं।

दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. शंकराचार्य का संक्षिप्त जीवन–परिचय दीजिए।

अथवा

आदि शंकराचार्य का जीवन–परिचय देते हुए उनके द्वारा हिन्दू धर्म के प्रचार–प्रसार हेतु किये गये कार्यों का वर्णन कीजिए।

उत्तर– शंकराचार्य का जन्म– माना जाता है, कि आज से करीब ढाई हजार वर्ष पहले यानी कि 507 ईसा पूर्व महा ज्ञानी एवं महान् दार्शनिक आदि शंकराचार्य जी का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। भारत देश के केरल राज्य में 'मालाबार' के कालही नामक स्थान पर इनका जन्म हुआ था और वहाँ के लोगों का मानना है कि धन्य है, वह पावन भूमि जहाँ पर साक्षात् भगवान शिव ने अवतार लिया था। शंकराचार्य के पिता का नाम शिवगुरु नाम पुद्रि तथा माता का नाम आर्याम्बा था। शिवगुरु ने पत्नी आर्याम्बा के साथ पुत्र हेतु भगवान शंकर की कठोर तपस्या–प्रार्थना की। भगवान शिव ने उन्हें स्वप्न में दर्शन देकर कहा है कि वत्स! तुम्हारे यहाँ जन्म लेना दीर्घायु पुत्र सर्वज्ञ नहीं होगा और सर्वज्ञ–पुत्र दीर्घायु नहीं होगा। शिवगुरु ने 'सर्वज्ञ–पुत्र' पाने की भगवान शिव से प्रार्थना की। शिव के वरदान से बालक शंकर का जन्म हुआ।

आदि शंकराचार्य को शिक्षा–दीक्षा देने का कार्य उनकी माता ने ही किया, क्योंकि उनके पिता की मृत्यु जब शंकाराचार्य 7 वर्ष के थे तभी हो गई थी। उनकी माँ ने आदि शंकराचार्य जी को वेद और उपनिषद् पढ़ाने में अपनी अहम् भूमिका निभाई थी।

आदि शंकराचार्य का प्रारंभिक जीवन एवं सन्यास– आदि शंकराचार्य अपने बचपन की उम्र से ही ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति थे, जो बड़े लोगों को अपने बुद्धि एवं विवेक के ज्ञान से चकित करने में सक्षम् थे। उन्होंने छोटी उम्र में ही उपनिषदों, ब्रह्म सूत्रों एवं भगवद् गीता का विश्लेषण करके उनके बारे में लिखना शुरू कर दिया था। अपितु आदि शंकराचार्य की बचपन से ही इच्छा थी, कि वह एक सन्यासी के रूप में अपने जीवन को व्यतीत करें, परन्तु उनकी माँ इसकी विरोधी थीं।

शंकराचार्य जी को आदि शंकराचार्य भी कहा जाता है आप साक्षात् भगवान शिव के अवतार थे आपने परमेश्वर रूपों से लोगों को अवगत कराया जिसमें, आपने यह बताया कि, (1) ईश्वर क्या है ? तथा (2) ईश्वर का जीवन में महत्व क्या है ?

यह ही नहीं आपने अपने जीवनकाल में, ऐसे अनेक कार्य किये जो अत्यन्त ही सराहनीय हैं और भारत की अमूल्य धरोहर के रूप में आज भी विद्यमान हैं। आपने हिन्दू धर्म को बहुत ही खूबसूरती से एक अलग अंदाज में निखारा। इसी के साथ अनेक भाषाओं में आपने अपने ज्ञान का प्रकाश फैलाया। आपने देश की चारों दिशाओं में मठों की स्थापना की। इसके साथ ही अनेक शास्त्र तथा उपनिषद् भी लिखे।

आदि शंकराचार्य की मृत्यु– विद्वानों का मानना है कि 477 ई.पू. जब आदि शंकराचार्य जी की उम्र 32 वर्ष की हुई तब वे हिमालय पर्वत पर केदारनाथ के पास एक गुफा में चले गए। ऐसा कहा जाता है कि जिस गुफा में उन्होंने प्रवेश किया था, वहाँ वे फिर से दिखाई नहीं दिए और यही कारण है, कि उस गुफा को ही उनका अन्तिम विश्राम–स्थल माना जाता है।

प्रश्न–2. शंकराचार्य की सेवाभावना का संक्षेप में परिचय दीजिए।

अथवा

'शंकराचार्य' की 'सेवाभावना' को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– शंकराचार्य बचपन से ही बड़े दयालु, परोपकारी, स्वाभिमानी और अद्भुत प्रतिभावान थे। इन्हीं गुणों के कारण आपने धर्म, साहित्य, समाज और अध्यात्म के क्षेत्र में अनेकों महत्वपूर्ण कार्य किए। इन्हीं कार्यों में से उनकी सेवाभावना एक है। बचपन से ही वे दूसरों के दुःख–दर्द को देखकर द्रवित हो जाते थे।

आदिगुरु शंकराचार्य की सेवाभावना हमें उनके जीवन में विविध रूपों में दृष्टिगोचर होती है। शंकराचार्य की सेवाभावना के महत्वपूर्ण प्रसंग निम्नानुसार दृष्टव्य हैं–

(1) निर्धनों के प्रति सेवाभाव– शंकराचार्य जब पाँच वर्ष के थे, उस समय वे गुरु के सान्निध्य में रहकर विद्याध्ययन करते थे और भिक्षाटन करते थे। एक बार वे एक ब्राह्मण के यहाँ भिक्षा के लिए गए। संयोग से वह ब्राह्मण बहुत गरीब था। वह भिक्षा कैसे देता? ब्राह्मण पत्नी ने उसके हाथ पर एक आँवला रखकर अपने आँसू पौंछ लिए। बालक शंकर का हृदय उसकी गरीबी को देखकर द्रवित हो गया। दूसरे दिन वह एक धनी परिवार के घर गया यद्यपि वह धनी लोगों के दरवाजे पर कम जाता था। आज शंकर को अपने द्वार पर देखकर धनी व्यक्ति ने समझा न जाने किस जन्म के पुण्य उदय हो गए?

बालक शंकर ने भिक्षा देहि की पुकार भी नहीं लगाई, लेकिन वह धनी व्यक्ति भिक्षा लेकर उपस्थित हो गया। शंकर ने भिक्षा के लिए हाथ पीछे खींच लिए और वह मधुर शब्दों में बोले– 'जो समाज के लोगों को अपना नहीं समझते, जिसके हृदय में अपने लोगों के लिए प्रेम नहीं, उनका अन्न खाकर क्या धर्मवृत्ति उत्पन्न हो सकेगी? अर्थात् नहीं।'

वह धनी व्यक्ति बालक शंकर की बात जब नहीं समझा तब उन्होंने कहा कि 'जिसके बगल में इतना निर्धन परिवार हो, वह स्वयं सुख और वैभव की गोद में खेलकर भी अपने को समाज का सेवक कहे, अपने धर्म की दुहाई दे, यह कैसी बिडम्बना?'

बालक शंकर की उक्त बात को सुनकर उस धनी व्यक्ति को अपने कर्तव्य का बोध हो गया, उसने बालक शंकर से क्षमा मांगी और अपने धन से सोने के आंवले बनबाकर उस गरीब ब्राह्मण के घर में भर दिये। इस प्रकार बालक शंकर में बचपन से ही गरीब की सेवा भावना विद्यमान थी। वे गरीबों के प्रति प्रेम करते थे और उनकी सहायता करके आनन्दित होते थे।

(2) मातृ–सेवा भाव– शंकराचार्य अपनी माँ के परम भक्त थे। जब बालक शंकर ने अपनी छोटी–सी उम्र में संन्यास लेने का संकल्प लिया, तब माँ के रोके जाने पर उन्होंने माँ को समझाते हुए कहा– 'माँ, जब नारद घर छोड़कर संन्यासी हुए थे, तब वे मात्र 5 वर्ष के थे। मैं तो आठ वर्ष का हूँ और मेरे ऊपर तो मातृ छाया भी सदैव रहेगी। हे माँ! तुम दुःखी क्यों होती हो? देखो मेरे सिर पर तो हमेशा ही तुम्हारा आशीर्वाद रहेगा। मैं तुम्हारे पार्थिव शरीर को अग्नि देने जरूर आऊँगा।'

उक्त वचनों को पूरा करने के लिए वे बद्रिकाश्रम से कालड़ी ग्राम पहुँचे और सच्ची श्रद्धा एवं सम्मान के साथ अपनी माँ का अन्तिम संस्कार किया। इतना ही उन्होंने माँ के आग्रह पर उन्हें अद्वैत–दर्शन समझाने के लिए 'तत्त्वबोध' नामक ग्रंथ की रचना की और जब माँ ने भगवान कृष्ण के विषय में पूछा तो उनके लिए 'कृष्णाष्टक' नामक ग्रंथ की रचना करके उन्हें सुनाया। इतना ही नहीं, उन्होंने संन्यासी होते हुए भी अपनी माँ का दाह–संस्कार (अपने घर

के आँगन में ही माँ की चिता बनाकर अग्नि संस्कार) किया। इस प्रकार शंकराचार्य ने अपनी मातृ–सेवा भाव का पालन किया।

(3) गुरु–सेवा– शंकराचार्य ने ओंकारेश्वर में गोविन्द भगवत्पादाचार्य जी से गुरु दीक्षा ली थी। जब वे अपनी माँ का दाह संस्कार करके निवृत्त हुए, तभी उन्हें अपने गुरु गोविन्दपाद के बीमार होने का संदेश मिला। वे कालड़ी ग्राम से 'अमलेश्वर' के लिए चल पड़े और उनके अन्तिम समय तक गुरु की सेवा में रहे।

(4) राष्ट्र–सेवा– शंकराचार्य सच्चे राष्ट्र–भक्त और राष्ट्र–सेवक थे। वे भारतवर्ष को सदैव एक 'अखण्ड भारत' के रूप में विकसित देखना चाहते थे। वे कहते थे कि– 'संन्यास का अर्थ, संसार को छोड़कर वन में तपस्या करना नहीं है। मैंने कर्म संन्यास लिया है, जिसका अर्थ कर्म से भागना नहीं है, अपितु देश और धर्म के लिए कर्म करना है, जो सत्य है तथा मनुष्य को कर्म फल बंधन' में नहीं बाँधते हैं।

भारतवर्ष को राष्ट्रीयता के एक सूत्र में बाँधने के लिए शंकराचार्य जी ने देश की चारों दिशाओं में पीठ स्थापित किए। सर्वप्रथम युधिष्ठिर संवत् (युगाब्द) 2648 में पश्चिम दिशा द्वारका में शारदा–मठ की स्थापना की। इसके बाद उत्तर में बद्रिकाश्रम ज्योतिर्मठ, दक्षिण में श्रृंगेरिमठ, पूर्व में जगन्नाथपुरी में गोवर्धनमठ की स्थापना की। इसके अलावा आपने 12 ज्योतिर्लिंगों की भी स्थापना की।

(5) धर्म–सेवा–भावना– शंकराचार्य जी ने कर्म संन्यास के माध्यम से राष्ट्र और जीव–मात्र के कल्याण के लिए अद्भुत कार्य किए। इसके साथ ही आपने धर्म और धर्माचार्य की भारतीय सनातन–परम्परा को संसार के सामने उजागर किया। आपने तत्कालीन भारतवर्ष में प्रचलित सभी मतों और सम्प्रदायों की जातियों को एकत्रित करके संन्यास में दीक्षित करके 'दसनामी–सम्प्रदाय' बनाया। इस प्रकार कठिन योग–साधना और वेदान्त–धर्म के प्रचार–प्रसार में ही आपने अपना सारा जीवन व्यतीत किया।

(6) शिष्यों की सेवा– शंकराचार्य ने अपने शिष्यों की भी सेवा की। शिष्य उदंक को कुष्ठ रोग से मुक्ति दिलाई। शिष्य 'हस्तामलक' को विक्षुब्ध–अवस्था से बाहर निकाला और उन्हें नया जीवन प्रदान किया।

इस प्रकार शंकराचार्य ने अपने जीवन को सेवा–भावना एवं निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र एवं समाज की तन–मन–धन से सेवा की। आपने माता के द्वारा भेजे गए धन को भी राष्ट्र का धन मानकर उससे बद्रिकाश्रम में बदरीनाथ का मंदिर बनवाया। उनका मानना था कि रक्षित धर्म ही हमारी रक्षा करता है। अतः संरक्षित धर्म से ही भारतवर्ष संरक्षित होगा।

प्रश्न–3. शंकराचार्य ने रूढ़ियों का किस तरह खंडन करके समाज को नई व्यवस्था दी? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

शंकराचार्य ने अपने जीवन में पूर्व की परम्परा से चले आ रहे किन नियमों–रूढ़ियों का खंडन किया और क्यों किया? समझाकर लिखिए।

उत्तर– सनातन संस्कृति के पुरोधा सनकादि महर्षियों की उपरति के बाद भारतवर्ष में वैदिकसन्मार्ग की दुर्गति होने लगी, फलस्वरूप स्वर्ग की प्राप्ति दुर्गम हो गयी और अपवर्ग (मोक्ष–प्राप्ति) अगम (पहुँच के परे) हो गया है तब इस भूतल पर भगवान भर्ग (शिव) शंकर

के रूप में अवतीर्ण हुए। भगवान शंकर को उनकी शिष्य-परम्परा में 'शिवावतार' (केदार) माना जाता है।

अल्पायु में ही बालक शंकर के सिर से पिता का साया उठ गया था। आठ वर्ष की उम्र में शंकर ने चारों वेदों का अध्ययन पूर्ण कर लिया था। उन्होंने अपनी छोटी-सी उम्र में ही संन्यास लेने का संकल्प लिया। माँ द्वारा संन्यासी बनने से रोकने पर बालक शंकर ने नारद-मुनि के जीवन की घटना सुनाई। उन्होंने माँ से कहा- 'जब नारद जी ने पैर का त्याग किया, तब वे मात्र 5 वर्ष के थे, मैं तो 8 वर्ष का हूँ और मेरे ऊपर तो मातृ-छाया भी सदैव होगी। तुम चिन्ता मत करो। तुम्हारे पार्थिव शरीर को अग्नि देने जरूर आऊँगा।'

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शंकराचार्य प्रारंभ से ही विलक्षण-प्रतिभा और नई-सोच वाले थे। वे साधारण संन्यासी नहीं थे। उनका मत था कि 'संन्यास' का अर्थ संसार को छोड़कर वन में जाकर तपस्या करना नहीं है। मैंने कर्म संन्यास लिया है, जिसका अर्थ 'कर्म' से भागना नहीं देश और धर्म के कर्म करना है, जो सत्य है तथा ये कर्म मनुष्य को कर्मफल-बंधन में नहीं बाँधते हैं।

यही कारण है कि उन्होंने निरन्तर उन नियमों को तोड़ा, जो जीवन के कर्म के मार्ग में बाधक थे। पूर्व में माँ को दिये गए वचनों के पालन के लिए वे माता के अन्तिम संस्कार को सम्पन्न करने के लिए बद्रिकाश्रम से 'कालड़ी' ग्राम पहुँचे। भारतीय हिन्दू-परम्परा के अनुसार एक संन्यासी को 'दाह-कर्म' करने की आज्ञा नहीं होती है, परन्तु शंकराचार्य ने संन्यास ग्रहण करने से पूर्व माँ को दिए वचनों का पालन करने के लिए इस नियम को तोड़कर घर के आंगन में ही माँ की चिता बनाकर माँ का अग्नि संस्कार किया।

इस प्रकार रूढ़-जीवन-मूल्यों पर प्रहार करके शंकराचार्य ने बँधे-बँधाए नियमों और निर्धारित रूढ़ियों के जड़त्व को तोड़ा।

शंकराचार्य जी कहते हैं कि हम अपने बनाए नियमों के स्वामी हैं, दास नहीं। अतः उन्होंने अपने जीवन में 'लकीर-पीटने के बजाय समाज को कर्म करते हुए लक्ष्य-प्राप्ति का ही संदेश दिया था।' इतना ही नहीं, वे मानते थे कि सामाजिक और धार्मिक व्यवस्थाएँ तथा नियम साध्य नहीं, अपितु साधन है और मनुष्य के द्वारा जीवन में इन साधनों का उपयोग करना तब तक उचित होता है, जब तक वे साधन साध्य को प्राप्त करने में सहायक हों, केवल 'लकीर-पीटने' से कोई लाभ नहीं होता है।

इस प्रकार शंकराचार्य जी ने स्वयं रूढ़िवादी नियमों को तोड़कर समाज में एक नई व्यवस्था को विकसित किया। समाज और राष्ट्र के कल्याण के लिए वे जीवन-भर प्रयासरत रहे। उनका योगदान अविस्मरणीय है।

प्रश्न-4. 'शंकराचार्य' और 'मण्डन मिश्र' के संवाद का सार लिखिए।

अथवा

'शंकराचार्य' और 'मण्डन मिश्र' के मध्य किस विषय पर शास्त्रार्थ हुआ? और कौन विजयी रहा? संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर- 'शंकराचार्य के त्वरित' संस्कृत के ग्रंथों में विद्यमान हैं। लेकिन इन सबमें माधवाचार्य द्वारा संगृहीत ग्रंथ 'शंकरविजय' विशेष रूप से आदरणीय है। इसके आठवें सर्ग में

पूर्व-मीमांसा-दर्शन के अनुयायी मण्डन मिश्र तथा अद्वैत-वेदान्ताचार्य शंकर के मध्य 'कर्मवाद', 'मायावाद', 'ब्रह्म' और 'सर्वात्मैक्य' के सिद्धान्तों को लेकर शास्त्रार्थ हुआ था।

मण्डन मिश्र का परिचय– मण्डन मिश्र माहिष्मती नगरी में रहते थे। वे पूर्व-मीमांसा-दर्शन के अनुयायी तथा कर्मकाण्डी विद्वान थे। वे आचार्य कुमारिल भट्ट के शिष्य थे। उन्हें मंत्र सिद्ध थे और वे देहधारियों का आह्वान भी कर लेते थे। उनके दरवाजे पर पिंजड़े में बन्द शुक-शुकी 'वेद स्वतः प्रमाण हैं या परतःप्रमाण हैं, सुख-दुःख इत्यादि फल कर्मों से प्राप्त होते हैं या सर्वशक्तिमान अजन्मा ईश्वर देता है? संसार नित्य है या अनित्य।'– आध्यात्मिक-विषयों पर चर्चा करते रहते थे।

शंकराचार्य मण्डन मिश्र से शास्त्रार्थ करने के लिए माहिष्मती नगरी में गए। मार्ग में उन्हें पानी भरने जा रही मण्डन मिश्र की दो दासियाँ मिलीं। शंकर ने उनसे मण्डन मिश्र का पता पूछा। दासियों ने उन्हें बताया कि जिस घर के दरवाजे पर शुक-शुकी वेदों के प्रामाण्य पर चर्चा कर रहे हों, समझो, नहीं मण्डन मिश्र का घर है। दृष्टव्य है, यह श्लोक–

'स्वतः प्रमाणं परतः प्रमाणं कीराङ्गना यत्र गिरं गिरन्ति
द्वारस्थनीडान्तरसन्निरुद्धा, जानीहि तन्मण्डनपण्डितौ कः'

शास्त्रार्थ का सार– शंकराचार्य ने मण्डन मिश्र के घर आकर कई दिनों तक लगातार शास्त्रार्थ किया। शास्त्रार्थ की निर्णायक मण्डन मिश्र की विदुषी पत्नी 'भारती' थी। भारती के निर्णय का तरीका अद्भुत था। उन्होंने दोनों के गले में पुष्प मालाएँ पहना दीं और कुछ दिन के लिए वहाँ से चली गईं। कुछ दिनों बाद वापस आकर शंकराचार्य को विजयी घोषित कर दिया।

देवी भारती के उक्त निर्णय से सभी चकित थे। इस पर देवी भारती ने स्पष्ट उत्तर देते हुए कहा– 'जब भी किसी को चिंता होती या क्रोध आता है, तो वह उसे छिपा नहीं पाता है। जब मैं वापस लौटी तो मैंने पाया कि मेरे पति के गले में मेरे द्वारा पहनाई गई फूलों की माला उनके क्रोध के ताप से सूख चुकी है, जबकि शंकराचार्य जी के गले में पहनाई गई फूलों की माला के फूल अब भी पहले जैसे ताजे हैं। इससे स्पष्ट है कि शंकराचार्य की विजय हुई और मेरा निर्णय कदापि गलत नहीं है।'

आगे भारती ने शंकराचार्य से कहा कि आपका माया, ब्रह्म और सर्वात्मैक्य का सिद्धान्त एक संन्यासी के लिए सत्य हो सकता है, लेकिन संसारी गृहस्थ के लिए व्यावहारिक नहीं हो सकता। अतः इसमें अव्यवहारिकता का दोष है।

शंकराचार्य उक्त प्रश्न में निरुत्तर हो जाते हैं। इसके बाद में राजा की मृत देह में प्रवेश करके सभी व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करते हैं। इसके छैः माह बाद शिष्यों के द्वारा वेद-मंत्रों के उच्चारण से वे पुनः अपनी देह में प्रवेश करते हैं और भारती तथा मण्डन-मिश्र को गृहस्थ और संन्यासी सभी के लिए वेदान्त के व्यावहारिक-कक्ष का समाधान करते हैं।

अन्त में शंकराचार्य ने मण्डन-मिश्र और उनकी पत्नी भारती को 'ब्राह्म यज्ञ' के स्थान पर 'आत्मयज्ञ' करने के लिए कहा। उन्होंने समझाया कि भक्ति की सनातन प्रेरणा और उसी के विकसित रूप में जनसाधारण की पूजा-पद्धति आदि के साथ जो कुछ है, वह मनुष्य जीवन में उपभोग के लिए नहीं है, बल्कि उसे आदर्शों की प्राप्ति के लिए करते हैं, यही यजीय भावना है।

अन्त में वे संदेश देते हुए कहते हैं कि हम साधन–रूप संस्कारों को नहीं छोड़ते। हमारे सम्पूर्ण धर्म–कृत्यों में यज्ञ, हवन आदि आवश्यक हैं। जीवन के सम्पूर्ण संस्कार यज्ञ हवन के द्वारा ही होंगे। इनका शुद्ध और सात्विक स्वभाव हमारा है, और रहेगा, लेकिन हमें दुराग्रही नहीं होना चाहिए। शास्त्रार्थ में शंकराचार्य के विजयी होने के बाद मण्डन–मिश्र ने सुरेश्वराचार्य और भारती ने 'सरस्वती' के रूप उनसे 'संन्यास' की दीक्षा ग्रहण कर ली।

प्रश्न–5. भारतवर्ष की एकात्मत्यता के लिए शंकराचार्य ने क्या–क्या किया? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

आदि शंकराचार्य ने भारतवर्ष की अखण्डता एवं राष्ट्रीय–एकता को सुदृढ़ बनाने के लिए कौन–कौन से कार्य किए? संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर– शंकराचार्य के जीवन–काल के समाज तथा धर्म का स्वरूप– आदि शंकराचार्य का जन्म 507 ईसा पूर्व केरल राज्य में मालाबार के कालड़ी नामक ग्राम में भगवान शिव के वरदान से 'शिवगुरु' नामक ब्राह्मण के घर में हुआ था। इनकी माता का नाम 'आर्याम्बा' था।

आपके जीवन–काल के बारे में यह कहा जाता है कि जब सनातन संस्कृति के पुरोधा सनकादि महर्षियों का प्राथमिक–सर्ग उपरति को प्राप्त हो गया। अभ्युदय और निःश्रेयसप्रद वैदिक–सन्मार्ग की दुर्गति होने लगी, फलस्वरूप स्वर्ग दुर्गम होने लगा और अपवर्ग (मोक्ष) की प्राप्ति अगम हो गई, उस समय भारतभूमि पर भगवान भर्ग (शिव) शंकराचार्य के रूप में अवतीर्ण हुए।

शंकराचार्य के जीवन के प्रारंभिक–काल में भारतवर्ष में अवैदिक मतावलम्बियों में चार्वाक का लोकायत–दर्शन, जैनों का अर्हत्–दर्शन तथा बौद्धों का, 'तथागत–दर्शन' प्रचलन में था। ये तीनों अवैदिक–दर्शन न तो वेद को मानते थे और न ही ईश्वर को।

महर्षि वादरायण (वेद–व्यास) ने 'वेदान्त' को व्यावहारिक–धरातल पर क्रियान्वित करने का कार्य किया। महर्षि वादरायण के काल में वैदिक धर्मावलम्बियों के मुख्यतः तीन तत्व-ज्ञानियों के दर्शन प्रचलित थे– कणाद का वैशेषिक दर्शन, गौतम का, न्यायदर्शन और कपिल का सांख्य दर्शन इनमें कणाद भौतिकवाद का, कपिल द्वैत को तथा गौतम द्वैधीभाव अर्थात् अनास्था और अविश्वास का प्रचार कर रहे थे। ऐसे समय में शंकराचार्य जी ने 'कर्म-संन्यास' के माध्यम से राष्ट्र और जीव–मात्र के कल्याण के लिए अद्भुत कार्य किए और भारतवर्ष में वैदिक–धर्म एवं दर्शन एकात्मता, अखण्डता तथा राष्ट्रीय–एकता को स्थापित करने के लिए निम्नलिखित कार्य किए हैं–

(1) पीठों की स्थापना– शंकराचार्य जी सनातन राष्ट्र भारतवर्ष की एकात्मता के लिए कर्मरत संन्यासी थे। यही कारण है कि उन्होंने सम्पूर्ण भारतवर्ष का भ्रमण करके भारतवर्ष को राष्ट्रीयता के सूत्र में पिरोने के लिए देश की चार अलग–अलग दिशाओं में चार पीठों (मठों) की स्थापना की। आपने उत्तर में बद्रिकाश्रम में 'ज्योतिर्मठम्' पश्चिम में द्वारका में शारदामठ, दक्षिण में शृंगेरी–मठ और पूर्व में जगन्नाथपुरी में गोवर्धन मठ की स्थापना की। इसके साथ-साथ आपने इन चारों मठों में वेदों के अध्ययन–अध्यापन और अनुसंधान–कार्य की भी व्यवस्था की। इस व्यवस्था के अनुसार शारदा–मठ में सामवेद, गोवर्धन–मठ में ऋग्वेद,

ज्योर्ति–मठ में अथर्ववेद और शृंगेरि–मठ में यजुर्वेद के अध्ययन–अध्यापन एवं सम्बन्धित क्षेत्र में अनुसंधान–कार्यों के क्रियान्वयन की व्यवस्था की।

(2) ज्योर्तिर्लिंगों की स्थापना– शंकराचार्य ने देश के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में 12 ज्योतिर्लिंगों की स्थापना भी की। इससे धार्मिक एवं सांस्कृतिक एकात्मता की स्थापना हो सकी।

(3) दसनामी सम्प्रदाय की स्थापना– आपने तत्कालीन मत–मतान्तरों को एकता के सूत्र में बाँधने के लिए अपने समय में प्रचलित सभी मतों और सम्प्रदायों की जातियों में प्रचलित सभी मतों और सम्प्रदायों की जातियों को इकट्ठा करके उन्हें संन्यास में दीक्षित करके 'दसनामी सम्प्रदाय' की स्थापना की। इन दसों के नाम से संन्यासियों की दस पद्धतियाँ विकसित हुई। ये दस सम्प्रदाय इस प्रकार हैं– (1) गिरी, (2) पर्वत, (3) सागर, (4) भृगुपुरी, (5) भारती, (6) सरस्वती, (7) वन, (8) अरण्य, (9) तीर्थ, (10) आश्रम।

(4) समभाव एवं सेवा–भाव– शंकराचार्य का सभी के प्रति समभाव था। उनमें ऊँच–नीच, छोटे–बड़े, जाति–पांति, अमीर–गरीब का भेदभाव न था, बल्कि उन्होंने समाज के निम्न–वर्ग के गरीबों के लिए बहुत कार्य किए। उन्होंने अपने शिष्यों की भी सेवा की। उन्होंने उदंक को कुष्ठ–रोग से मुक्त किया। शिष्य हस्तामलक को विक्षुब्ध अवस्था से बाहर निकाला। चांडाल को उन्होंने अपना गुरु माना तथा 'मनीषपंचक' नाम से विख्यात पांच श्लोकों की रचना की।

(5) अध्यात्मवाद का उपदेश– शंकराचार्य ने अपने शिष्यों को 'अध्यात्म–सार' को समझाकर के सम्पूर्ण भारतवर्ष में 'एकात्मता' का भाव विकसित करने की प्रेरणा दी। उनके अध्यात्मवाद की मूल बातें निम्नलिखित हैं–

'आत्मा एक राजा के समान होती है, जो शरीर, इन्द्रियों, मन, बुद्धि से बिल्कुल अलग होती है। आत्मा इन सबका साक्षी स्वरूप है। तीर्थ करने के लिए किसी जगह जाने की जरूरत नहीं है। सबसे बड़ा और अच्छा तीर्थ आपका अपना मन है', आदि।

इसके साथ ही उन्होंने अपनी जीवन–काल के अन्तिम समय अपने चार शिष्यों– पद्मपाद (सनन्दन), हस्तामलक, मण्डन मिश्र (सुरेशाचार्य), तोटकाचार्य को भारतवर्ष में एकात्मता के भाव को सुदृढ़ बनाने का परामर्श दिया।

इस प्रकार शंकराचार्य ने वैदिक धर्म एवं दर्शन को भारतवर्ष में पुनः प्रतिष्ठित करके एकात्मता अखण्डता एवं राष्ट्रीय एकता को स्थापित करने के लिए अनेक श्रमण बौद्धों तथा अन्य सम्प्रदाय के विद्वानों से शास्त्रार्थ किया। पं. दीनदयाल जी कहते हैं कि 'आदिगुरु शंकराचार्य के सिद्धान्तों और सद्–प्रयासों से भारतवर्ष एक ओर रूढ़िवादी कर्मकाण्डों से और इसकी नास्तिक जड़वाद के गर्त में गिरने से बच गया।'

प्रश्न–12. शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन की अवधारणा स्पष्ट कीजिये।

अथवा

अद्वैत दर्शन के तीन पहलू लिखिए।

अथवा

शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन का सार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर– शंकराचार्य का अद्वैत दर्शन– शंकराचार्य का कथन है कि अद्वैत दर्शन की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है और उपनिषदों की शिक्षा पर आधारित है। अद्वैत दर्शन के तीन पहलू है– (1) तत्व मीमांसा, (2) ज्ञान मीमांसा, (3) आचार दर्शन।

शंकराचार्य के बाद के वैदान्तियों ने इनका अलग–अलग विकास किया। तत्व मीमांसा की दृष्टि से अद्वैतवाद का अर्थ है कि सभी प्रकार के द्वैत या भेद का निषेध। अन्तिम तत्व ब्रह्म एक और अद्वैत है। उसमें स्वगत, स्वजातीय तथा विजातीय किसी भी प्रकार का द्वैत नहीं है। ब्रह्म अवयवरहित, अविभाज्य और अनन्त है। उसे सच्चिदानन्द या 'सत्य', 'ज्ञानं', 'अनन्तम् ब्रह्मा' भी कहा गया है। असत् का निषेध करने से जो प्राप्त हो, वह सत्, अचित् का निषेध करने से जो प्राप्त हो, वह चित् और दुःख का निषेध करने से जो प्राप्त हो, वह आनन्द है। यह ब्रह्मा का स्वरूप लक्षण है, परन्तु यहाँ ध्यान रखने की बात यह है कि सत्, चित् और आनन्द न तो ब्रह्म के तीन पहलू हैं, न ही ब्रह्म के तीन अंश और न ही ब्रह्म के तीन विशेषण हैं। जो सत् है वही चित है और वही आनन्द भी है। दृष्टि भेद के कारण उसे सच्चिदानन्द कहा गया है– असत् की दृष्टि से वह सत् अचित् की दृष्टि से चित् और दुःख की दृष्टि से आनन्द है।

यह निर्गुण, निराकार, अविकारी, चित् ब्रह्म ही जगत् का कारण है। जगत् के कारण के रूप में उसे ईश्वर कहा जाता है। मायोपहित ब्रह्म ही ईश्वर है। अतः ब्रह्म और ईश्वर दो तत्व नहीं हैं– दोनों एक ही हैं। जगत् ब्रह्म पर आश्रित हैं, परन्तु ब्रह्म जगत् पर किसी भी प्रकार आश्रित नहीं है, वह स्वतंत्र है। जगत् का कारण प्रकृति, अणु या स्वभाव में से कोई नहीं हो सकता। इसी से उपनिषदों ने स्पष्ट कहा है कि 'ब्रह्म वह है जो जगत् की सृष्टि, स्थिति और लय का कारण है।' जगत् की सृष्टि आदि के लिए ब्रह्म को किसी अन्य तत्त्व की आवश्यकता नहीं होती है। जगत् की रचना ब्रह्माश्रित माया से होती है, परन्तु माया कोई स्वतंत्र तत्व नहीं है। यह मिथ्या है, इसलिए ब्रह्म को ही कारण कहा गया है। सृष्टि वास्तविक नहीं है, अतः उसे मायाजनित कहा गया है।

इकाई-3

(1)

पर्यायवाची शब्द

विलोम शब्द, अनेक शब्द के लिए एक शब्द

(हिन्दी व्याकरण)

पर्यायवाची शब्द

लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न–1. निम्नलिखित शब्दों के पाँच–पाँच पर्यायवाची लिखिये–
अमृत, आकाश, जल, तालाब, नदी।

उत्तर– अमृत – सुधा, अमिय, सोम, पीयूष, अमी।
आकाश – नभ, गगन, आसमान, अंबर, व्योम।
जल – पानी, नीर, वारि, सलिल, पय।

तालाब – सर, जलाशय, सरसी, पुष्कर, ताल।
नदी – सरिता, तरंगिणी, तटनी, सरित, तरंगिनी।

प्रश्न–2. इन शब्दों के विलोम शब्द लिखिये–
अंधकार, आदर, आदि, गुरु, कोमल।

उत्तर–

शब्द	विलोम
अंधकार	प्रकाश
आदर	निरादर
आदि	अंत
गुरु	लघु
कोमल	कठोर

प्रश्न–3. अनेकार्थी लिखिये– अंबर, उत्तर, कल, कनक, मित्र।

उत्तर–

अंबर	आकाश, वस्त्र
उत्तर	दिशा, जवाब
कल	मशीन, चैन, पिछला दिन
कनक	धतूरा, गेहूँ, सोना
मित्र	दोस्त, सूर्य, वरुण

प्रश्न–4. निम्नलिखित शब्द–युग्म का अर्थ लिखिये–
हरि–हर, शंकर–संकर, लक्ष्य–लक्ष, कार्य–क्रम, देव–दैव

(1)	हरि	विष्णु
	हर	शिव
(2)	शंकर	शिव
	संकर	मिला हुआ
(3)	लक्ष्य	निशाना
	लक्ष	लाख
(4)	कर्म	कार्य
	क्रम	बारी
(5)	देव	देवता
	दैव	भाग्य

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-</u>

प्रश्न–1. पर्यायवाची शब्दों की परिभाषा लिखिये और पाँच–पाँच उदाहरण लिखिये।

उत्तर– पर्याय का अर्थ है– विकल्प। पर्यायवाची शब्दों को एक–दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किया जा सकता है। पर्यायवाची और समानार्थी शब्दों के अर्थ में पूर्ण समानता होती है जबकि पर्यायवाची शब्द समान भाव रखते हुये भी पूरी तरह समान नहीं होते हैं जैसे– 'समीर' और 'झंझा' पर्यायवाची होते हुये भी समानार्थक नहीं है।

उदाहरण –

1.	अंश	भाग, हिस्सा, अवयव, अंग।
2.	अग्नि	पावक, अनल, कृशानु, वैश्वानर।
3.	अमृत	पीयूष, सुधा, अमिय, सोम।
4.	अरण्य	जंगल, वन, कानन, विपिन।
5.	अश्व	हय, घोड़ा, सैन्धव, तुरंग, घोटक, वाजि।

6.	असुर	दैत्य, दनुज, राक्षस, निशाचर, दानव।
7.	अधर	ओष्ठ, रदच्छद, रदपुट, होंठ।
8.	अन्न	अनाज, शस्य, धान्य, गल्ला।
9.	अतिथि	अभ्यागत, पाहुन, मेहमान।
10.	अहंकार	अभिमान, गर्व, दर्प, मद, अहम।
11.	अंधेरा	तमस, तिमिर, अन्धकार, तम।
12.	आकाश	अनन्त, अम्बर, गगन, अन्तरिक्ष, व्योम।
13.	आँख	चक्षु, दृग, लोचन, अक्षि, नेत्र।
14.	आभूषण	आभरण, भूषण, अलंकार, मंडन।
15.	आम	रसाल, सहकार, सौरभ, अम्ब, आम्र।
16.	आज्ञा	निर्देश, अनुमति, शासन, आदेश।
17.	आँसू	अश्रु, नेत्राम्बु, चक्षुजल।
18.	आनन्द	मोद, आह्लाद, हर्ष, प्रमोद।
19.	इच्छा	कामना, वासना, अभिलाषा, मनोरथ, वांछा।
20.	इन्द्र	शक्र, सुरेश, शचीपति, पुरन्दर, मघवा।
21.	इन्द्रधनुष	सुरधनु, शक्रचाप, इन्द्रचाप।
22.	ऊँट	क्रमेलक, उष्ट्र, लम्बोष्ठ, महाग्रीव।
23.	कमल	कुंज, पुण्डरीक, राजीव, अरविन्द, उत्पल, सरोज।
24.	कपड़ा	अम्बर, चीर, वसन, पट, वस्त्र।
25.	कामदेव	रतिपति, स्मर, कन्दर्प, अनंग, मन्मथ।
26.	कृष्ण	केशव, मुरारि, माधव, मधुसूदन, गोपाल।
27.	किरण	मयूख, मरीचि, रश्मि, अंशु, कर।
28.	कोकिल	वसंतदूत, कोयल, पिक, काकपाली।
29.	कपोत	पारावत, हारीत, परेवा, रक्तलोचन।
30.	कुत्ता	श्वान, कुछचु र, श्व, शुनक।
31.	कौआ	काग, काक, वायस, पिशुन, करठ।
32.	कृपा	अनुकम्पा, अनुग्रह, दया।
33.	क्रोध	रोष, कोप, अमर्ष, आक्रोश।
34.	कान	कर्ण, श्रोत्र, श्रवण, श्रुति।
35.	खंभा	स्तूप, स्तंभ, खंब।
36.	खून	रुधिर, रक्त, शोणित, लहू।
37.	खग	द्विज, पंछी, विहग, अण्डज।
38.	गाय	गौरी, धेनु, सुरभी, गौ, भद्रा।
39.	गणेश	गजानन, विनायक, एकदंत, लम्बोदर, मूषक-वाहन।
40.	गंगा	मंदाकिनी, त्रिपथगा, जाह्नवी, सुरसरि, भागीरथी।
41.	घर	भवन, निकेतन, सदन, आलय, अयन।
42.	घट	कुंभ, कलश, घड़ा।
43.	चन्द्रिका	ज्योत्सना, चाँदनी, कौमुदी।
44.	चाँदी	रजत, रौप्य, रूपा।
45.	जमुना	यमुना, कालिन्दी, तरणिजा, कृष्णा।

46.	जिह्वा	जीभ, रसना, रसज्ञा, रसिका।
47.	जलयान	वोहित्थ, जहाज, पोत।
48.	जल	तोय, अम्बु, वारि, नीर, सलिल, पय।
49.	तलवार	चन्द्रहास, असि, खड्ग, कृपाण, करवाल।
50.	तोता	कीर, सुग्गा, शुक, रक्ततुण्ड, सुआ।
51.	तारा	तारक, उडुगन, उडु, नक्षत्र।
52.	तरंग	उर्मि, वीचि, लहर, हिलोर।
53.	तीर	शर, शिलीमुख, विशिख, सायक, धनुष।
54.	दूध	क्षीर, स्तन्य, पय, क्षीर।
55.	दिन	वासर, दिवस, दिवा, घौसर, द्यौ।
56.	द्रव्य	दौलत, विभूति, सम्पदा, वित्त, धन।
57.	दुःख	क्लेश, पीड़ा, संताप, खेद।
58.	देव	अमर्त्य, अमर, सुर, देवता।
59.	दास	किंकर, चाकर, अनुचर, भृत्य, सेवक।
60.	दिशा	दिशि, दिक्।
61.	पृथ्वी	धरा, धरती, मेदिनी, मही, वसुन्धरा।
62.	नृप	राजा, नरेश, नरेन्द्र, महीप, भूप।
63.	नाव	तरी, तरणी, नौका, नैया।
64.	नर्क	नरक, यमपुर, यमालय, रौरव।
65.	नर	आदमी, पुरुष, जन, मनुज, मानव, मर्त्य, मनुपुत्र।
66.	नदी	सरिता, निर्झरिणी, पयस्विनी, शैलजा।
67.	पति	प्राणेश, स्वामी, भर्ता, वल्लभ, कान्त।
68.	पत्नी	दारा, भार्या, अर्द्धांगिनी।
69.	पर्वत	नग, गिरि, भूधर, अचल, शैल।
70.	पिता	जनक, जनयिता, तात, बाप।
71.	पुत्र	तनय, आत्मज, अपत्य, सुत।
72.	पुत्री	तनुजा, नंदिनी, दुहिता, सुता, आत्मजा।
73.	पार्वती	शैलजा, गिरिजा, उमा, शिवा, गौरी।
74.	पेड़	वृक्ष, विटप, तरु, द्रुम, पादप।
75.	पथ	मार्ग, मग, राह, पंथ।
76.	प्रतिज्ञा	शपथ, प्रण, प्रतिश्रुति, वचन।
77.	प्रेम	अनुराग, प्रणय, रति, स्नेह, प्रीति।
78.	प्रकाश	प्रभा, छवि, द्युति, ज्योति।
79.	पण्डित	विचक्षण, मनीषी, बुध, प्रज्ञ, सुधी।
80.	प्रातः	प्रभात, उषा, प्रातःकाल, अरुणोदय।
81.	समुद्र	उदधि, पयोधि, तोयनिधि, रत्नाकर।
82.	सूर्य	दिवाकर, भास्कर, अर्क, भानु।
83.	समूह	यूथ, वृन्द, पुंज, निकर।
84.	चन्द्रमा	सुधाकर, रजनीकर, राकापति, मयंक।
85.	बादल	जलद, नीरद, अम्बुद, पयोद।

प्रश्न–2. अनेकार्थी शब्द किसे कहते हैं, उदाहरण सहित लिखिये।

अथवा

अनेकार्थी शब्द का आशय स्पष्ट करते हुये उसके भेद बताइये।

उत्तर– एक ही शब्द में अनेक अर्थ छिपे होने के कारण वह शब्द अनेकार्थी होता है। समान उच्चारण एवं वर्तनी वाले इन शब्दों में अनेक अर्थ संश्लिष्ट होते हैं। अनेकार्थी शब्दों के तीन रूप हैं–

(1) मूल अनेकार्थी शब्द– ये एक ही भाषा के मूल शब्द होते हैं और अनेक अर्थ देते हैं। यथा–

	जलज	मोती, कमल, चन्द्र, सेवार।
	द्विज	ब्राह्मण, पक्षी, चन्द्रमा।
	गुरू	शिक्षक, भारी, दीर्घ मात्रा, ग्रह विशेष।

(2) व्युत्पन्न अनेकार्थी शब्द– जब एक ही भाषा के तत्सम और तद्भव शब्दों में समान उच्चारण और वर्तनी हो तथा उनके अनेक अर्थ हों। यथा–

सूत	सारथी, धागा।

(3) आगत अनेकार्थी शब्द– जब दो भाषाओं के समान उच्चारण–वर्तनी वाले शब्द, जो भिन्न–भिन्न अर्थ रखते हैं, किसी भाषा के कोश या प्रचलन में प्रयुक्त हो जायें तो वे आगत अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं–

दीन	गरीब (संस्कृत), धर्म (फारसी)

उदाहरण–

अर्थ	धन, लिये, तात्पर्य, कारण।
अवस्था	आयु, हालत।
अंक	गिनती के अंक (नम्बर), नाटक के अंक, चिह्न, भाग्य।
अकाल	दुर्भिक्ष, असमय मृत्यु
अक्षर	वर्ण, आकाश, ब्रह्म।
अम्बर	आकाश, कपड़ा, विशिष्ट, चरखा।
अज	बकरा, दशरथ के पिता, ब्रह्मा, अजन्मा।
अर्क	सूर्य, रस, आकड़ा।
अपवाद	कलंक, प्रचलित, नियम के विपरीत।
अक्ष	आँख, धुरी, पहिया, सर्प।
आम	आम का फल, सर्वसाधारण आदमी।
उत्तर	दिशा विशेष, जवाब, हल, परवर्ती।
कनक	सोना, धतूरा, पर्श, खजूर, गेहूँ।
कंज	कमल, केश, ब्रह्मा, अमृत।
कल	आने वाला दिन, पिछला दिन, कल–कारखाने, चैन।
कक्ष	कमरा, काँख, कछौटा, कछार, कास, पाप, श्रेणी।
कृष्ण	काला, कृष्णावतार, वेदव्यास।
कर	हाथ, टेक्स, किरण, सूँड।
काल	समय, मृत्यु, कालखण्ड।
कोटि	करोड़, श्रेणी या वर्ग, धनुष का सिरा।
कुल	सब, वंश
खर	गधा, बगुला, एक राक्षस, तृण, कंडा, तेजधार।

प्रश्न–3. विलोम या विलोमार्थी शब्दों की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिये।

अथवा

'विलोमार्थी' शब्द किसे कहते हैं? समझाइये।

अथवा

विलोमार्थी शब्द किसे कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये।

उत्तर– किसी शब्द के विपरीत अर्थवाची शब्द को विलोमार्थी या विरुद्धार्थी शब्द कहा जा सकता है। विलोमार्थी शब्द विशेषण होते हैं, क्योंकि इनमें विपरीततावाचक स्वभाव, गुण, आकार, स्थिति, धर्म आदि का संकेत होता है। 'कृष्ण' का विलोमार्थी 'कंस' नहीं है, क्योंकि इससे कोई विशेषता ध्वनित नहीं होती है। विलोमार्थी में एक शब्द की विशेषता का विरोध होता है। व्युत्पत्ति के आधार पर विलोम शब्दों के दो वर्ग हैं।

(1) मूल विलोमार्थी– ऐसे शब्द जो किसी शब्द के ठीक विपरीत अर्थ की व्यंजना करते हैं, तो ऐसे शब्द मूल विलोमार्थी होते हैं। यथा–

खण्डन	मण्डन	अधम	उत्तम
अस्त	उदय	कृतज्ञ	कृतघ्न
आदि	अन्त	जन्म	मरण।

(2) व्युत्पन्न विलोमार्थी– उपसर्गों के प्रयोग से भी विलोमार्थी शब्द बनाये जाते हैं। मूल शब्द में उपसर्गों के प्रयोग से विरुद्ध अर्थ को प्रकट करने वाले जो शब्द बनाये जाते हैं उन्हें व्युत्पन्न विलोमार्थी कहा जाता है। यथा–

लक्ष्य	अलक्ष्य	कर्मण्य	अकर्मण्य
आचार	अनाचार	गुण	अवगुण
मान	अपमान	योग	वियोग
कपट	निष्कपट	वाद	प्रतिवाद
लोक	परलोक	मौजूदगी	गैर–मौजूदगी।

हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे हैं, जिनके मूल रूप में ही उपसर्ग संयोजित रहता है। ऐसे शब्दों के विलोमार्थी शब्द बनाने के लिये मूल शब्द से जुड़े उपसर्ग का विलोम अर्थ प्रकट करने वाला उपसर्ग जोड़ दिया जाता है। यथा–

आसक्ति	अनासक्ति	अदोष	सदोष
आविर्भाव	तिरोभाव	संगत	विसंगत
विपन्न	संपन्न	सदय	निर्दय।

अर्थ के आधार पर वर्गीकरण– अर्थ के आधार पर विलोमार्थी शब्दों के दो प्रकार हैं–

(1) पूर्ण विलोमार्थी– ये एक तरह से ऐसे शब्द–युग्म हैं, जो परस्पर विरुद्धार्थी हैं। यथा– रात– दिवस, तिमिर– ज्योति, स्वर्ग– नरक, अथ– इति, नख– शिख आदि।

(2) अपूर्ण विलोमार्थी– जो विलोमार्थी ठीक विपरीत नहीं होते अथवा विलोमार्थी शब्द–युग्म की तरह व्यक्त नहीं होते, वे अपूर्ण विलोमार्थी होते हैं। यथा– तिमिर– उजाला, सुबह– सन्ध्या, सुपुत्र– कपूत। इनमें तत्सम या अतत्सम शब्द का वैसा ही तत्सम या अतत्सम शब्द नहीं आया है, अतः अपूर्ण विलोम हैं।

स्वतंत्र शब्दों द्वारा बनाये गये विलोमार्थी शब्द– स्वतंत्र शब्दों द्वारा बनाये गये विलोमार्थी मूल विलोमार्थी कहलाते हैं। जैसे–

1. जन्म – मरण

2.	आदि	–	अन्त
3.	रात	–	दिन
4.	अस्त	–	उदय
5.	उत्तम	–	अधम

उपसर्गों द्वारा बनाये गये विलोमार्थी शब्द– विलोमार्थी शब्दों की रचना उपसर्ग लगाकर भी की जाती है। इन्हें व्युत्पन्न विलोमार्थी कहते हैं। जैसे–

1.	कपट	–	निष्कपट
2.	आसक्ति	–	अनासक्ति
3.	सगुण	–	निर्गुण
4.	सदाचार	–	दुराचार
5.	सम्मान	–	अपमान

उदाहरण–

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
अंतरंग	बहिरंग	अनुरक्ति	विरक्ति
अभ्यास	अनभ्यास	अतिवृष्टि	अनावृष्टि
अथ	इति	अवनि	अम्बर
अधम	उत्तम	अगम	सुगम
अन्तर्द्वन्द्व	बहिर्द्वन्द्व	अनुलोम	प्रतिलोम
अर्जन	विसर्जन	अत्यधिक	स्वल्प
अधित्यका	उपत्यका	अल्प	बहु
अवनत	उन्नत	अग्नि	जल
अर्वाचीन	प्राचीन	अनुराग	विराग
अनुकूल	प्रतिकूल	अधिक	न्यून
अमृत	विष	अर्थ	अनर्थ
अपेक्षा	उपेक्षा	अग्र	पश्च
आमिष	निरामिष	आयात	निर्यात
आगम	निर्गम	आतुर	अनातुर
आद्य	अन्त्य	आकीर्ण	विकीर्ण
आहत	अनाहत	आरंभ	अंत
आय	व्यय	आरोह	अवरोह
आस्तिक	नास्तिक	आकाश	पाताल
आर्द्र	शुष्क	आधार	निराधार
आकृष्ट	विकृष्ट	इहलोक	परलोक
इष्ट	अनिष्ट	इच्छा	अनिच्छा
ईर्ष्या	द्वेष	उपसर्ग	प्रत्यय
उत्थान	पतन	उत्कर्ष	अपकर्ष
उन्मूलन	रोपण	उदार	कृपण
उत्कृष्ट	निकृष्ट	उन्मीलन	निमीलन
उच्च	निम्न	उपचार	अपचार
उदण्ड	विनीत	उभरा	धँसा

उन्मुख	विमुख
उग्र	सौम्य
ऐहिक	पारलौकिक
एकतंत्र	बहुतंत्र
ऋजु	वक्र
कर्कश	कोमल
क्रोध	क्षमा
करुण	निष्ठुर
कृश	पुष्ट
कुटिल	सरल
कृतज्ञ	कृतघ्न
खण्ड	अखण्ड
गरल	सुधा
गुप्त	प्रकट
गहरा	छिछला
गृहिणी	संन्यासिनी
घरेलू	बाहरी
चल	अचल
चंचल	अचंचल
जागरण	निद्रा
जल	स्थल
जड़	चेतन
जय	पराजय
तिक्त	मधुर
ताप	शीत
तरल	ठोस
तप्त	शीतल
थोक	खुदरा
देय	अदेय
द्दनुज	मनुज
दक्षिण	वाम, उत्तर
ध्वंस	निर्माण
दीर्घकाय	लघुकाय
द्वैत	अद्वैत
न्यून	अधिक
निर्मल	मलिन
निंद्य	वंद्य
नवीन	प्राचीन
निष्क्रिय	सक्रिय
नैसर्गिक	अनैसर्गिकं

उतार	चढ़ाव
ऐक्य	अनैक्य
एकत्र	विकीर्ण
ऋणात्मक	धनात्मक
उषा	संध्या
कृष्ण	शुक्ल
कृत्रिम	प्रकृत, अकृत्रिम
कर्कशा	सुशीला
क्रय	विक्रय
कल्पित	सत्य
खण्डन	मण्डन
ग्राम	नगर
गेय	अगेय
ग्रस्त	मुक्त
ग्रहण	त्याग
घात	प्रतिघात
चिरंतन	नश्वर
चेतन	अचेतन
ज्येष्ठ	कनिष्ठ
जागृति	सुषुप्ति
ज्वार	भाटा
जंगम	स्थावर
तरुण	वृद्ध
तामसिक	सात्विक
तीव्र	मंद
तम	ज्योति
तृष्णा	वितृष्णा
दिवा	रात्रि
दुखांत	सुखांत
दुर्दान्त	शांत
दृढ़	विचलित
द्रुत	मंद
धृष्ट	विनीत
धूर्त	सज्जन
निन्दा	स्तुति
निषिद्ध	विहित
निरक्षर	साक्षर
निष्काम	सकाम
नूतन	पुरातन
नश्वर	शाश्वत

नेकी	बदी	नित्य	अनित्य
प्रलय	सृष्टि	पक्ष	विपक्ष
परकीय	स्वकीय	प्रत्यक्ष	परोक्ष
प्रातः	सायं	प्रधान	गौण
प्रवृत्ति	निवृत्ति	परुष	कोमल
प्रसार	संकोच	पाश्चात्य	पौर्वात्य
प्रफुल्ल	म्लान	प्रेम	घृणा
प्रसाद	विषाद	परिश्रम	विश्राम
प्रयोग	अप्रयोग	पूर्व	अपर,उत्तर
परतंत्र	स्वतंत्र	पुरस्कार	तिरस्कार
प्रकृति	विकृति	पूर्ववर्ती	उत्तरवर्ती
बन्ध	मोक्ष	बद्ध	मुक्त
बर्बर	सभ्य	बाह्य	आभ्यंतर
उद्यम	निरुद्यम	मीलित	उन्मीलित
वैमनस्य	सौमनस्य	शोषक	पोषक
राव	रंक	रत	विरत
शिव	अशिव	वैतनिक	अवैतनिक
रागी	विरागी	मनुज	दनुज
मृदुल	कठोर	भद्र	अभद्र
पालक	घालक	म्लान	अम्लान

प्रश्न–4. एकार्थी शब्दों से क्या आशय है उदाहरण सहित लिखिये।

उत्तर– सभी भाषाओं में भाषा को स्पष्ट, संक्षिप्त तथा सुन्दर बनाने के लिये एक ही शब्द में व्यक्त करने वाले शब्द पाये जाते हैं इससे भावों में संक्षिप्तता आती है। वाक्यांश के लिये प्रयोग किये जाने वाले शब्द एक शब्द कहलाते हैं। इनके उदाहरण निम्नलिखित हैं–

	वाक्यांश	एक शब्द
1.	जो पढ़ा लिखा न हो	अनपढ़
2.	जिसकी कोई उपमा न हो	अनुपम
3.	जो बिना वेतन काम करे	अवैतनिक
4.	जिसके समान कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
5.	जो कभी न मरे	अमर
6.	जहाँ कोई न जा सके	अगम्य
7.	ईश्वर में विश्वास रखने वाला	आस्तिक
8.	ईश्वर में विश्वास न रखने वाला	नास्तिक
9.	जिसका अन्त न हो	अनंत
10.	जिसका पार न हो	अपार
11.	प्रति सप्ताह होने वाला	साप्ताहिक
12.	प्रति मास होने वाला	मासिक
13.	प्रति पक्ष होने वाला	पाक्षिक
14.	जिसका आकार न हो	निराकार
15.	जिसका आकार हो	साकार

16.	वर्ष में होने वाला	वार्षिक
17.	जिसमें दया न हो	निर्दय
18.	जिसमें बल न हो	निर्बल
19.	माँस खाने वाला	माँसाहारी
20.	माँस न खाने वाला	शाकाहारी
21.	जो सब कुछ जानता है	सर्वज्ञ
22.	जहाँ अनाथ रहते हैं	अनाथालय
23.	जो साफ कहने वाला हो	स्पष्टवादी
24.	जो आकाश में घूमता हो	नभचर
25.	पानी में चलने वाला	जलचर
26.	जिसका पति मर गया हो	विधवा
27.	जिसकी पत्नी मर गयी हो	विधुर
28.	जिसका पति जीवित हो	सधवा
29.	जिसके माता–पिता न हों	अनाथ
30.	एक साथ पढ़ने वाला	सहपाठी
31.	विद्या पढ़ने वाला	विद्यार्थी
32.	जानने की इच्छा रखने वाला	जिज्ञासु
33.	जो काम कठिन हो	दुष्कर
34.	विष्णु का उपासक	वैष्णव
35.	शिव का उपासक	शैव
36.	माँस, मछली न खाने वाला	शाकाहारी
37.	पति और पत्नी का जोड़ा	दम्पत्ति
38.	प्रतिदिन होने वाला	दैनिक
39.	जिसमें दया हो	दयालू
40.	जो सब जगह फैला हो	सर्वव्यापक
41.	जो आंखों के सामने न हो	परोक्ष
42.	जो आंखों के सामने हो	प्रत्यक्ष
43.	सगा भाई	सहोदर
44.	गोद लिया हुआ पुत्र	दत्तक
45.	जिस भूमि में कुछ पैदा न हो	ऊसर
46.	लेख लिखने वाला	लेखक
47.	थल पर रहने वाला	थलचर
48.	जो किसी से जीता न जा सके	अजेय
49.	बाहर के देशों में भेजना	निर्यात
50.	बाहर के देशों से मंगवाना	आयात

प्रश्न–5. शब्द युग्म के प्रकार बताते हुये उदाहरण सहित लिखिये।

अथवा

शब्द–युग्म किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर– हिन्दी भाषा में शब्दों के कुछ ऐसे जोड़े प्रचलित हैं जिनका प्रयोग साहित्यिक हिन्दी में ही नहीं बल्कि व्यावहारिक हिन्दी में भी किया जाता है। ये जोड़े समान अर्थ वाले भी होते हैं

और विपरीत अर्थ वाले भी। शब्दों के ये जोड़े शब्द-युग्म कहे जाते हैं। इनके प्रयोग से वाक्य में प्रखरता और विचारों में स्पष्टता आ जाती है। शैली भी अपेक्षाकृत अधिक प्रभावशाली एवं प्रवाहमयी बन जाती है। कुछ युग्मों के उदाहरण यहाँ दिये जाते हैं–

(क) एक साथ प्रयुक्त दो समानार्थी शब्द

आगे–आगे
खान–पान
धर–पकड़
रोना–चिल्लाना
रोना–विलपना
छीना–झपटी
लड़ाई–झगड़ा
पान–पत्ता
देवी–देवता
काम–काज
जाति–पाँति
बैठे–ठाले
जोड़–तोड़
माँ–बाप
आनंद–खुशी
कहा–सुनी
गरमा–गरम
धनी–मानी
पीछे–पीछे
हुक्का–तम्बाकू
बैठा–बैठी
बंधु–बाँधव
भाग–दौड़
मान–मर्यादा
अचल–पर्वत
जल–पान
संत–महंत
बाल–बच्चा
उछल–कूद
ठीक–ठाक
मार–पीट
नातेदार–रिश्तेदार
ब्याह–शादी
साथी–सँगाती
ठण्डा–ठण्डा
गरीब–गुरबा

(ख) एक साथ प्रयुक्त दो भिनार्थी शब्द

अपना–पराया
अमीर–गरीब
आय–व्यय
उचित–अनुचित
काम–धाम
खेल–कूद
जन्म–मरण
दया–दारू
देर–सबेर
न्यून–अधिक
मान–अपमान
लाभ–हानि
गर्मी–सर्दी
साँझ–सबेरे
हर्ष–विषाद
आहार–विहार
ऐसी–तैसी
आदि–अन्त (आद्यन्त)
आना–जाना
आयात–निर्यात
उठना–बैठना
क्रय–विक्रय
गोल–मोल, गोल–माल
छोटा–बड़ा
दुआ–सलाम
दौड़–धूप
देश–विदेश
इज्जत–बेइज्जत
नुकसान–फायदा
सन्त–असन्त
सुबह–शाम
जैसा–तैसा
इधर–उधर
कुत्ता–बिल्ली

पढ़ाई–लिखाई
भलाई–बुराई
थोड़ा–घना
गाली–गलौज
जड़–चेतन
जीव–जन्तु
तू–तू, मैं–मैं
माँ–बाप
धर्म–कर्म
मेल–जोल
पूर्व–पश्चिम
सती–साध्वी
ज्ञानी–ध्यानी
ओर–छोर
आगे–पीछे
आशा–निराशा
ऊँच–नीच
खरीद–फरोख्त
जय–पराजय
धनी–निर्धन
धन–धान्य
नोंक–झोंक
नया–पुराना
मोटा–ताजा
लोग–लुगाई
भला–बुरा
सुख–दुःख
अनुनय–विनय
एक–दो
खेती–बाड़ी
पूजा–पाठ
हार–जीत
धूप–छाँह
घर–बार
चोर–चाईं
झूठ–सच
भोजन–भजन
हँसी–मजाक
लाढ़–प्यार
यहाँ–वहाँ

पशु–पक्षी
सोना–चाँदी
दीन–ईमान
गुण–दोष
चोट–सपाट
जीवन–मरण
भेद–भाव
ज्ञान–विज्ञान
धूम–धाम
यश–अपयश
आकाश–पाताल
वाद–विवाद
पढ़ा–लिखा
आगे–पीछे
आना–कानी
उत्थान–पतन
ऊँचा–नीचा
खाद्य–अखाद्य
जच्चा–बच्चा
धर्मा–धर्म
दिन–रात
नर–मादा
प्राचीन–नवीन
राजा–रंक
शीतोष्ण
भक्ष्या–भक्ष्य
स्त्री–पुरुष
आदान–प्रदान
ऐसा–वैसा
नाच–गान
बाल–वृद्ध
थोड़ी–बहुत
देव–दानव
चर–अचर
चोर–उचक्का
तर्क–वितर्क
मोह–माया
अमल–पत्तां
नदी–नाले
इधर–उधर

स्थावर–संगम	सुबह–शाम
सावन–भादों	गंगा–जमुनी
भेष–भूषा	फल–फूल

(ग) सार्थक और निरर्थक शब्दों का एक साथ प्रयोग

आना–बाना	मारना–वारना
हलुआ–वलुआ	मिठाई–विठाई
ब्राह्मण–फ्राह्मण	कायस्थ–वायस्थ
कुर्ता–उर्ता	धोती–ओती
चमक–चमक	काम–वाम
बनिया–सनिया	झगड़ा–फगड़ा
खालिस–वालिस	गँवार–सँवार
आम–वाम	नाम–गाम
अफीम–वफीम	बर्फ–वर्फ
लहँगा–आँहगा	जूता–ऊता
अतिथि–वतिथि	मेहमान–सेमान
रोटी–फोटी	पानी–सानी

(2)

संधि और उसके प्रकार

(हिन्दी व्याकरण)

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न–1. संधि किसे कहते हैं? संधि के भेद सोदाहरण लिखिये।

अथवा

सन्धि की परिभाषा देते हुये उसके भेदों को उदाहरण सहित समझाइये।

उत्तर– संधि की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है– दो वर्णों के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं। यहाँ दो वर्ण मिलकर एक नया रूप धारण करते हैं। व्याख्यान पाठ में आये इन शब्दों पर ध्यान दीजिये– धर्मान्धता, मनोमालिन्य, शरणार्थी, मतान्तर। इसमें दो वर्ण मिलकर एक नया वर्ण बनता है, जैसे– धर्म + अन्धता = धर्मान्धता, मनः + मालिन्य = मनोमालिन्य, शरण + अर्थी = शरणार्थी, मत + अन्तर = मतान्तर। संधि संस्कृत का शब्द है। उच्चारण की सुविधा के लिये पहले शब्द के अंतिम और दूसरे शब्द के प्रारम्भिक अक्षर एक-दूसरे से मिल जाते हैं और उनकी मिलावट से विकार उत्पन्न होता है। वर्णों की यह विकारजन्य मिलावट संधि कहलाती है। इस मिलावट को समझकर वर्णों को जब अलग-अलग किया जाता है तब संधि विच्छेद होता है। भाषा में संधि का अपना सौन्दर्य भी है और महत्व भी। संधि के तीन प्रकार होते हैं–

1. स्वर संधि, 2. व्यंजन संधि, 3. विसर्ग संधि।

1. स्वर संधि– जब दो स्वरों का मेल होता है और उसके फलस्वरूप रूप परिवर्तन होता है या विकार उत्पन्न होता है तब स्वर संधि होती है। स्वर संधि के निम्नानुसार पाँच भेद हैं–

(i) दीर्घ स्वर संधि– जब दो एक ही प्रकार के दीर्घ या ह्रस्व स्वर मिल जाते हैं और रूप परिवर्तन होता है– तब यह संधि होती है। नियम यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ और ऋ के बाद वे ही ह्रस्व या दीर्घ स्वर आते हैं तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ और ॠ हो जाते हैं। जैसे– अ + अ = आ–दो ह्रस्व मिलकर एक 'आ' दीर्घ बन गया।

जैसे– (स्थान + अभाव = स्थानाभाव), (परम + अर्थ = परमार्थ) जैसे– आ + आ = एक ह्रस्व और दीर्घ मिलकर एक 'आ' दीर्घ बना जैसे– (वाचन + आलय = वाचनालय), (हिम + आलय = हिमालय), (शिव + आलय = शिवालय)।

(ii) गुण स्वर संधि– नियम– यदि अ या आ के बाद इ या ई, उ या ऊ और ऋ आये तो दोनों मिलकर क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर' हो जाते हैं– जैसे–

अ + इ = ए – (नर + इन्द्र = नरेन्द्र), (वीर + इन्द्र = वीरेन्द्र)
अ + ई = ए – (सुर + ईश = सुरेश), (देव + ईश = देवेश)
आ + इ = ए – (महा + इन्द्र = महेन्द्र), (रमा + इन्द्र = रमेन्द्र)
आ + ई = ए – (रमा + ईश = रमेश), (दुर्ग + ईश = दुर्गेश)
अ + उ = ओ – (सूर्य + उदय = सूर्योदय), (भाग्य + उदय = भाग्योदय)
अ + ऊ = ओ – (समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि), (जर्म + ऊर्मि = जलोर्मि)
आ + ऊ = ओ – (महा+उत्सव = महोत्सव), (विविध + उत्सव = विविधोत्सव)
अ + ऋ = अर– (देव + ऋषि = देवर्षि)
आ + ऋ = अर– (महा + ऋषि = महर्षि)

(iii) वृद्धि स्वर संधि– नियम– यदि 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आये तो दोनों के स्थान में ऐ और जब 'ओ' या 'औ' आये तब दोनों मिलकर 'औ' हो जाते हैं। जैसे–

अ + ए = ऐ – (एक + एक = एकैक)
आ + ऐ = ऐ – (मत + एक = मतैक्य)
आ + ए = ऐ – (महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य)
अ + ओ = औ – (परम + ओजस्वी = परमोजस्वी)
अ + औ = औ – (वन + औषधि = वनौषधि)
आ + ओ = औ – (महा + ओजस्वी = महौजस्वी)
आ + औ = औ – (महा + औषधि = महौषधि)

(iv) यण स्वर संधि– नियम– जब इ या ई के आगे दोनों के अलावा कोई अन्य स्वर आये तो उनके मेल से 'य' बनता है। इसी प्रकार 'उ' या 'ऊ' के आगे कोई अन्य स्वर आये तो उनके मेल से 'व' बनता है और 'ऋ' के आगे कोई अन्य स्वर आये तो 'र' बनता है। यह रूपान्तर ही यण संधि कहलाता है। जैसे–

इ + अ = य – (यदि + अपि = यद्यपि)
इ + आ = या – (इति + आदि = इत्यादि)
इ + उ = यु – (अति + उत्तम = अत्युत्तम)
इ + ऊ = यू – (नि + ऊन = न्यून)
उ + अ = व – (अनु + अय = अन्वय)

उ + आ = वा – (सु + आगत = स्वागत)
उ + ओ = वो – (गुरु + ओदन = गुर्वोदन)
उ + औ = वौ – (गुरु + औदार्य = गुर्वौदार्य)
ऋ + अ = र – (पितृ + अनुमति = पित्रानुमति)
ऋ + आ = रा – (मातृ + आदेश = मात्रादेश)

(v) अयादि स्वर संधि– नियम है कि ए, ऐ, ओ, औ के आगे जब कोई भिन्न स्वर आता है तो क्रमशः 'अय्', 'आय', 'अव' और 'आव' हो जाता है। इस परिवर्तन को अयादि संधि कहते हैं। जैसे–

ए + अ = अय् – (ने + अन = नयन)
ऐ + अ = आय् – (दै + अन = दायन)
ओ + आ = आअव – (नै + अक = नायक)
औ + अ = आव – (पौ + अन = पावन)

2. व्यंजन संधि– जब किसी व्यंजन का मेल किसी स्वर या व्यंजन से होता है, तब उसमें परिवर्तन होकर विकार उत्पन्न होता है– इसी को व्यंजन संधि कहते हैं।

नियम (i) यदि क् , च् , ट्, त् , प् , इन व्यंजनों के आगे अनुनासिक वर्णों को छोड़कर कोई घोष (सब स्वर तथा ग, घ, ङ, ज, झ, ज, ड, ढ़, ण, द, ध, न, ब, म, भ, श, स, ष) वर्ण आये तो उनके स्थान में उसी वर्ण का तीसरा अक्षर (ग, ज, ड, द, ब) हो जाता है। जैसे–

दिक् + गज् = दिग्गज
वाक् + बल = वाग्बल
षट् + दर्शन = षडदर्शन
अच् + अंत = अजन्त
सत् + वाणी = सद्वाणी
तत् + रूप = तद्रूप

नियम (ii) यदि क, च, त, प के बाद 'न' या 'म' आये तो क, च, ट, त, प अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाते हैं। जैसे–

वाक् + मय = वाङ्मय
षट् + मार्ग = षण्मार्ग
जगत् + नाथ = जगन्नाथ
अप + मय = अम्मय
षट् + मास = षण्मास।

नियम (iii) यदि 'म' के बाद कोई स्पर्श वर्ण आय तो 'म्' का अनुस्वार या बाद वाले वर्ण का पंचम् वर्ण हो जाता है। जैसे–

सम + गम = संगम
किम् + वा = किंवा
किम् + चित = किंचित।

नियम (iv) यदि त– तद् के बाद ल रहे तो तद् ल में बदल जाते हैं और 'न' के बाद 'ल' रहे तो 'न' का आनुनासिक 'ल' हो जाता है। जैसे–

त् + ल = (उत् + लास = उल्लास)

न + ल = (महान् + लाभ = महाल्लाभ)

नियम (v) यदि वर्ग के अंतिम वर्ण को छोड़ शेष वर्ण के बाद 'ह' आये तो यह पूर्व वर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है और 'ह' के पूर्व वाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण। जैसे– उत् + हत = उद्धत; उत् + हार = उद्धार

नियम (vi) छ स्वर के बाद हो तो 'छ' के पहले 'च' जुड़ जाता है। जैसे–

परि + छेद = परिच्छेद। आ + छादन = आच्छादन।

नियम (vii) यदि किसी शब्द के प्रारम्भ में 'स' हो और उसके पहले 'अ' और 'आ' के अलावा कोई अन्य स्वर हो तो 'स' के स्थान पर ष हो जाता है। जैसे–

अभि + सेक = अभिषेक

वि + सम = विषम।

नियम (viii) यदि यौगिक शब्द प्रथम के अंत में 'न' हो तो उसका लोप हो जाता है। जैसे– राजन् + आज्ञा = राजाज्ञा

प्राणिन् + मात्र = प्राणिमात्र

3. विसर्ग संधि– स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार होता है इसे विसर्ग संधि कहते हैं।

नियम (i) यदि विसर्ग के आगे 'च', 'छ' हो तो विसर्ग का 'श' होगा और 'ट', 'ठ' हो तो विसर्ग का 'ष' होगा। इसी प्रकार 'त' या 'थ' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है। जैसे–

निः + चय = निश्चय

मनः + ताप = मनस्ताप

नियम (ii) यदि विसर्ग के पहले श, ष या स हो तो या तो विसर्ग जैसा का तैसा रहता है या उसके स्थान पर आगे आने वाला वर्ण हो जाता है। जैसे–

दुः + शासन = दुश्शासन

निः + संदेह = निस्संदेह

नियम (iii) यदि विसर्ग के आगे क, ख, प, फ, में से कोई वर्ण आये तो विसर्ग जैसा का तैसा रहता है। जैसे–

मनः + कामना = मनःकामना

अंतः + करण = अंतःकरण

नियम (iv) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो तो आगे घोष व्यंजन हो तो 'अ' और विसर्ग दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है। जैसे–

अधः + गति = अधोगति

वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

नियम (v) यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' को छोड़कर कोई और स्वर हो तो और आगे कोई घोष वर्ग हो तो उस विसर्ग के स्थान पर 'र' हो जाता है। जैसे–

निः + आशा = निराशा

नियम (iv) यदि त– तद् के बाद ल रहे तो तद् ल में बदल जाते हैं और 'न' के बाद 'ल' रहे तो 'न' का आनुनासिक 'ल' हो जाता है। जैसे–

त् + ल = (उत् + लास = उल्लास)

न + ल = (महान् + लाभ = महाल्लाभ)

नियम (v) यदि वर्ग के अंतिम वर्ण को छोड़ शेष वर्ण के बाद 'ह' आये तो यह पूर्व वर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है और 'ह' के पूर्व वाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण। जैसे– उत् + हत = उद्धत; उत् + हार = उद्धार

नियम (vi) छ स्वर के बाद हो तो 'छ' के पहले 'च' जुड़ जाता है। जैसे–

परि + छेद = परिच्छेद। आ + छादन = आच्छादन।

नियम (vii) यदि किसी शब्द के प्रारम्भ में 'स' हो और उसके पहले 'अ' और 'आ' के अलावा कोई अन्य स्वर हो तो 'स' के स्थान पर ष हो जाता है। जैसे–

अभि + सेक = अभिषेक

वि + सम = विषम।

नियम (viii) यदि यौगिक शब्द प्रथम के अंत में 'न' हो तो उसका लोप हो जाता है। जैसे– राजन् + आज्ञा = राजाज्ञा

प्राणिन् + मात्र = प्राणिमात्र

3. विसर्ग संधि– स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार होता है इसे विसर्ग संधि कहते हैं।

नियम (i) यदि विसर्ग के आगे 'च', 'छ' हो तो विसर्ग का 'श' होगा और 'ट', 'ठ' हो तो विसर्ग का 'ष' होगा। इसी प्रकार 'त' या 'थ' हो तो विसर्ग का 'स् ' हो जाता है। जैसे–

निः + चय = निश्चय

मनः + ताप = मनस्ताप

नियम (ii) यदि विसर्ग के पहले श, ष या स हो तो या तो विसर्ग जैसा का तैसा रहता है या उसके स्थान पर आगे आने वाला वर्ण हो जाता है। जैसे–

दुः + शासन= दुश्शासन

निः + संदेह = निस्संदेह

नियम (iii) यदि विसर्ग के आगे क, ख, प, फ, में से कोई वर्ण आये तो विसर्ग जैसा का तैसा रहता है। जैसे–

मनः + कामना = मनःकामना

अंतः + करण = अंतःकरण

नियम (iv) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो तो आगे घोष व्यंजन हो तो 'अ' और विसर्ग दोनों के स्थान पर 'ओ' हो जाता है। जैसे–

अधः + गति = अधोगति

वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध

नियम (v) यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' को छोड़कर कोई और स्वर हो तो और आगे कोई घोष वर्ग हो तो उस विसर्ग के स्थान पर 'र' हो जाता है। जैसे–

निः + आशा = निराशा

नि + गुण = निर्गुण

नियम (vi) यदि विसर्ग के आगे 'र' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उसके पहले स्वर को दीर्घ कर दिया जाता है। जैसे–

नि + रस = नीरस, नि + रोग = निरोग।

नियम (vii) यदि विसर्ग के पहले 'अ' हो और आगे 'अ' को छोड़कर कोई और स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उन स्वरों में संधि नहीं होती। जैसे–

अतः + एव = अतएव।

प्रश्न–2. संधि और समास में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिये।

उत्तर– संधि और समास में निम्नलिखित अन्तर हैं–

(i) संधि में दो वर्णों के मेल से शब्द का नया रूप बनता है और समास में दो पदों का योग होता है।

(ii) संधि में दो वर्णों के मेल से विकास भी उत्पन्न हो सकता है, जबकि समास में केवल दो पदों के बीच का संयोजक शब्द ही लुप्त होता है।

(iii) संधि को तोड़ने से उसका 'विच्छेद' होता है और समास का 'विग्रह' होता है। जैसे– पीताम्बर में दो पद हैं, पीत और अम्बर इसका संधि विच्छेद होने पर पीत + अम्बर लिखा जायेगा और समास विग्रह होने पर पीत है अम्बर जिसका, होगा।

संधि और समास का अन्तर बतलाते हुये 'विकार' शब्द का प्रयोग भी हुआ है इसे समझ लेना भी आवश्यक है– परिवर्तन करने से शब्दों में अन्तर आता है और इस अन्तर के आधार पर शब्दों के दो भेद हो जाते हैं– 1. विकारी शब्द, 2. अविकारी शब्द।

'विकारी' शब्द वे हैं जिनमें लिंग, वचन, कारक आदि के अनुसार अन्तर अथवा परिवर्तन होता है, जैसे– 'लड़का' शब्द परिवर्तित होकर 'लड़के' और 'लड़कों' होगा तथा विकारी कहलायेगा और अविकारी शब्द वह है जिसमें किसी भी दशा में परिवर्तन नहीं होता, जैसे– आजकल, जब तथा एवं इत्यादि।

प्रश्न–3. संधि विच्छेद करते हुये संधि का नाम लिखिये।

महेश, वनौषधि, अन्तःकरण, अतएव, विस्तार, नयन, स्वागत, निराशा, परिच्छेद, देवर्षि, यद्यपि, वाचनालय।

उत्तर–	महेश	महा+ईश	गुण स्वर संधि
	वनौषधि	वन+औषधि	वृद्धि स्वर संधि
	अन्तःकरण	अन्तः+करण	विसर्ग संधि
	अतएव	अतः+एव	विसर्ग संधि
	विस्तार	विः+तार	विसर्ग संधि
	नयन	ने+अन	अयादि स्वर संधि
	स्वागत	सु+आगत	यण स्वर संधि
	निराशा	निः+आशा	विसर्ग संधि
	परिच्छेद	परि+छेद	व्यंजन संधि।
	देवर्षि	देव+ऋषि	गुण स्वर संधि
	यद्यपि	यदि+अपि	यण स्वर संधि
	वाचनालय	वाचन+आलय	दीर्घ स्वर संधि।

(3)
बीज-शब्द

(i) धर्म

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'धर्म' शब्द की व्युत्पत्ति बताइए।

अथवा

'धर्म' शब्द व्युत्पत्ति मूलक व्याकरण कीजिए।

अथवा

व्याकरण के आधार पर 'धर्म' शब्द की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– 'धर्म' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ– 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से निष्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है– धारण करना। शब्दकोष 'शब्द–कल्पद्रुम' में 'धर्म' पद की व्याख्या दी गई है– 'धरति लोकान' इति धर्मः। अर्थात् जो सभी भुवनों को धारण करके सँभालने वाला है, वह धर्म है।

इसी प्रकार वामन आप्टे के शब्दकोष में भी 'ध्रियते लोकोऽनेन', 'धरित लोकं वा' कहकर धर्म को लोक को धारण करने वाला कहा गया है। यहाँ 'धर्म' शब्द की 'धृ' धातु (क्रिया) का अर्थ मात्र लौकिक दैहिक–क्रिया तक सीमित नहीं है, इसका बहुत व्यापक अर्थ है।

प्रश्न–2. 'धर्म' की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'धर्म' पद से आप क्या आशय समझते हैं? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

'धर्म' मत–पंथ से किस प्रकार एक पृथक् अवधारणा है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'धर्म' के स्वरूप पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर– **'धर्म' पद से आशय**– 'धर्म' शब्द की रचना 'धृ' धातु से हुई है। इसका अर्थ है– 'धारणा' करना। 'धर्म' भारतीय संस्कृति और दर्शन की एक विशिष्ट संकल्पना है। इसके अन्तर्गत दया, क्षमा, करुणा, परदुःख–कातरता, प्रेम, सत्य, तप, त्याग, न्याय, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, शौच (पवित्रता), संतोष, स्वाध्याय आदि मानवीय मूल्यों को एक व्यक्ति के द्वारा अपने जीवन में धारण करना तथा तद्नुसार लौकिक–जीवन में आचरण करना ही धर्म है।

'धर्म' की मुक्त संकल्पना के अनुसार, मत या पंथ को धर्म का पर्यायवाची नहीं माना जा सकता है। इस दृष्टि से अंग्रेजी भाषा का 'रिलीजन' शब्द का अनुवाद भी 'धर्म' नहीं हो सकता है।

'धर्म' का स्वरूप– 'धर्म' शब्द में निहित संस्कृत की 'धृ' धातु (क्रिया) दो अर्थों में प्रयुक्त होती है– एक 'धारण करना' और दूसरा है 'धारणा'। समाज के सापेक्ष मानवीय क्रियाकलापों सम्बन्धों, आचार–विचारों, व्यवहारों को धारण करना– धर्म का पहला चरण है। समष्टि के प्रति व्यक्ति का 'उत्तरदायित्व–बोध' यदि धर्म की पहली अवस्था है तो समष्टि में व्यष्टि को तिरोहित करके एक अखण्ड अनुभूति करना उसकी दूसरी और अन्तिम अवस्था है, जिसे 'धारणा' के नाम से जाना जाता है।

(ङ)
बीज-शब्द

(i) धर्म

लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'धर्म' शब्द की व्युत्पत्ति बताइए।

अथवा

'धर्म' शब्द व्युत्पत्ति मूलक व्याकरण कीजिए।

अथवा

व्याकरण के आधार पर 'धर्म' शब्द की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– 'धर्म' शब्द का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ– 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से निष्पन्न हुआ है। इसका अर्थ है– धारण करना। शब्दकोष 'शब्द–कल्पद्रुम' में 'धर्म' पद की व्याख्या दी गई है– 'धरति लोकान' इति धर्मः। अर्थात् जो सभी भुवनों को धारण करके सँभालने वाला है, वह धर्म है।

इसी प्रकार वामन आप्टे के शब्दकोष में भी 'ध्रियते लोकोऽनेन', 'धरित लोकं वा' कहकर धर्म को लोक को धारण करने वाला कहा गया है। यहाँ 'धर्म' शब्द की 'धृ' धातु (क्रिया) का अर्थ मात्र लौकिक दैहिक–क्रिया तक सीमित नहीं है, इसका बहुत व्यापक अर्थ है।

प्रश्न–2. 'धर्म' की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'धर्म' पद से आप क्या आशय समझते हैं? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

'धर्म' मत–पंथ से किस प्रकार एक पृथक् अवधारणा है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'धर्म' के स्वरूप पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर– **'धर्म' पद से आशय**– 'धर्म' शब्द की रचना 'धृ' धातु से हुई है। इसका अर्थ है– 'धारणा' करना। 'धर्म' भारतीय संस्कृति और दर्शन की एक विशिष्ट संकल्पना है। इसके अन्तर्गत दया, क्षमा, करुणा, परदुःख–कातरता, प्रेम, सत्य, तप, त्याग, न्याय, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, शौच (पवित्रता), संतोष, स्वाध्याय आदि मानवीय मूल्यों को एक व्यक्ति के द्वारा अपने जीवन में धारण करना तथा तद्नुसार लौकिक–जीवन में आचरण करना ही धर्म है।

'धर्म' की मुक्त संकल्पना के अनुसार, मत या पंथ को धर्म का पर्यायवाची नहीं माना जा सकता है। इस दृष्टि से अंग्रेजी भाषा का 'रिलीजन' शब्द का अनुवाद भी 'धर्म' नहीं हो सकता है।

'धर्म' का स्वरूप– 'धर्म' शब्द में निहित संस्कृत की 'धृ' धातु (क्रिया) दो अर्थों में प्रयुक्त होती है– एक 'धारण करना' और दूसरा है 'धारणा'। समाज के सापेक्ष मानवीय क्रियाकलापों सम्बन्धों, आचार–विचारों, व्यवहारों को धारण करना– धर्म का पहला चरण है। समष्टि के प्रति व्यक्ति का 'उत्तरदायित्व–बोध' यदि धर्म की पहली अवस्था है तो समष्टि में व्यष्टि को तिरोहित करके एक अखण्ड अनुभूति करना उसकी दूसरी और अन्तिम अवस्था है, जिसे 'धारणा' के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में 'धर्म' की अवधारणा बहुत व्यापक है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि 'धर्म' वह तत्त्व है, जो 'व्यक्ति' को मनुष्य बनाता है। भारतीय संस्कृति में पुरुष के लिए पुरुषार्थों को स्वीकार किया गया है। इनमें पहला 'पुरुषार्थ' 'धर्म' ही है, शेष तीन पुरुषार्थ– अर्थ, काम (अर्थात् भोग) और मोक्ष (अर्थात् जन्म–मरण के बंधन से छुटकारा) है। ये चार पुरुषार्थ मानव–जीवन की चार अनिवार्यताएँ हैं अर्थात् मानव जीवन की सफलता इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति पर ही निर्भर रहती है।

उक्त चार पुरुषार्थों की व्यवस्था में पहले पुरुषार्थ के रूप में 'धर्म' का होना इस बात को सिद्ध करता है कि मानव–जीवन का आधार 'धर्म' ही है। गौतम ऋषि ने 'धर्म' को परिभाषित करते हुए लिखा है–

'यतो अभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः सधर्मः।'

अर्थात् जिस कार्य से व्यक्ति का अभ्युदय अर्थात् जीवन उन्नत हो और श्रेयस की सिद्धि अर्थात् कल्याण की प्राप्ति हो, वही धर्म है।

अतः हम कह सकते हैं कि 'धर्म' अपने आप में अधिष्ठान है और समावेशक है, जिसमें आस्तिकों और नास्तिकों, सबके लिए स्थान है, क्योंकि मनुष्य–समाज की सुव्यवस्था हेतु आस्तिक–नास्तिक सब लोग उत्तरदायी होते हैं।

प्रश्न–3. मानव–मूल्य क्या है? क्या इन्हें धर्म का अंग माना जा सकता है?– इस सम्बन्ध में अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सिद्ध कीजिए कि 'मानवीय गुणों या मूल्यों का स्वीकार भाव ही व्यक्ति को धर्म से संयुक्त करता है।'

अथवा

'धर्म के लक्षणों का आधार मानवता ही है।' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर– 'मानव–मूल्य'– सामान्यतः दया, क्षमा, करुणा, परदुःख, कातरता, प्रेम, सत्य, तप, त्याग, न्याय, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, शौच, संतोष, स्वाध्याय आदि को मानव–मूल्यों के अन्तर्गत स्वीकार किया गया है। इन्हें ही मानवीय गुण भी कहा जाता है। इन गुणों के अनुसार मनुष्य के द्वारा अपने जीवन में आचरण किया जाना ही धर्म कहलाता है। इससे स्पष्ट है कि इन्हीं मानवीय गुणों या मूल्यों का स्वीकार–भाव ही व्यक्ति को धर्म से जोड़ता है और तदनुसार उसके द्वारा किया जाने वाला आचरण 'धर्माचरण' कहलाता है।

'मनुस्मृति' में मानव–धर्म के दस लक्षणों का वर्णन मिलता है–

'धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः,
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो, दशकं धर्मलक्षणम्।'

अर्थात् धृति (धैर्य) क्षमा, यम (संयम), अस्तेय (चोरी ना करना), शौच (अन्तरंग और बाह्य पवित्रता), इन्द्रिय–निग्रह(एकादश इन्द्रियों को वश में रखना) धी (बुद्धि को श्रेष्ठ कार्यों में लगाना), विद्या (ज्ञान प्राप्त करना), सत्य (मन, वचन, कर्म से सत्य का पालन करना) और अक्रोध (क्रोध न करना)– ये दस विशेषताएँ हैं, जिनका पालन मनुष्य को अपने संसारी जीवन में करना चाहिए। इन गुणों या मूल्यों को अपने जीवन में व्यवहृत करने वाला मनुष्य ही सदाचारी मनुष्य कहलायेगा।

याज्ञवल्क्य–स्मृति में धर्म के नौ लक्षण बताए गए हैं–

'अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
दानं दमो दया शान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम्।।'

अर्थात् अहिंसा (मन, वाणी, कर्म के द्वारा किसी को पीड़ा न पहुँचाना), अस्तेय (चोरी न करना) शौच (अन्तरंग और बहिरंग की पवित्रता), इन्द्रिय–निग्रह (इन्द्रियों को वश में रखना), दान दस (संयम),दया एवं शान्ति– धर्म के नौ लक्षण याज्ञवल्क्य–स्मृति ग्रंथ में बनाए गए हैं।

उपर्युक्त धर्म के लक्षणों से स्पष्ट है कि इन धर्म–लक्षणों का मूल–आधार मानवता ही है। धर्म मनुष्य को व्यक्तिशः और समूहशः लौकिक और पारलौकिक उन्नति की ओर ले जाने वाला विशिष्ट मानवीय–गुणों का आधार है और ये मानवीय–गुण ही मानव–मूल्य हैं, क्योंकि इन मूल्यों के पालन करने के स्वरूप के आधार पर ही समाज में मनुष्य के 'व्यक्तित्व' का आकलन होता है और इसी आधार पर वह प्रशंसा या निन्दा का पात्र बनता है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि के सचेतन–अचेतन में जो समान धर्म है, उसके साथ ही मानव में विशेष प्रकार का धर्म अभिव्यक्त हुआ है। मानव में सृष्टि के बहिरंगों पर आधारित लौकिक–धर्म तथा अन्तःरंगों पर आधारित अलौकिक–धर्म अभिव्यक्त हुआ है। यही कारण है कि खाना–पीना, सोना–जागना, डरना–भागना आदि क्रियाएँ पशुओं और मानवों की समान प्रकृति को प्रकट करती हैं, किन्तु 'धर्म की भावना' ही मनुष्य को मानवता का स्वरूप प्रदान करती है। यह मानवता ही धर्म की भावना और मानव–मूल्य है। यह धर्म–भावना ही मनुष्य को पशु से पृथक विशिष्ट अस्तित्व प्रदान करती है। इसीलिए धर्म–हीन मनुष्य को पशु के समान कहा गया है, यह श्लोक दृष्टव्य है–

'आहारनिद्रा भय मैथुनं च, खामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।
धर्मो हि तेषामधिकोविशेषः, धर्मेण हीना पशुभिः समानाः।।'

(iii) अद्वैत

<u>लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-</u>

प्रश्न–1. अद्वैत सिद्धान्त में 'अद्वैत' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'अद्वैत' शब्द का शाब्दिक अर्थ बताते हुए अद्वैत–सिद्धान्त के अनुसार 'अद्वैत' शब्द की व्याख्या कीजिए।

अथवा

'अद्वैत' से आप क्या समझते हैं? अपने शब्दों में समझाकर लिखिए।

उत्तर– 'अद्वैत' शब्द का शाब्दिक अर्थ– 'द्वैत' अर्थात् दो का होना। 'अद्वैतम्' अर्थात् न द्वैतम् इति अद्वैतम् अर्थात् द्वैत (दो) का न होना ही 'अद्वैत' कहलाता है। यही इसका शाब्दिक अर्थ है।

अद्वैत–सिद्धान्त के अनुसार 'अद्वैत' की व्याख्या– अद्वैत वेदान्त, वेदान्त की एक शाखा है। 'अद्वैत–वेदान्त' यह भारत में उपजी हुई अनेक विचारधाराओं में से एक है, इनमें आदिशंकराचार्य की विचारधारा प्रमुख है। भारत में परब्रह्म के स्वरूप के बारे में अनेक विचारधाराएँ हैं इनमें द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, केवलाद्वैत, द्वैताद्वैत, शुद्धाद्वैत आदि अनेक

विचारधाराएँ हैं, जिस आचार्य ने (ब्रह्म) को जिस रूप में देखा उसका वर्णन किया। इतनी विचारधाराएँ होने पर भी सभी यह मानते हैं कि भगवान ही इस सृष्टि का नियंता है। अद्वैत विचारधारा के संस्थापक शंकराचार्य हैं। उनके मत को शांकराद्वैत भी कहा जाता है। शंकराचार्य मानते हैं कि संसार में ब्रह्म ही सत्य है, जगत् मिथ्या है, जीव और ब्रह्म अलग-अलग नहीं हैं। जीव केवल अज्ञान के कारण ही ब्रह्म को नहीं जान पाता है, जबकि ब्रह्म तो उसके ही अन्दर विराजमान है। उन्होंने अपने ब्रह्मसूत्र में 'अहं ब्रह्मास्मि' ऐसा कहकर अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। अद्वैत सिद्धान्त के अनुसार परब्रह्म समस्त सृष्टि में व्याप्त है। उदाहरण के लिए हमारे पैर में जब काँटा चुभता है तब आँखों से पानी आता है और हाथ काँटा निकालने के लिए आगे आ जाता है, यह अद्वैत का एक उत्तम उदाहरण है।

प्रश्न–2. 'अहं ब्रह्मास्मि' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

अथवा

अद्वैत–सिद्धान्त के 'अहं ब्रह्मास्मि' महावाक्य की व्याख्या करके इसके आशय को समझाकर लिखिए।

उत्तर– अद्वैत–दर्शन का प्रारंभ गौड़पादाचार्य की 215 में कारिकाओं (श्लोकों) से माना जाता है। गौड़पादाचार्य के शिष्य गोविन्दाचार्य थे और गोविन्दाचार्य के शिष्य शंकराचार्य थे। शंकराचार्य ने गौड़पादाचार्य की इन्हीं कारिकाओं (श्लोकों) के ऊपर भाष्य अर्थात् व्याख्या लिखी। शंकराचार्य का यही भाष्य अद्वैत–दर्शन के रूप में भारतवर्ष में प्रसिद्ध है।

शंकराचार्य के अनुसार 'जीव' और 'ब्रह्म' अलग–अलग नहीं हैं, ये दोनों व्यावहारिक रूप से भले ही अलग–अलग दिखाई देते हैं, लेकिन पारमार्थिक रूप से एक ही हैं। इसी सत्य को उन्होंने 'ब्रह्मसूत्र' के अपने भाष्य में 'अहं ब्रह्मास्मि' अर्थात् (मैं ब्रह्म हूँ) कहकर अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है।

'अहं ब्रह्मास्मि'– इस महावाक्य में आध्यात्मिक–शास्त्रों का निष्कर्ष समाहित है। इस महावाक्य में किसी विचार मात्र का केवल प्रतिपादन ही नहीं है, अपितु यह तो जीवन के रहस्य को जानने के बाद किया गया सत्य का उद्घोष है। हम अपने व्यावहारिक जीवन में सुख–दुख, हानि–लाभ, दिन–रात, धूप–छाँव को अलग–अलग देखते हैं, लेकिन वस्तुतः ये द्वन्द अलग–अलग न होकर एक ही हैं। व्यावहारिक आधार पर पशु और मनुष्य में भेद है, लेकिन व्यापक जीवन–व्यवस्था में कोई किसी से पृथक् नहीं है।

शंकराचार्य के अनुसार इस सृष्टि में अस्तित्व केवल परमात्मा का ही है, अन्य किसी का नहीं है। उदाहरण के लिए आकाश का एक अंश या भाग किसी पात्र में समाहित हो जाता है और उस पात्र के टूट जाने पर पात्र में समाहित आकाश का अंश फिर से पूर्ण आकाश में विलीन हो जाता है। यही स्थिति जीव और ब्रह्म की है। जीवात्मा अस्थायी रूप से ब्रह्म से अलग होता है और जीवन–मरण के बन्धन से मुक्त होने पर मोक्षावस्था में वह जीवात्मा ब्रह्म में एकाकार हो जाती है। इसीलिए शंकाराचार्य 'अहं ब्रह्मास्मि' महावाक्य में 'मैं ब्रह्म हूँ' कहकर 'जीव' और 'ब्रह्म' की पारमार्थिक रूप से एकात्मकता को अद्वैत–सिद्धान्त के द्वारा प्रतिपादित करते हैं।

शंकराचार्य के अद्वैत–दर्शन का सार इस श्लोक में दृष्टव्य है–

'ब्रह्म–सत्यंजगन्मिथ्या। जीवो ब्रह्मैव नापरः।।'

अर्थात् 'ब्रह्म' ही सत्य है। पारमार्थिक रूप से केवल 'ब्रह्म' की ही सत्ता है। यह जगत् मिथ्या है, नश्वर है और क्षणभंगुर है। 'जीव' तो वस्तुतः 'ब्रह्म' ही है अर्थात् विराट 'ब्रह्म' का ही एक अंश है।

प्रश्न–3. शंकराचार्य ने अद्वैत सिद्धान्त में कौनसे मत को आधार बनाया? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

शंकराचार्य ने किस आध्यात्मिक मत के आधार पर 'अद्वैत सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया है? संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर– शंकराचार्य जी गोविन्दाचार्य के शिष्य थे और गोविन्दाचार्य जी गौड़पादाचार्य जी के शिष्य थे।

गौड़पादाचार्य जी ने बौद्ध महायान के 'शून्यता–दर्शन' को अपने अद्वैत–दर्शन का आधार बनाया। इस 'शून्यता–दर्शन' के अनुसार यह प्रतिपादित किया गया है कि मनुष्य का मस्तिष्क 'जाग्रत–अवस्था' या 'स्वप्न–अवस्था' में माया में ही विचरण करता रहता है। 'द्वैत' की स्थिति तो है, ही नहीं। इस प्रकार 'अद्वैत' ही परम तत्व है।

गौड़पादाचार्य ने उक्त बौद्ध–धर्म के महायान–सम्प्रदाय के इस शून्यता–दर्शन के आधार पर 215 कारिकाएँ (श्लोकं) लिखकर 'अद्वैत–दर्शन' का प्रारंभ किया। शंकाराचार्य जी ने भी इसी 'शून्यता–दर्शन' के सिद्धान्त को मानते हुए इसी को आधार बनाकर अपने अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित अद्वैत सिद्धान्त को 'शांकराद्वैत–सिद्धान्त' भी कहा जाता है।

प्रश्न–4. 'अद्वैत सिद्धान्त' की प्रमुख स्थापनाएँ क्या हैं? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

'अद्वैत सिद्धान्त' की प्रमुख स्थापनाओं पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

अथवा

'अद्वैत सिद्धान्त' के अनुसार 'ब्रह्म' के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– भारतीय दर्शनों में अद्वैत–दर्शन सबसे अधिक महत्वपूर्ण दर्शन है क्योंकि यह भारतीय–संस्कृति–सभ्यता के लिए आज भी सर्वथा उपयोगी एवं व्यावहारिक है।

आदिगुरु शंकराचार्य ने अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन करके भारतवर्ष की संस्कृति की एकात्मता को पुष्ट करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। शंकराचार्य के अद्वैत सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ निम्नलिखित हैं–

(1) **'ब्रह्म' सत्य है–** शंकराचार्य के अद्वैत–दर्शन के अनुसार 'ब्रह्म' ही परम सत्य है, यह ब्रह्म–अनादि है, अनन्त है, सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है, इसीलिए देशकाल से परे तथा अद्वैत हैं। यह 'ब्रह्म' तत्व इतना विस्तृत है कि दूसरे तत्व के लिए स्थान ही नहीं है। कहा गया है– 'बृहत्तमत्वाद्–ब्रह्म'। न तु तद् द्वितीयं अस्ति। तथा 'नेह नानास्ति किंचन'। अर्थात् 'ब्रह्म' जैसा कोई दूसरा नहीं है, क्योंकि यहाँ अनेकता नहीं है।

(2) **ब्रह्म के रूप–** शंकराचार्य के अनुसार, ब्रह्म के दो रूप दो दृष्टिकोण के भेद के कारण हैं। सत्य तो निर्गुण निराकार ब्रह्म ही हैं। निर्गुण ब्रह्म ही पारमार्थिक सत्ता है। यही पारमार्थिक निर्गुण ब्रह्म सत्ता व्यावहारिक दृष्टि से साकार रूप में प्रतीत होती है। इस प्रकार निर्गुण ब्रह्म अपरिभाषेय, वर्णनातीत, अचिन्त्य एवं एकमात्र सत्य है।

अर्थात् 'ब्रह्म' ही सत्य है। पारमार्थिक रूप से केवल 'ब्रह्म' की ही सत्ता है। यह जगत् मिथ्या है, नश्वर है और क्षणभंगुर है। 'जीव' तो वस्तुतः 'ब्रह्म' ही है अर्थात् विराट 'ब्रह्म' का ही एक अंश है।

प्रश्न–3. शंकराचार्य ने अद्वैत सिद्धान्त में कौनसे मत को आधार बनाया? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

शंकराचार्य ने किस आध्यात्मिक मत के आधार पर 'अद्वैत सिद्धान्त' का प्रतिपादन किया है? संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर– शंकराचार्य जी गोविन्दाचार्य के शिष्य थे और गोविन्दाचार्य जी गौड़पादाचार्य जी के शिष्य थे।

गौड़पादाचार्य जी ने बौद्ध महायान के 'शून्यता–दर्शन' को अपने अद्वैत–दर्शन का आधार बनाया। इस 'शून्यता–दर्शन' के अनुसार यह प्रतिपादित किया गया है कि मनुष्य का मस्तिष्क 'जाग्रत–अवस्था' या 'स्वप्न–अवस्था' में माया में ही विचरण करता रहता है। 'द्वैत' की स्थिति तो है, ही नहीं। इस प्रकार 'अद्वैत' ही परम तत्व है।

गौड़पादाचार्य ने उक्त बौद्ध–धर्म के महायान–सम्प्रदाय के इस शून्यता–दर्शन के आधार पर 215 कारिकाएँ (श्लोक) लिखकर 'अद्वैत–दर्शन' का प्रारंभ किया। शंकाराचार्य जी ने भी इसी 'शून्यता–दर्शन' के सिद्धान्त को मानते हुए इसी को आधार बनाकर अपने अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

शंकराचार्य जी द्वारा स्थापित अद्वैत सिद्धान्त को 'शांकराद्वैत–सिद्धान्त' भी कहा जाता है।

प्रश्न–4. 'अद्वैत सिद्धान्त' की प्रमुख स्थापनाएँ क्या हैं? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

'अद्वैत सिद्धान्त' की प्रमुख स्थापनाओं पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

अथवा

'अद्वैत सिद्धान्त' के अनुसार 'ब्रह्म' के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– भारतीय दर्शनों में अद्वैत–दर्शन सबसे अधिक महत्वपूर्ण दर्शन है क्योंकि यह भारतीय–संस्कृति–सभ्यता के लिए आज भी सर्वथा उपयोगी एवं व्यावहारिक है।

आदिगुरु शंकराचार्य ने अद्वैत सिद्धान्त का प्रतिपादन करके भारतवर्ष की संस्कृति की एकात्मता को पुष्ट करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। शंकराचार्य के अद्वैत सिद्धान्त की प्रमुख स्थापनाएँ निम्नलिखित हैं–

(1) **'ब्रह्म' सत्य है–** शंकराचार्य के अद्वैत–दर्शन के अनुसार 'ब्रह्म' ही परम सत्य है, यह ब्रह्म–अनादि है, अनन्त है, सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिमान है, इसीलिए देशकाल से परे तथा अद्वैत हैं। यह 'ब्रह्म' तत्व इतना विस्तृत है कि दूसरे तत्व के लिए स्थान ही नहीं है। कहा गया है– 'बृहत्तमत्वाद्–ब्रह्म'। न तु तद् द्वितीयं अस्ति। तथा 'नेह नानास्ति किंचन'। अर्थात् 'ब्रह्म' जैसा कोई दूसरा नहीं है, क्योंकि यहाँ अनेकता नहीं है।

(2) **ब्रह्म के रूप–** शंकराचार्य के अनुसार, ब्रह्म के दो रूप दो दृष्टिकोण के भेद के कारण हैं। सत्य तो निर्गुण निराकार ब्रह्म ही हैं। निर्गुण ब्रह्म ही पारमार्थिक सत्ता है। यही पारमार्थिक निर्गुण ब्रह्म सत्ता व्यावहारिक दृष्टि से साकार रूप में प्रतीत होती है। इस प्रकार निर्गुण ब्रह्म अपरिभाषेय, वर्णनातीत, अचिन्त्य एवं एकमात्र सत्य है।

(3) ब्रह्म का स्वरूप– 'ब्रह्म' का स्वरूप लक्षण 'सच्चिदानंद' है। सच्चिदानन्द के तीन रूप– (1) सत्, (2) चित्, (3) आनन्द। –ये तीनों अलग–अलग न होकर एक ही हैं। शंकराचार्य के अनुसार निर्गुण ब्रह्म ही परम सत् है और यह परम–सत् 'त्रिकालाबाध्यम्' है अर्थात् तीनों कालों में अबाधित है और अनश्वर है। तीनों कालों में अबाधित होने के कारण ब्रह्म को 'सत्यस्यसत्यम्' अर्थात् सत्य का भी सत्य कहा गया है। उपनिषदों में ब्रह्म को 'प्रज्ञानधन' तथा 'चिदात्यकम्' भी कहा गया है।

शंकरार्चार्य जी के अनुसार 'ब्रह्म' की सत्ता 'सजातीय–विजातीय–स्वगतभेद–रहितम्' अर्थात् सभी प्रकार के भेदों से परे है। वे ब्रह्म को अज्ञेय, अपरिभाषेय, वर्णनातीत एवं अनिर्वचनीय मानते हैं।

(4) ब्रह्म की अनुभूति– शंकराचार्य के अनुसार 'ब्रह्म' को इन्द्रियों बुद्धि वाणी या तर्क के द्वारा नहीं जाना जा सकता है। ब्रह्म को अपरोक्षानुभूति अर्थात् 'आत्मज्ञान' के द्वारा ही जाना जा सकता है। वस्तुतः 'ब्रह्मज्ञान' अनुभवगम्य है।

(5) ब्रह्म और जीव में अद्वैत–भाव– शंकराचार्य ने 'अहं ब्रह्मास्मि' अर्थात् 'मैं ब्रह्म हूँ' तथा 'तत्वमसि' अर्थात् 'वह ब्रह्म तू ही है'। कहकर आत्मा और ब्रह्म की एकरूपता का प्रतिपादन करके अद्वैत सिद्धान्त की प्रतिस्थापना की है।

(6) ईश्वर– सगुण ब्रह्म का लक्षण तटस्थ है। भक्त इसे 'ईश्वर' के नाम से पुकारते हैं। यही जगत का उत्पादक पालक और संहारक है। ईश्वर जगत में है और जगत से परे भी है। वह विश्व में है और विश्वातीत है। ईश्वर ही पूर्ण है।

(7) जीव– जीव अपूर्ण है, ब्रह्म का अंश होने से ब्रह्म–रूप भी है। शंकराचार्य के अनुसार 'जीव' और 'ब्रह्म' अलग–अलग नहीं, एक ही हैं। अज्ञान के कारण जीव 'ब्रह्म' को नहीं जान पाता है। फलतः वह जन्म–मरण के बंधन में बँधा रहता है। आत्म–ज्ञान होने पर ही वह इस बंधन से छुटकारा पाता है और मोक्ष पाकर ब्रह्म–रूप में एकाकार हो जाता है।

(8) जगत्– 'जगत्' जड़ है मिथ्या नश्वर है और क्षणभंगुर है। ईश्वर ही जगत् का उत्पादक है, पालक है और संहारक है।

इस प्रकार शंकराचार्य ने ब्रह्म जीव, ईश्वर जगत् आदि के विषय में अपने अद्वैत–सिद्धान्त के अन्तर्गत महत्वपूर्ण स्थापनाएँ की हैं। इन्हीं के आधार पर उन्होंने अद्वैत–सिद्धान्त को प्रतिष्ठित किया है।

(iii) भाषा

<u>लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-</u>

प्रश्न–1. बुन्देली, व्रज एवं बघेली के दस–दस शब्द लिखिए।

उत्तर– (क) बुन्देली के दस शब्द– (1) पथरा, (2) आंखन, (3) निबौरी, (4) चांवर, (5) पातर, (6) मूंछन, (7) बातन, (8) स्वांग, (9) लपसी, (10) कोतबाल।

(ख) व्रज–भाषा के दस शब्द– (1) मैया, (2) लैहो, (3) जैहो, (4) धरनि, (5) पर्यो, (6) आतिसबाजी, (7) परमात, (8) भूखी, (9) दरसन, (10) छतरिया, (11) बरसात।

(ग) बघेली–भाषा के दस शब्द– (1) टेढ़ा, (2) जानय, (3) महुआ, (4) पाहरे, (5) निकालिस, (6) कोमलिया, (7) फगुआ, (8) कतरंय, (9) सुगा, (10) नीक, (11) खेलय, (12) रघुवीरा।

प्रश्न–2. खड़ी–बोली में रचना करने वाले साहित्यकारों के नाम लिखिए।

उत्तर– (1) श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', (2) श्री मैथिलीशरण गुप्त, (3) श्री रामधारी सिंह दिनकर, (4) श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी, (5) खड़ी बोली के प्रथम कवि महात्मा गंगादास, (6) श्री रामचन्द्र शुक्ल, (7) श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, (8) श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी, (9) श्री अयोध्या प्रसाद खत्री, (10) श्री जयशंकर प्रसाद, (11) श्री अमीर खुसरो।

प्रश्न–3. किसी एक विशिष्ट भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों की सूची बनाइए।

उत्तर– (क) कानून की भाषा के शब्द– उच्चतम न्यायालय, मुकदमा, पैरवी, अर्जी, अदालत, मुजरिम, फरियादी, गवाही, जमानत आदि।

(ख) खेल की भाषा के शब्द– खिलाड़ी, कोच, टीम, गोल, बॉल, बैट, फील्ड, बल्ला, आउट, इनडोर, आउटडोर, नॉट आउट, मुकाबला आदि।

(ग) सर्राफों की भाषा के शब्द– तोला, जेवरात, मासा, रत्ती, गहने, टाँका, ग्राहक, रकम, किश्त, टका, छूट, भाव आदि।

प्रश्न–4. राजभाषा–हिन्दी को संविधान सभा ने कब स्वीकृत किया?

अथवा

भारत सरकार की कौनसी राजभाषा है? इसे भारतीय संविधान–सभा द्वारा कब राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया है?

उत्तर– 'हिन्दी' भारत सरकार की राजभाषा है। भारतीय–संविधान–सभा द्वारा 14 सितम्बर सन् 1949 को हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया गया है।

प्रश्न–5. हाँ/नहीं में उत्तर दीजिए–

(क) मानकीकरण समाज सापेक्ष है। उत्तर– हाँ

(ख) मानकीकरण जन एवं तंत्र द्वारा मान्य होता है। उत्तर– हाँ

(ग) मानकीकरण भाषा के साथ सतत् चलने वाली प्रक्रिया नहीं है। उत्तर– नहीं

(घ) मानकीकरण में आत्मसातीकरण की प्रवृत्ति नहीं होती। उत्तर– नहीं

प्रश्न–6. राष्ट्र–भाषा किसे कहते हैं?

अथवा

'राष्ट्र–भाषा' के स्वरूप पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर– राष्ट्र–भाषा का स्वरूप– जो भाषा किसी राष्ट्र के भिन्न–भिन्न भाषा–भाषियों के पारस्परिक विचार–विनियम का सशक्त माध्यम बन जाती है, उसे 'राष्ट्र–भाषा' कहते हैं।

किसी भी राष्ट्र में अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं और समझी जाती हैं, लेकिन उस राष्ट्र की भावात्मक एकता के लिए किसी एक भाषा को सम्पूर्ण राष्ट्र द्वारा सहज ही स्वीकार कर लिया जाता है तब उसे ही राष्ट्र–भाषा का गौरव प्राप्त हो जाता है।

आज भारतवर्ष के हिन्दी भाषा को देश के करोड़ों लोगों द्वारा बोला और समझा जाता है, लेकिन भारतीय–संविधान द्वारा अभी तक हिन्दी–भाषा को राष्ट्र–भाषा का वर्जा प्राप्त नहीं हो सका है।

प्रश्न–7. 'साहित्यिक भाषा' के बारे में लिखिए।

अथवा

'साहित्यिक भाषा' की विशेषताओं को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर– साहित्यिक भाषा की विशेषताएँ– 'जो भाषा मुख्यतः साहित्य–रचना के' लिए प्रयुक्त होती है, उसे साहित्यिक भाषा कहते हैं।'

यह भाषा बोलचाल की भाषा से भिन्न तथा परिनिष्ठित भाषा के स्वरूप के निकट होती हैं। यह भाषा पूर्ण रूप से परिमार्जित परिष्कृत एवं सुसंस्कृत होती है। कवि, लेखक एवं अन्य रचनाकार अपनी–अपनी रचनाओं में इसी भाषा का उपयोग करते हैं।

हिन्दी प्रांत के लेखक जिस साहित्यिक भाषा का प्रयोग अपनी रचनाओं में करते हैं, वह हिन्दी की 'खड़ी बोली' ही है। आज यह पूर्ण रूप से परिमार्जित एवं परिनिष्ठित है। इसका व्याकरण सुनिश्चित है। आज का हिन्दी साहित्य इसी साहित्यिक भाषा में लिखा जा रहा है।

<u>दीर्घउत्तरीय प्रश्नोत्तर-</u>

प्रश्न–1. 'भाषा' की सर्वमान्य परिभाषा लिखकर उसकी व्याख्या कीजिए।

अथवा

'भाषा' का अर्थ स्पष्ट कीजिए और उसकी सर्वमान्य परिभाषा लिखिए।

अथवा

'भाषा' के स्वरूप से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य कौन–कौनसे हैं? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर– 'भाषा' का अर्थ– 'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष्' धातु (क्रिया) से बना है जिसका अर्थ है– 'बोलना'। सुप्रसिद्ध भाष्यकार के अनुसार– 'भाषा व्यक्तायां वाचि' भाषा का लक्षण बताया गया है। अर्थात् जो वाणी वर्णों से व्यक्त होती है, उसे भाषा कहते हैं। विभिन्न विद्वानों द्वारा भाषा की भिन्न–भिन्न परिभाषाएँ दी गई हैं। इनका सम्यक् रूप से अनुशीलन करने पर निम्नलिखित तथ्य प्रकट होते हैं–

(1) मनुष्य की वाक्–इन्द्रियों द्वारा उच्चारित ध्वनि संकेतों को ही भाषा कहते हैं।
(2) भाषा में ध्वनि संकेतों का प्रयोग होता है।
(3) भाषायी ध्वनि संकेत रूढ़ एवं परम्परागत होते हैं।
(4) ये भाषायी ध्वनि संकेत यादृच्छिक होते हैं।
(5) ये ध्वनि संकेत एक व्यवस्था के अन्तर्गत प्रयुक्त होते हैं।
(6) एक भाषा–समुदाय वाले ही अपने ध्वनि संकेतों को प्रयुक्त करते हैं।
(7) ये ध्वनि संकेत दूसरे वर्ग या समुदाय के ध्वनि संकेतों से भिन्न होते हैं।
(8) ये ध्वनि संकेत सार्थक होते हैं।
(9) मानव की भाषा में ध्वनियों का प्रवाह सामान्य रूप से अविच्छिन्न होता है।
(10) ध्वनि संकेतों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं अध्ययन किया जाता है।

उपर्युक्त तथ्यों से ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि 'भाषा' मानव के मुख से उच्चारित उन सार्थक ध्वनि संकेतों को कहते हैं, जिनकी सहायता से एक समुदाय के लोग आपस में विचारों तथा भावों का आदान–प्रदान करते हैं।

उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित रूप से भाषा की सर्वमान्य परिभाषा दी जा सकती है–

भाषा की परिभाषा– 'भाषा मनुष्य की वाक्-इन्द्रियों के द्वारा उच्चारित यादृच्छिक ध्वनि-प्रतीकों की एक संरचनात्मक एवं सार्थक समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन किया जाता है और जिसके द्वारा एक भाषा-समुदाय के लोग परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।'

भाषा की इस परिभाषा में लगभग उक्त सभी तथ्यों का समावेश है। अतः भाषा की उक्त परिभाषा को सर्वमान्य परिभाषा मानना उचित होगा।

प्रश्न–2. 'भाषा' की सामान्य विशेषतायें बताइए।

अथवा

भाषा की विशेषताओं और उसकी प्रकृति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– भाषा की विशेषतायें एवं प्रकृति– भाषा की प्रकृति को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है–

(1) भाषा सामाजिक वस्तु है।
(2) भाषा का प्रवाह अविच्छिन्न है।
(3) भाषा सर्वव्यापक है।
(4) भाषा अर्जित वस्तु है, अर्जन अनुकरण द्वारा होता है।
(5) यह मानव विचारों की वाहक और अभिव्यक्ति का माध्यम है।
(6) यह व्यवहार द्वारा अर्जित की जाती है।
(7) भाषा सहज और नैसर्गिक क्रिया है।
(8) यह सामाजिक दृष्टि से स्तरित होती है।
(9) भाषा चिर-परिवर्तनशील है।
(10) भाषा स्थिरीकरण और मानकीकरण से प्रभावित होती है।
(11) प्रत्येक भाषा का ढाँचा स्वतंत्र होता है।
(12) भाषा पहले उच्चरित रूप में परिवर्तित होती है।
(13) भाषा लिखित और मौखिक होती है।
(14) भाषा भौगोलिक रूप से स्थानीकृत होती है।
(15) प्रत्येक भाषा की अपनी मूल प्रवृत्तियाँ और क्षमता होती है।
(16) प्रत्येक भाषा की एक ऐतिहासिक सीमा होती है।
(17) प्रत्येक भाषा अपनी संरचना अलग रखती है।
(18) प्रत्येक भाषा का एक स्पष्टता या अस्पष्टता मानक रूप होता है।

प्रश्न–3. भाषा के विविध रूपों को विस्तार से समझाइये।

अथवा

भाषा के विविध रूपों की चर्चा कीजिये।

उत्तर– (1) भाषा– भाषा ध्वनि, शब्द और वाक्य का मात्र संयोग या ढेर नहीं है, वह सृजनात्मक शक्ति भी है। भाषा सम्बन्धी ज्ञान इन्द्रियों द्वारा संकलित वैज्ञानिक ज्ञान है। भाषा के दो रूप होते हैं–

उक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित रूप से भाषा की सर्वमान्य परिभाषा दी जा सकती है–

भाषा की परिभाषा– 'भाषा मनुष्य की वाक्–इन्द्रियों के द्वारा उच्चारित यादृच्छिक ध्वनि–प्रतीकों की एक संरचनात्मक एवं सार्थक समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन किया जाता है और जिसके द्वारा एक भाषा–समुदाय के लोग परस्पर विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।'

भाषा की इस परिभाषा में लगभग उक्त सभी तथ्यों का समावेश है। अतः भाषा की उक्त परिभाषा को सर्वमान्य परिभाषा मानना उचित होगा।

प्रश्न–2. 'भाषा' की सामान्य विशेषतायें बताइए।

अथवा

भाषा की विशेषताओं और उसकी प्रकृति पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– भाषा की विशेषतायें एवं प्रकृति– भाषा की प्रकृति को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है–

(1) भाषा सामाजिक वस्तु है।
(2) भाषा का प्रवाह अविच्छिन्न है।
(3) भाषा सर्वव्यापक है।
(4) भाषा अर्जित वस्तु है, अर्जन अनुकरण द्वारा होता है।
(5) यह मानव विचारों की वाहक और अभिव्यक्ति का माध्यम है।
(6) यह व्यवहार द्वारा अर्जित की जाती है।
(7) भाषा सहज और नैसर्गिक क्रिया है।
(8) यह सामाजिक दृष्टि से स्तरित होती है।
(9) भाषा चिर–परिवर्तनशील है।
(10) भाषा स्थिरीकरण और मानकीकरण से प्रभावित होती है।
(11) प्रत्येक भाषा का ढाँचा स्वतंत्र होता है।
(12) भाषा पहले उच्चरित रूप में परिवर्तित होती है।
(13) भाषा लिखित और मौखिक होती है।
(14) भाषा भौगोलिक रूप से स्थानीकृत होती है।
(15) प्रत्येक भाषा की अपनी मूल प्रवृत्तियाँ और क्षमता होती है।
(16) प्रत्येक भाषा की एक ऐतिहासिक सीमा होती है।
(17) प्रत्येक भाषा अपनी संरचना अलग रखती है।
(18) प्रत्येक भाषा का एक स्पष्टता या अस्पष्टता मानक रूप होता है।

प्रश्न–3. भाषा के विविध रूपों को विस्तार से समझाइये।

अथवा

भाषा के विविध रूपों की चर्चा कीजिये।

उत्तर– (1) भाषा– भाषा ध्वनि, शब्द और वाक्य का मात्र संयोग या ढेर नहीं है, वह सृजनात्मक शक्ति भी है। भाषा सम्बन्धी ज्ञान इन्द्रियों द्वारा संकलित वैज्ञानिक ज्ञान है। भाषा के दो रूप होते हैं–

(i) उच्चरित (मौखिक) भाषा और (ii) लिखित भाषा। लिखित और मौखिक भाषा में अन्तर होता है। जैसे– भाषा और बोली में भी अन्तर होता है। अर्थात् कोई भी व्यक्ति जैसा एक बार बोलता है वैसा दूसरी बार नहीं बोलता। उसके प्रत्येक बार के बोलने में कुछ न कुछ अन्तर आ ही जाता है, भले ही वह इतना सूक्ष्म हो कि मानव उस अन्तर को अपने कान से न पकड़ सके। लेकिन व्यक्ति–बोली को परिभाषित करते समय हम इतनी सूक्ष्मता में नहीं जाना चाहते। व्यक्ति–बोली के अन्तर्गत इतना ही समझना आवश्यक है कि एक व्यक्ति की बोली दूसरे व्यक्ति की बोली से स्पष्टतः भिन्न सुनाई पड़ती है।

(2) बोली– किसी सीमित क्षेत्र की उस उप–भाषा को 'बोली' कहते हैं जो उस क्षेत्र के निवासियों की घरेलू बोलचाल की भाषा होती है, उच्चारण लगभग एकसा होता है, जो केवल वक्ताओं के मुखों तक ही सीमित रहती है, जो तनिक भी साहित्यिक नहीं होती और जिसकी रूप–रचना में स्थानीय भेद स्पष्ट विद्यमान रहता है क्योंकि वह अपनी समीपवर्ती बोली से भी भिन्न होती है। भाषा–विज्ञान–कोश में बोली की परिभाषा इस प्रकार दी गई है– 'किसी स्थान विशेष के निम्नवर्गीय अशिक्षित लोगों की बोलचाल की भाषा को बोली कहते हैं।'

डॉ. श्यामसुन्दर दास जी ने बोली की परिभाषा इस प्रकार दी है– 'बोली से हमारा अभिप्राय उस स्थानीय और घरू बोली से है जो तनिक भी साहित्यिक नहीं होती और बोलने वालों के मुख में ही रहती है।'

एक विभाषा के अन्तर्गत इस प्रकार की अनेक बोलियाँ रहती हैं। उदाहरण के लिये, अवधी एक विभाषा है और उसके अन्तर्गत लखीमपुरी, सीतापुरी, लखनवी, उन्नावी एवं रायबरेली आदि अनेक बोलियाँ हैं जिनमें सामान्य–सा अन्तर है। जैसे– 'तेरा' अर्थ में लखीमपुरी में 'तोर' चलता है तो सीतापुरी और उन्नावी में 'त्वार'। इसी तरह लखीमपुरी और सीतापुरी में 'कोई' बोलते हैं जबकि उन्नावी में 'कोऊ'।

(3) विभाषा या उपभाषा– विभाषा का क्षेत्र बोली की अपेक्षा अधिक व्यापक होता है। एक विभाषा में कई बोलियाँ रहती हैं। उदाहरण के लिये, ब्रजभाषा, खड़ीबोली, अवधी, भोजपुरी, गढ़वाली आदि विभाषाओं के अन्तर्गत कई–कई बोलियाँ हैं। विभाषा की परिभाषा देते हुये डॉ. श्यामसुन्दर दास ने अपनी रचना 'भाषा–विज्ञान' में लिखा है– 'एक प्रान्त अथवा उपप्रान्त की बोलचाल तथा साहित्यिक रचना की भाषा विभाषा कहलाती है।'

(4) परिनिष्ठित भाषा– जब कोई विभाषा अपने सुव्यवस्थित व्याकरण के साथ सभ्य एवं शिक्षित वर्ग के दैनिक व्यवहार में प्रयुक्त होने लगती है, तब वह परिनिष्ठित भाषा का रूप ग्रहण कर लेती है। यही भाषा हमारे दूरदर्शन तथा समाचार–पत्रों की भाषा है। यही सरकारी भाषा भी है।

(5) साहित्यिक भाषा– जो भाषा प्रमुख रूप से साहित्य रचना के लिये प्रयोग की जाती है उसे साहित्यिक भाषा कहते हैं। यह पूर्ण परिमार्जित, परिष्कृत एवं सुसंस्कृत होती है। वर्तमान हिन्दी साहित्य इसी भाषा में लिखा जा रहा है।

(6) विशिष्ट भाषा– जो भाषा बोली, विभाषा तथा परिनिष्ठित भाषा से पूरी तरह भिन्न विविध व्यवसायों अथवा कार्यों की शब्दावली से निर्मित होती है, उसे विशिष्ट भाषा कहते हैं,

जैसे कानून की भाषा। इसके अनेक रूप होते हैं, जो मात्र उसी कार्य-स्थल पर प्रयोग की जाती है, जहाँ उसकी आवश्यकता होती है।

(7) राजभाषा– जो भाषा किसी राष्ट्र द्वारा संवैधानिक रूप से सरकारी काम-काज के लिये स्वीकार कर ली जाती है और जिसमें सरकार अपना सारा कार्य एवं सभी सूचनाओं का प्रसारण करती है, उसे राजभाषा कहते हैं। हिन्दी भारत सरकार की राजभाषा है।

(8) राष्ट्रभाषा– जो भाषा किसी देश के विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच पारस्परिक विचार-विनिमय का माध्यम बन जाती है, उसे राष्ट्रभाषा कहते हैं। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा अभी मान्य नहीं की गई है।

(9) अन्तर्राष्ट्रीय भाषा– जो भाषा विभिन्न राष्ट्रों के मध्य विचार-विनिमय तथा पत्र-व्यवहार आदि में प्रयुक्त होती है, उसे अन्तर्राष्ट्रीय भाषा कहते हैं। अंग्रेजी को अभी अंतर्राष्ट्रीय भाषा की मान्यता नहीं है।

प्रश्न–4. 'बोली' और 'विभाषा' में क्या अन्तर है? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

कोई भी बोली 'विभाषा' का स्वरूप कब ग्रहण कर लेती है? समझाकर लिखिए।

अथवा

'बोली' और 'विभाषा' की स्वरूपगत भिन्नताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर– 'बोली' का स्वरूप एवं विशेषताएँ– किसी सीमित-क्षेत्र में रहने वाले लोगों की घरेलू बोलचाल की भाषा को बोली कहते हैं। इसमें स्थान-विशेष की स्थानीयता का प्रभाव स्पष्ट रूप से रहता है। प्रायः एक ही भाषा की कई बोलियाँ हो सकती हैं। इसीलिए बोली को भाषा का लघुत्तम रूप या इकाई कह सकते हैं। बोली अपनी निकटतम दूसरी बोली से भिन्न स्वरूप वाली होती है।

उदाहरण के लिए– हिन्दी-भाषा की अनेक बोलियाँ हैं– खड़ी बोली, ब्रज, बुन्देली, बघेली आदि।

विभाषा का स्वरूप और विशेषताएँ– जब कोई बोली अपने भौगोलिक-विस्तार के कारण किसी प्रांत (प्रदेश) या उपप्रांत में प्रचलित हो जाती है,तब उस बोली को विभाषा या उपभाषा कहा जाता है। अतः ऐसा कहा जा सकता है कि बोली का बड़ा एवं विस्तृत रूप विभाषा है। एक भाषा के अन्तर्गत कई विभाषाएँ या उपभाषाएँ हो सकती हैं। उदाहरण के लिए 'खड़ी-बोली' अपनी विकासशील क्षमताओं के कारण आज विभाषा और परिनिष्ठित-भाषा की श्रेणी में आ गई है। बोली और विभाषा के स्वरूप में मुख्यतः निम्नलिखित अन्तर हैं–

बोली और विभाषा में अन्तर

क्र.	बोली	विभाषा
(1)	घरेलू बोलचाल की भाषा ही बोली कहलाती है।	विस्तृत क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली ही विभाषा कहलाती है।
(2)	बोली का क्षेत्र सीमित होता है।	विभाषा का क्षेत्र अपेक्षाकृत बड़ा एवं विस्तृत होता है।
(3)	बोली क्षेत्र-विशेष के व्यक्ति की पहचान होती है।	विभाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है। अतः यह एक प्रांत या उपप्रांत की पहचान होती है।

(4)	बोली भाषा का प्रारंभिक रूप होती है।	बोली का बड़ा या विस्तृत रूप विभाषा कहलाती है।
(5)	एक भाषा की कई बोलियाँ हो सकती है।	एक भाषा की कई विभाषाएँ या उपभाषाएँ हो सकती हैं, लेकिन इसका क्षेत्र विस्तृत होता है।
(6)	खड़ी बोली, बुन्देली, बघेली आदि हिन्दी की बोलियाँ हैं।	खड़ी बोली अपनी विकासशील क्षमताओं के कारण अब बोली नहीं रही, अपितु निरन्तर विकासशील होकर विभाषा और परिनिष्ठित भाषा की श्रेणी में आ गई है।

प्रश्न–5. भाषा के 'मानकीकरण' से क्या आशय है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

मानक–भाषा से आप क्या समझते हैं? किसी भी भाषा के मानकीकरण की क्यों आवश्यकता होती है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

भाषा के मानकीकरण की कतिपय महत्वपूर्ण विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– 'मानकीकरण' से आशय या तात्पर्य– 'मानकीकरण' से आशय भाषा की उस प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा भाषा के प्रचलित अनेक रूप–विकल्पों में से एक रूप का चयन अथवा निर्धारण किया जाता है। उदाहरण के लिए–

गये–गए, किये–किए, गयी–गई।

उपरोक्त उपर्युक्त, बालिकायें–बालिकाएँ आदि हिन्दी भाषा के अनेक शब्द हैं, जिनका मानकीकरण किया गया है। इनमें से शब्द के द्वितीय रूप को मानक माना गया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि 'मानक' भाषा से तात्पर्य किसी भाषा–समूह के उस भाग से है, जो उस भाषा के अन्य समस्त रूपों को 'मानक' के रूप में स्वीकार करें अर्थात् उस भाषा को बोलने वाले उस भाषा–रूप का प्रयोग अन्य भाषा–भाषियों के साथ करने और अपनी अधीनस्थ बोली बोलने वालों के साथ–साथ मानक–रूप का प्रयोग करते समय प्रतिष्ठा का अनुभव करे, क्योंकि 'मानक–भाषा' की संकल्पना मुख्य रूप से सामाजिक है, संरचनात्मक नहीं है। मानक–भाषा समाज के मानक–वर्ग की भाषा होती है। मानक–भाषा अपनी मानकता के कारण ही राजभाषा बन जाती है। उदाहरण के लिये हिन्दी का मानकीकरण होने के बाद उसे 'राजभाषा' के रूप में मान्य किया जा चुका है।

मानकीकरण की महत्वपूर्ण विशेषताएँ– ये निम्नवत् हैं–

(1) मानकीकरण का आधार सामाजिक अभिस्वीकृति है।
(2) मानकीकरण जन एवं तंत्र दोनों के द्वारा मान्य होता है।
(3) मानकीकरण का रूप प्राप्त कर लेने के बाद मानक भाषा का परिक्षेत्र ब्रहद् हो जाता है।
(4) मानकीकरण भाषा, समाज और संस्कृति की प्रतिष्ठा का मानदंड होता है।
(5) मानकीकरण भाषा के साथ सतत् चलने वाली प्रक्रिया है।

(iv) अवधारणा

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. 'अवधारणा' क्या है? इसे परिभाषित कीजिये।

अथवा

'अवधारणा' का क्या अर्थ है? इसे परिभाषा कीजिए।

उत्तर– अवधारणा– अवधारणा को सामान्यतया प्रत्यक्ष अथवा सम्बोध भी कहा जाता है। वैज्ञानिक शोध में अवधारणा का प्रयोग यथार्थ के प्रत्यीक्षकरण, वर्गीकरण तथा बोध के लिए किया जाता है। सिद्धान्त–रचना में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। सिद्धान्त–रचना के प्रथम स्तर पर मूर्त घटनाओं का अवधारणाओं के रूप में अमूर्तिकरण किया जाता है। तत्पश्चात् इन्हें तर्कसंगत आधार पर व्यवस्थित कर सिद्धान्त में बदला जाता है। अवधारणाएँ स्थिर नहीं होती हैं, अपितु इनके अर्थ में निरन्तर संशोधन व परिवर्तन होता जाता है।

समाजशास्त्र विश्वकोश के अनुसार, किसी वस्तु घटना अथवा प्रक्रिया के वैज्ञानिक प्रेषण एक बोध के आधार पर निर्मित सामान्य विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए जिन विशिष्ट शब्द–संकेतों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें वैज्ञानिक शब्दावली में अवधारणा, प्रत्यय का सम्बोध कहते हैं। एक अवधारणा वस्तुओं, घटनाओं, व्यक्तियों, सम्बन्धों, प्रक्रियाओं आदि में विशिष्ट वर्ग अथवा समूह को दिया गया एक विशिष्ट नाम अथवा संकेतात्मक पद है।

ऑक्सफोर्ड के एक विश्लेषणकर्ता लिजवर्ट लैली ने अवधारणा को इस प्रकार स्पष्ट किया है– 'वास्तव में मस्तिष्क के बारे में अनुभवाश्रित या आनुभविक (मनोविज्ञान की पद्धति द्वारा) अन्वेषण करना नहीं, अपितु इसके तर्कपूर्ण भूगोल का अन्वेषण करना मेरा उद्देश्य है। साथ ही, इच्छा अथवा दायित्व अथवा याद करते रहना से सम्बन्धित भाषण को तर्कपूर्ण विशिष्टताओं का अन्वेषण, इच्छा अथवा दायित्व अथवा याददाश्त का अवधारणा से सम्बन्धित होता है। अवधारणाएँ, इन भाषायी प्रस्तुतियों को प्रकट करने अथवा संजोए रखने में समर्थ होती हैं।'

प्रश्न–2. वैज्ञानिक अनुसंधान में 'अवधारणा' का प्रयोग किस प्रकार किया जाता है। समझाकर लिखिए।

अथवा

'वैज्ञानिक अनुसंधान' में 'अवधारणा' का प्रयोग किन–किन अर्थों में किया जाता है? संक्षेप में लिखिए।

अथवा

विज्ञान की 'सिद्धान्त–निर्माण' प्रक्रिया में अवधारणाओं को किस प्रकार सिद्धान्त–रूप में परिणत किया जाता है? समझाइए।

उत्तर– **वैज्ञानिक अनुसंधान में 'अवधारणा' का प्रयोग**– वैज्ञानिक–अनुसंधान में सर्वप्रथम यथार्थ–घटना या वस्तु या स्थिति का प्रत्यक्षीकरण किया जाता है, प्रत्यक्षीकरण के आधार प्राप्त आँकड़ों को वर्गीकृत किया जाता है और निष्कर्ष प्राप्त करने के बाद एक अवधारणा विकसित होती है। इस प्रकार कह सकते हैं कि वैज्ञानिक अनुसंधान में अवधारणा का प्रयोग यथार्थ के प्रत्यक्षीकरण, वर्गीकरण तथा बोध के लिए किया जाता है।

अतः हम कह सकते हैं कि किसी वस्तु, घटना अथवा प्रक्रिया के वैज्ञानिक सम्प्रेषण एवं बोध के आधार पर निर्मित सामान्य विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए जिन विशिष्ट शब्द-संकेतों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें हम 'अवधारणा' कहते हैं।

सिद्धान्त-निर्माण-प्रक्रिया में अवधारणा का प्रयोग- सिद्धान्त-निर्माण प्रक्रिया में 'अवधारणा' का महत्वपूर्ण स्थान रहता है, क्योंकि सिद्धान्त-निर्माण के प्रथम-स्तर पर मूर्त घटनाओं का अवधारणाओं के रूप में अमूर्तिकरण किया जाता है। तत्पश्चात् इन्हें तर्क-संगत आधार पर व्यवस्थित किया जाता है। इसके बाद इन अवधारणाओं को सिद्धान्त-रूप में परिणत करके प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न-3. 'सामान्य शब्द' और अवधारणा में प्रयुक्त शब्द में मूल अन्तर क्या है? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सामान्य शब्दों की शब्दावली के शब्दों और वैज्ञानिक शब्दावली के शब्दों में क्या अन्तर रहता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- वैज्ञानिक शब्दावली के शब्द- किसी भी वैज्ञानिक व्यवस्था की एक विशिष्ट शब्दावली होती है। इसके अन्तर्गत शब्द तो प्रायः सामान्य शब्दावली के ही होते हैं, जिनका प्रयोग हम नित्य की भाषा में करते हैं, लेकिन वैज्ञानिक व्यवस्था के अन्तर्गत प्रयुक्त किए जाने पर ये शब्द विशिष्ट अर्थों को ध्वनित करने लगते हैं। इन्हें अवधारणामूलक शब्द भी कहते हैं।

'सामाजिक विज्ञान' में ऐसे बहुत से शब्द हैं, जिनका प्रयोग वैज्ञानिक शब्दावली के अन्तर्गत भी किया जाता है तथा इनका प्रयोग सामान्य भाषा में भी किया जाता है। उदाहरण के लिए समाजशास्त्र तथा मानवशास्त्र के अन्तर्गत 'समाज', 'संस्कृति' आदि शब्दों का प्रयोग कुछ विशिष्टताओं में किया जाता है। इन शब्दों का अर्थ सामान्य भाषा में भी किया जा सकता है तथापि इन दोनों में इनका अर्थ एक समान नहीं होता है।

सामान्य भाषा की शब्दावली- 'सामान्य भाषा' से हमारा तात्पर्य प्रतिदिन की बोलचाल की भाषा से है। समाज में रहने वाले लोगों के द्वारा सामान्य व्यवहार में बोली जाने वाली शब्दावली को ही सामान्य भाषा की शब्दावली कहलाती है। जैसे- 'गँवार', 'गधा' 'जंगली' आदि अनपढ़ और मूर्ख व्यक्तियों के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

इस प्रकार सामान्य भाषा में हम 'असांस्कृतिक शब्दों' का प्रयोग करते हैं।

सामान्य शब्दों और अवधारणा के शब्दों में अन्तर- ये निम्नवत् हैं-

(1) 'सामान्य शब्द' और 'अवधारणा' में प्रयुक्त शब्द में मूल अन्तर उनकी अर्थ की व्याप्ति का ही है।

(2) सामान्य शब्द एकार्थी होते हैं या अभिधेयार्थी होते हैं, जबकि अवधारणा के शब्द न केवल विशिष्टार्थी होते हैं, अपितु वे विशिष्ट के विस्तृत आयामों का भी संकेत करते हैं।

(3) अवधारणा के शब्द मानकीकृत होते हैं, जबकि सामान्य भाषा के शब्द प्रायः अमानक होते हैं।

(4) सामान्य भाषा के शब्दोच्युत-संस्कृति-दोष की संभावना रहती है, जबकि अवधारणा के शब्द शिष्ट और विशिष्ट होते हैं।

(5) अवधारणा के शब्द प्रायः वैज्ञानिक शब्दावली के होते हैं, जबकि सामान्य भाषा के शब्द हमारे नित्य के जीवन के व्यवहार में प्रयुक्त होने वाले होते हैं।

इस प्रकार सामान्य भाषा के शब्दों में और अवधारणा के शब्दों में मूल रूप से पर्याप्त अन्तर होता है।

प्रश्न–4. 'अवधारणा' की 'उपयोगिता' एवं 'महत्व' पर प्रकाश डालिए।

अथवा

वैज्ञानिक अनुसंधान में 'अवधारणा' किस प्रकार उपयोगी और उसका क्या महत्व है? समझाकर लिखिए।

उत्तर– **'अवधारणा' की उपयोगिता–** 'अवधारणा' या संकल्पना (Concept) भाषा–दर्शन का शब्द है, लेकिन इसका उपयोग विज्ञान, गणित अनुसंधानों, सामाजिक विज्ञान आदि अनेक विषयों के अध्ययन में किया जाता है। अवधारणा भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। यह किसी वस्तु, घटना, दृश्य आदि को समझने में सहायक बनती है। इसके साथ ही अर्थ को वस्तुओं के मानसिक बिम्ब से जोड़ती है। यह हमारी चेतना में संचित वस्तुओं के संवेदनात्मक–बिम्बों को स्वतंत्र रूप से संज्ञानात्मक इकाई के रूप में व्यवहृत करने की संभावना प्रदान करती है।

अवधारणा के द्वारा एक सम्पूर्ण वैचारिक–स्थिति को अति संक्षिप्त रूप में एक या दो शब्दों में ही व्यक्त किया जा सकता है। विभिन्न–विषयों, जातियों, प्रजातियों, समाजों और संस्कृतियों आदि से सम्बन्धित ज्ञान को विभिन्न अवधारणाओं के माध्यम से अति संक्षेप में संचित किया जा सकता है तथा आवश्यकतानुसार उसे अभिव्यक्त करके उपयोग में लाया जा सकता है। इसके द्वारा किसी विषय, विचार या परिस्थिति को संक्षिप्त शब्दों के माध्यम से सरलतापूर्वक समझाया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'भरतमुनि ने भारतीय काव्यशास्त्र के काव्य–रस और रसांगों के विस्तृत विवेचन–विश्लेषण को अपने 'रस–सूत्र', 'विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद् रसनिष्पत्तिः' की अवधारणा के द्वारा समझा दिया है।'

इसी प्रकार वैज्ञानिक–अनुसंधानों में अवधारणा का उपयोग यथार्थ के प्रत्यक्षीकरण, वर्गीकरण तथा बोध के लिए किया जाता है क्योंकि 'अवधारणा' वैज्ञानिक विश्लेषण और अनुसंधान की दृष्टि से विचारों को विकसित करने, उन्हें परखने आदि के कार्यों में उपयोगी होती है। यह तथ्यों के एक वर्ग या एक समूह को समझने, उनका अध्ययन करने तथा उन्हें व्यवस्थित करने में भी सहायक होती है।

अवधारणा का महत्त्व– वस्तुतः अवधारणा एक विचार की मानसिक संज्ञानात्मक इकाई है। यह एक प्रकार की संवेदनात्मक प्रतीति है तथा मनुष्य के सामाजिक–मूल्यों से इसका सम्बन्ध बना रहता है। यह भाषा के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। अतः इसका सामाजिक महत्व है।

किसी भी वैज्ञानिक–अध्ययन में तथा सिद्धान्तों की भाँति अवधारणा का भी अपना विशेष महत्व होता है, क्योंकि वैज्ञानिक विश्लेषण और अनुसंधन की दृष्टि से विचारों को विकसित करने, उन्हें परखने आदि की दृष्टि से अवधारणाओं का निर्माण करना आवश्यक होता है। अवधारणाएँ तथ्यों को समझने, अध्ययन करने तथा आंकड़ों को व्यवस्थित करने में सहायक होती हैं।

किसी सिद्धान्त के निर्माण की प्रक्रिया में अवधारणाओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि सिद्धान्त-निर्माण के प्रथम-स्तर पर मूर्त घटनाओं का अवधारणाओं के रूप में अमूर्तिकरण किया जाता है, तत्पश्चात् इन्हें तर्कसंगत आधार पर व्यवस्थित करके सिद्धान्त रूप में परिणत किया जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि विभिन्न विषयों के अध्ययन, वैज्ञानिक प्रयोगों के प्रत्क्षीकरण, वर्गीकरण, विश्लेषण तथा सिद्धान्त-निर्माण की प्रक्रिया में अवधारणाएँ विशेष रूप से उपयोगी होती हैं। अतः इनका विशेष महत्व है।

प्रश्न–5. अवधारणा की विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

अवधारणा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर– अवधारणा की प्रमुख विशेषताएँ–

(1) अवधारणा केवल शब्द नहीं, बल्कि प्रतीक है, क्योंकि इनके द्वारा विशेष अर्थ का सम्प्रेषण होता है।

(2) अवधारणा अधिक से अधिक संक्षिप्त होती है, जिसे एक या दो शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है।

(3) सीमांकन की दृष्टि से अवधारणा के अर्थ का सीमित आयाम होता है, अर्थात् किसी घटना अथवा क्रिया की सम्पूर्ण व्याख्या इसमें नहीं होती है, केवल संकेत मिलता है।

(4) अवधारणाओं की सृष्टि केवल अनुभवजन्यात्मक तथ्यों के आधार पर ही होती है। इसका आधार अनुमान या कल्पना नहीं है।

(5) अवधारणा अपने आपमें अपने निर्माण की प्रक्रिया को भी व्यक्त करती है अर्थात् कैसे इसका निर्माण हुआ है, इसका संकेत हमें उसी से मिल जाता है।

(6) अवधारणा स्वयं न सिद्धान्त है और न ही सिद्धान्त का संक्षिप्त रूप है, बल्कि सिद्धान्त निर्माण के बीच की एक कड़ी है।

(7) अवधारणा में अनुसंधान के साथ-साथ आवश्यक परिवर्तनशीलता भी लायी जा सकती है अथवा किसी वैज्ञानिक व्यवस्था से उनका निष्कासन भी हो सकता है। अनुसंधान के द्वारा जैसे-जैसे हम अपनी वैज्ञानिक व्यवस्था के आयाम खोजते जाते हैं वैसे-वैसे अवधारणाओं के औचित्य या अनौचित्य भी हमारे समक्ष स्पष्ट होते जाते हैं। इसीलिए हमने इसे परिवर्तनशील की संज्ञा दी है।

(v) उदारीकरण

लघुउत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न–1. आर्थिक उदारीकरण किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

आर्थिक उदारीकरण को समझाइए।

उत्तर– आर्थिक उदारीकरण– आर्थिक-व्यापार-व्यवस्था से अनावश्यक प्रतिबंधों को हटाकर उसे उदारवादी बनाने की प्रक्रिया आर्थिक उदारीकरण कहलाती है। आर्थिक उदारीकरण प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यापार का सरलीकरण किया जाता है। व्यापारियों को एक

स्वतंत्र वातावरण प्रदान किया जाता है जिसमें वे बाजार के कारकों के अनुसार नीतिगत फैसले कर सकें और उत्पादों के दाम तय कर सकें। उदारीकरण प्रक्रिया के अन्तर्गत सरकार अर्थव्यवस्था की गतिविधियों में अपने हस्तक्षेप को कम कर देती है। अर्थव्यवस्था को सभी के लिए खोल दिया जाता है और बाजार पूरी तरह से मांग और पूर्ति पर आधारित रहते हैं।

विगत कुछ दशकों में आर्थिक उदारीकरण नीति के कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में अत्यधिक वृद्धि देखने को मिली है। वैश्विक स्तर पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा मिला और विदेशी मुद्रा भंडार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। उदारीकरण नीति ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को भूमंडलीकरण की ओर प्रोत्साहित किया है।

प्रश्न–2. 'स्वतंत्र–बाजार' व्यवस्था से क्या तात्पर्य है? समझाकर लिखिए।

अथवा

'आर्थिक उदारीकरण' से 'स्वतंत्र बाजार' व्यवस्था किस प्रकार की जाती है? समझा करके लिखिए।

उत्तर– आर्थिक उदारीकरण से तात्पर्य– आर्थिक व्यापार–व्यवस्था से अनावश्यक प्रतिबंधों को हटाकर उसे उदारवादी बनाने की प्रक्रिया आर्थिक उदारीकरण कहलाती है।

आर्थिक उदारीकरण में अर्थ–व्यापार को अनावश्यक प्रतिबंधों से मुक्त करना आवश्यक होता है। इस प्रक्रिया में व्यापार के नियमों–कानूनों को सरल बनाया जाता है ताकि स्वतंत्र–बाजार–व्यवस्था का निर्माण किया जा सके।

स्वतंत्र बाजार–व्यवस्था से तात्पर्य– 'स्वतंत्र बाजार–व्यवस्था' से तात्पर्य आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया के द्वारा व्यापारियों को एक स्वतंत्र वातावरण प्रदान करना होता है, जिसमें वे बाजार के कारकों के अनुसार नीतिगत फैसले लेने और उत्पादों के मूल्य भी तय करने के लिए स्वतंत्र होते हैं। इस प्रकार की बाजार व्यवस्था को स्वतंत्र बाजार–व्यवस्था कहते हैं।

प्रश्न–3. भारतीय अर्थव्यवस्था पर उदारीकरण के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया को समझाते हुए इससे भारतीय अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया– आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया की महत्वपूर्ण कतिपय बातें निम्नलिखित हैं–

(1) इस प्रक्रिया में व्यापार के नियमों–कानूनों को सरल बनाया जाता है, ताकि स्वतंत्र बाजार–व्यवस्था का निर्माण किया जा सके।

(2) इस प्रक्रिया के अन्तर्गत व्यापारियों को एक स्वतंत्र वातावरण प्रदान किया जाता है, जिसमें वे बाजार के कारकों के अनुसार नीतिगत फैसले लेने के लिए तथा उत्पादों का मूल्य तय करने के लिए स्वतंत्र होते हैं।

(3) इसके अन्तर्गत आर्थिक विकास बाधा पहुँचाने वाली आर्थिक नीतियों, नियमों, प्रशासनिक नियंत्रणों, प्रक्रियाओं आदि को समाप्त कर दिया जाता है या शिथिलता दी जाती है।

(4) इसमें विश्व–व्यापार की शर्तों में भी उदार बनाया जाता है। इससे अर्थव्यवस्था के विकास के साथ–साथ देश का व्यापक विकास और चहुँमुखी उन्नति भी होती है।

(5) सरकार अर्थव्यवस्था की गतिविधियों में अपने हस्तक्षेप कम कर देती है।

(6) अर्थव्यवस्था को सभी के लिए खोल दिया जाता है और बाजार पूरी तरह मांग और पूर्ति के सिद्धान्त पर आधारित हो जाता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था पर आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव– आर्थिक उदारीकरण देश की आर्थिक स्थिति के सुधार की दिशा में भारत सरकार द्वारा उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है। मूलतः इसका उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप को कम करके बाजार–प्रणाली पर निर्भरता बढ़ाना है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था पर इस आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया के क्रियान्वयन से निम्नलिखित प्रभाव परिलक्षित हो रहे हैं–

(1) उदारीकरण का कृषि, उद्योग तथा सेवा इन तीनों का अच्छा प्रभाव दिखाई दे रहा है।

(क) कृषि–क्षेत्र में उदारीकरण से बाजार का विस्तार हुआ है। उत्पादकों को आकर्षक मूल्य तथा उपभोक्ताओं को सस्ती कीमत पर कृषि सम्बन्धी वस्तुओं की प्राप्ति सुलभ हुई है। कृषि–क्षेत्र में तकनीकी स्तर पर वृद्धि होने से उत्पादकता में भी वृद्धि हुई है। इसके साथ ही इस क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास पर विशेष बल दिया जाने लगा है।

(ख) आर्थिक उदारीकरण के बाद उद्योगों की स्थिति में भी सुधार आया है–

(i) औद्योगिक उत्पादन में भी विविधता आई है।

(ii) भारतीय औद्योगिक–क्षेत्रों को विदेशों से उच्च तकनीक प्राप्त होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय–स्तर पर प्रतिस्पर्द्धा में वृद्धि हुई है।

(ग) आर्थिक उदारीकरण का सबसे अधिक सकारात्मक प्रभाव सेवा–क्षेत्र पर दिखाई देता है–

(i) वर्तमान में जीडीपी का अधिकांश हिस्सा सरकार को सेवा–क्षेत्र से प्राप्त होने लगा है।

(ii) उदारीकरण की नीति के फलस्वरूप आज सॉफ्टवेयर पर्यटन एवं चिकित्सा सेवा इत्यादि के लिए हमारा देश आदर्श स्थल बन चुका है।

(2) आर्थिक उदारीकरण नीति के कारण बी.पी.ओ. (बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग) के क्षेत्र में भी भारतवर्ष अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।

इस प्रकार आर्थिक उदारीकरण से भारतीय अर्थव्यवस्था पर अनेक सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होते हैं।

प्रश्न–4. भारतीय परिप्रेक्ष्य में उदारीकरण की चुनौतियों के बारे में लिखिए।

अथवा

वर्तमान में आर्थिक उदारीकरण से भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष कौन–कौन–सी चुनौतियाँ उत्पन्न हो गई हैं? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर– भारत सरकार द्वारा– 'आर्थिक उदारीकरण' की नीति को क्रियान्वित करने से एक ओर भारतीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित हो रहे हैं, तो वहीं, दूसरी ओर

इस उदारीकरण की नीति के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष कुछ चुनौतियाँ, समस्याएँ या कठिनाइयाँ हैं। ये चुनौतियाँ या समस्याएँ प्रमुख रूप से निम्नलिखित हैं–

(1) आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया को अपनाने के बाद से हमारी अर्थव्यवस्था में कृषि–क्षेत्र का हिस्सा लगातार घट रहा है।

(2) पूरे देश में प्रत्येक किसान के पास उदारीकरण का लाभ उठाने की क्षमता नहीं है, क्योंकि भारतवर्ष में अधिकांश किसान सीमांत हैं।

(3) हमारे उद्योग अन्तर्राष्ट्रीय उद्योगों से प्रतिस्पर्धा करने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं तथा देशी उद्योग–धंधों पर भी इसका अच्छा प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

(4) पर्यटन–स्थलों को सुविधा–युक्त बनाना एक बड़ी चुनौती है।

(5) ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र के महत्वपूर्ण स्थलों में अपार संभावनाएँ होते हुए भी इनके विकास में अनेक बाधाएँ हैं।

(6) हमारी अर्थव्यवस्था बाह्य–कारकों से बहुत अधिक प्रभावित होती हुई दिखती हैं।

उक्त कारणों से आज भारत में आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया विकासशील अवस्था में ही है।

प्रश्न–5. पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की 'पूरा (PURA) मॉडल' योजना के उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'पूरा (PURA) मॉडल' योजना क्या है? यह योजना किसका स्वप्न थी? इसके अन्तर्गत कौन–कौनसे कार्य किये गये और यह योजना सफल क्यों नहीं हो सकी? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर– हमारे देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने ग्राम्य विकास का सपना देखा था जिसका नाम Provision of urban amenitics to Rural Area (PURA) था। ग्राम्य विकास हेतु इस योजना के पायलेट–प्रोजेक्ट की शुरूआत भारत सरकार द्वारा वर्ष 2004 में की गई। हिन्दी में 'ग्रामीण क्षेत्रों के लिए नगरीय सुविधाओं का प्रावधान' कहा जा सकता है। इस स्वप्न–योजना के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित थे–

(1) ग्रामीण क्षेत्रों में भी शहरों जैसी बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराना।

(2) ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के जीवन–स्तर में सुधार लाना।

(3) नगरों की ओर लगातार हो रहे ग्राम्य–पलायन को रोकना।

(4) गाँवों में ज्ञान एवं रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना।

(5) गाँवों में यातायात सम्पर्क, बैंकों की सुविधा, चिकित्सालयों की व्यवस्था तथा दूरसंचार की सुविधाएँ उपलब्ध कराना।

(6) उदारीकरण का लाभ गाँवों के लघु एवं कुटीर उद्योगों को मिल सके ताकि नगरों की ओर हो रहे 'ग्राम्य पलायन' को रोका जा सके।

केन्द्र सरकार के ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा इस योजना को क्रियान्वित किया गया। इस योजना को एशियाई विकास बैंक से भी आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। इसके अन्तर्गत देश में जमीनी–स्तर पर सात पायलट प्रोजेक्ट चलाए गए। इसके बाद इस योजना से अन्य कई मंत्रालयों और निजी क्षेत्रों को भी जोड़ा गया। वर्ष 2012 में इस योजना को नए तरीके से शुरूआत करते हुए ग्रामीण क्षेत्रों में इस योजना का लक्ष्य ज्ञान और रोजगार न करके केवल

जलापूर्ति, साफ–सफाई और सड़कों तक ही सीमित कर दिया गया। इसी कारण पूर्व राष्ट्रपति की यह स्वप्न योजना पूर्ण न हो सकी।

प्रश्न–6. भारतीय संदर्भों में आर्थिक उदारीकरण की नीति का लाभ छोटे किसानों तथा लघु एवं कुटीर उद्योगों तक किस प्रकार पहुँचाया जा सकता है? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर– भारतवर्ष गाँवों का देश है। आज भी हमारे देश की काफी जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। गाँवों में भी कुछ बड़े–बड़े गाँव हैं लेकिन अधिकांश गाँव छोटे–छोटे हैं। इन गाँवों में रहने वाले लोग आज भी पढ़े–लिखे नहीं हैं, उनमें अंध–विश्वास और संकुचित विचारों का समावेश है, इस कारण वे आधुनिक विचारों, ज्ञान एवं जीवन की विविध उपयोगी जानकारियों को ग्रहण नहीं करते हैं। गाँवों में रहने वाले लोगों में प्रायः अधिकांश लोग छोटे किसान, मजदूर, छोटे व्यवसायी, पशुपालक आदि होते हैं। इन्हें अपने क्षेत्र के कामों को करने का अनुभव तो होता है, लेकिन उससे अधिकाधिक लाभ कमाने के संसाधन इनके पास नहीं होते हैं। अतः इनके जीविकोपार्जन के संसाधनों को इनके लिए अधिक से उपयोगी बनाने के लिए आर्थिक उदारीकरण की नीति के अन्तर्गत निम्नलिखित कार्य सरकार द्वारा ईमानदार कर्मठ और जानकार व अनुभवी अधिकारियों–कर्मचारियों द्वारा कराये जाने चाहिए–

(1) सर्वप्रथम छोटे किसानों तथा लघु एवं कुटीर उद्योगों को चलाने वाले अथवा अनुभव रखने वाले लोगों की व्यक्तिशः पहचान की जानी चाहिए और उनका पंजीकरण किया जाना चाहिए।

(2) इन छोटे किसानों एवं लघु व कुटीर उद्योगों को चलाने वाले लोगों को स्थानीय रूप से निःशुल्क रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

(3) आर्थिक उदारीकरण नीति के अन्तर्गत इन्हें शासकीय टैक्स आदि की छूट दी जानी चाहिए।

(4) इन्हें अपने उद्योग–धंधों को चलाने के लिए संसाधन तथा कच्चे माल को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त धनराशि प्रदाय की जानी चाहिए और उसकी आदायगी बिना ब्याज के आसान किश्तों द्वारा ली जानी चाहिए। इसके साथ ही इनके तैयार माल के विक्रय हेतु स्थानीय बाजार विकसित किए जाने चाहिए, जहाँ वे अपने माल को बेचकर अपनी आमदनी आसानी से प्राप्त कर सकें।

(5) छोटे किसानों को प्रशिक्षण के साथ–साथ खाद–बीज और अन्य आधुनिक यंत्रों आदि को सस्ती कीमतों पर उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

(6) आर्थिक उदारीकरण की नीति के अन्तर्गत इन्हें अपनी वस्तुओं को बेचने तथा उनकी कीमतें तय करने की स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए। इस प्रकार 'स्वतंत्र बाजार–व्यवस्था' को विकसित किया जाना चाहिए।

(7) स्थानीय स्तर पर 'स्वतंत्र बाजार' विकसित किए जाने चाहिए जो शासकीय देखरेख में तो संचालित हों, लेकिन शासन का उन पर नियंत्रण न रहे, जिससे वे अपने परिश्रम का पूरा लाभ प्राप्त कर सकें।

(8) इनके बच्चों को शिक्षा, चिकित्सा आदि की व्यवस्था भी शासन द्वारा स्थानीय–स्तर पर उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

उक्त कार्यों को क्रियान्वित करके छोटे किसानों, लघु तथा कुटीर उद्योगों को चलाने वाले लोगों को आर्थिक उदारीकरण का लाभ दिलाया जा सकता है।

प्रश्न–7. परिश्रम–पुरुषार्थ उद्यमिता और स्वावलम्बन परस्पर भारतीय परम्परा में कैसे घुले–मिले हैं? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'परिश्रम–पुरुषार्थ, उद्यमिता और स्वावलम्बन परस्पर सम्पृक्त हैं।'– कथन की विवेचना कीजिए।

उत्तर– भारतीय–संस्कृति एवं सभ्यता के प्रारंभिक काल से ही हमारे देश में परिश्रम–पुरुषार्थ, उद्यमिता और स्वावलम्बन को मानव जीवन के चार स्तम्भ माना गया है। इन चारों स्तम्भों पर ही मानव जीवन का विकास आधारित है। यही कारण है कि वैदिक काल से लेकर आज तक के ऋषियों, मुनियों, संतों और महापुरुषों द्वारा इन्हें अपने जीवन में समावेशित करने के उपदेश दिए गए हैं।

'आर्थिक उदारीकरण' की प्रक्रिया के अन्तर्गत भी स्थानीय व्यक्तियों के परिश्रम–पुरुषार्थ, उद्यमिता से अर्जित स्थानीय उत्पादों या वस्तुओं को दिया जाना चाहिए जिससे उनमें स्वावलम्बन की भावना का विकास हो और स्थानीयता को समर्थन मिले क्योंकि 'वोकल फॉर लोकल' का भाव यही है। इससे स्थानीय व्यक्तियों में आर्थिक स्वावलम्बन के भाव का विकास होगा।

'परिश्रम' और 'पुरुषार्थ'– ये दोनों भाव परस्पर सम्बद्ध हैं, क्योंकि परिश्रमी व्यक्ति ही पुरुषार्थी कहलाता है। हमारे धर्मशास्त्र में चार पुरुषार्थ बताए गए हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इन चारों पुरुषार्थों को बिना परिश्रम किए कोई भी पुरुष (व्यक्ति) प्राप्त नहीं कर सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जो परिश्रमी है, वही पुरुषार्थी है। मनुष्य अपनी कार्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों द्वारा परिश्रम करके धनार्जन, ज्ञानार्जन या धर्मार्जन करता है। ऐसा करने पर उसे पुरुषार्थी कहा जाता है।

'उद्यमिता' से भी आशय 'उद्योग' अर्थात् 'परिश्रम' से ही है। अथवा उद्योगों को चलाने के भाव को 'उद्यमिता' माना जावे तो भी आशय 'परिश्रम' से ही प्राप्त होता है क्योंकि बिना परिश्रम के उद्योगों का संचालन नहीं हो सकता है।

इस प्रकार 'परिश्रम, पुरुषार्थ और उद्यमिता' एक–दूसरे से बिल्कुल घुले–मिले हुए हैं। अर्थात् ये आपस में इस प्रकार घुले–मिले हैं कि एक के साथ ही दूसरे का भाव स्वयं ही जुड़ जाता है। इसके बाद तीसरा भाव है– 'स्वावलम्बन', 'स्व' अर्थात् अपने ऊपर। 'आलम्बन' अर्थात् सहारे अर्थात् 'अपने सहारे'। ग्रामीण शब्दों में अपने पैरों खड़ा होना।

तात्पर्य यह है कि जब कोई व्यक्ति अपने परिवार का भरण–पोषण स्वयं अपने परिश्रम से करने में सक्षम हो जाता है और समाज में अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा स्थापित कर लेता है, तब उसे स्वावलम्बी कहा जाता है। इसे हम 'आत्मनिर्भर' होना भी कहते हैं। व्यक्ति में परिश्रम–पुरुषार्थ, उद्यमिता और स्वावलम्बन के गुणों का विकास होने पर उसका जीवन सुखमय और आदर्शवान हो जाता है।

महात्मा गाँधी का भी यही स्वप्न था कि हमारे भारतवासी आत्मनिर्भर बनें, नगर आत्मनिर्भर हों और राष्ट्र आत्मनिर्भर बने। अर्थात् हम अपने परिश्रम–पुरुषार्थ, उद्यमिता के द्वारा अपने जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हों तभी हम विश्व–स्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकेंगे। आर्थिक उदारीकरण के इस दौर में हमें परिश्रम–पुरुषार्थ–उद्यमिता और स्वावलम्बन के भाव से कार्य करने चाहिए, क्योंकि ये चारों भाव ही मानव जीवन के विकास एवं उन्नति के मूल–तत्त्व हैं।

भाषा एवं संस्कृति
वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

(1) मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कहाँ माना जाता है?
(अ) देवरिया (ब) चिरगाँव झाँसी
(स) चित्रकूट (द) टिमरनी।
उत्तर– (ब) चिरगाँव झाँसी।

(2) राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म हुआ था–
(अ) 2 अगस्त, 1886 (ब) 3 अगस्त, 1886
(स) 4 अगस्त, 1888 (द) 8 अगस्त, 1885
उत्तर– (ब) 3 अगस्त, 1886

(3) किसके सम्पर्क में आने के बाद गुप्त जी ने खड़ी बोली में रचना प्रारंभ की थी?
(अ) पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी (ब) डॉ. पूर्ण सिंह
(स) डॉ. रामचन्द्र शुक्ल (द) डॉ. पीताम्बर दास।
उत्तर– (अ) पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी।

(4) 'मातृभूमि' कविता किस युग की कविता मानी जाती है?
(अ) द्विवेदी युग (ब) छायावादी युग
(स) प्रगतिवादी युग (द) प्रयोगवादी युग।
उत्तर– (अ) द्विवेदी युग।

(5) 'भारत भारती' का प्रकाशन वर्ष क्या है?
(अ) 1912 ई. (ब) 1913 ई.
(स) 1912 सं. (द) 1912 शक
उत्तर– (अ) 1912 ई.

(6) 'मातृभूमि' किसकी सगुण मूर्ति है?
(अ) सम्पूर्ण मूर्ति नूपेश की (ब) सगुण मूर्ति देवेश की
(स) सम्पूर्ण मूर्ति हृदयेश की (द) सगुण मूर्ति सर्वेश की।
उत्तर– (द) सगुण मूर्ति सर्वेश की।

(7) गुप्त जी किस सम्प्रदाय (परम्परा) के प्रतिनिधि कवि थे?
(अ) शैव (ब) शाक्त
(स) लिंगायत (द) वैष्णव।
उत्तर– (द) वैष्णव।

(8) 1953 में भारत सरकार ने इन्हें किस अलंकरण से सम्मानित किया?
(अ) पद्म विभूषण (ब) भारत भूषण

(स) पद्मश्री (द) मंगलाप्रसाद पुरस्कार।
उत्तर– (अ) पद्म विभूषण।

(9) इनमें से कौन–सी रचना गुप्त जी की नहीं है?
(अ) उर्मिला (ब) यशोधरा
(स) कैकेयी (द) साकेत।
उत्तर– (स) कैकेयी।

(10) 'मातृभूमि' कविता में 'रत्नाकार' शब्द किसके लिए आया है?
(अ) समुद्र के लिए (ब) कवि के लिए
(स) रत्न के व्यापारी के लिए (द) रत्नधारी के लिए।
उत्तर– (अ) समुद्र के लिए।

(11) 'नीलाम्बर' कौन–सा समास है?
(अ) द्वंद्व (ब) बहुब्रीहि
(स) तत्पुरुष (द) कर्मधारय।
उत्तर– (द) कर्मधारय।

(12) 'वात्सल्य' शब्द का कविता में अर्थ है–
(अ) माता का प्रेम (ब) जगत का प्रेम
(स) भारत माता का प्रेम (द) ईश्वर का प्रेम।
उत्तर– (स) भारत माता का प्रेम।

(13) 'शतरंज के खिलाड़ी' किस विधा की रचना है?
(अ) निबंध (ब) नाटक
(स) कहानी (द) कविता।
उत्तर– (स) कहानी।

(14) प्रेमचंद का जन्म स्थान गाँव है–
(अ) लमही (ब) रिमहिया
(स) लामहिया (द) लोमहिया।
उत्तर– (अ) लमही।

(15) प्रेमचंद का जन्म कब हुआ?
(अ) 3 जुलाई, 1880 (ब) 31 जुलाई, 1888
(स) 13 जुलाई, 1889 (द) 31 जुलाई, 1880
उत्तर– (द) 31 जुलाई, 1880

(16) प्रेमचंद का वास्तविक नाम था–
(अ) धनपत राय (ब) प्रेमचंद
(स) गजोधर (द) धनपति राय।
उत्तर– (अ) धनपत राय।

(17) 'तिलिस्म–ए–होशरूबा' कितनी वर्ष की उम्र में पढ़ लिया था?
(अ) तेरह वर्ष (ब) नौ वर्ष
(स) सोलह वर्ष (द) पन्द्रह वर्ष।
उत्तर– (अ) तेरह वर्ष।

(18) प्रेमचंद जी ने बी.ए. की परीक्षा कब उत्तीर्ण की?
(अ) 1919 ई. (ब) 1917 ई.
(स) 1914 ई. (द) 1919 सं.
उत्तर– (अ) 1919 ई.

(19) प्रेमचंद की मृत्यु कब हुई?
(अ) 8 अक्टूबर, 1936 (ब) 18 अक्टूबर, 1935
(स) 7 अक्टूबर, 1936 (द) 31 अक्टूबर, 1936
उत्तर– (अ) 8 अक्टूबर, 1936

(20) प्रेमचंद जी ने लेखन की शुरूआत किस भाषा और नाम से की थी?
(अ) उर्दू–नवाबराय (ब) फारसी–नवाबचंद
(स) हिन्दी–प्रेमचंद (द) उर्दू–धम्पतराय।
उत्तर– (अ) उर्दू–नवाबराय।

(21) 'कथा–सम्राट' की उपाधि किसके द्वारा दी गयी थी?
(अ) दयानंद सरस्वती ने (ब) ब्रिटिश सरकार ने
(स) शरतचंद चट्टोपाध्याय ने (द) महात्मा गाँधी ने।
उत्तर– (स) शरतचंद चट्टोपाध्याय ने।

(22) 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी में 'रानी रूठेगी अपना सुहाग लेगी' है–
(अ) मुहावरा (ब) लोकोक्ति
(स) अलंकार (द) बिम्ब।
उत्तर– (ब) लोकोक्ति।

(23) इस कहानी के मुख्य पात्र हैं–
(अ) वाजिद अली (ब) मिरजा–मीर
(स) बेगम–मिरजा (द) बादशाह–बेगम।
उत्तर– (ब) मिरजा–मीर।

(24) निम्नलिखित में से कौन–सी कहानी प्रेमचंद की नहीं है?
(अ) पूस की रात (ब) बूढ़ी काकी
(स) कैलाशी नानी (द) कफन।
उत्तर– (स) कैलाशी नानी।

(25) शरद जोशी का जन्म कब और कहाँ हुआ?
(अ) 21 मई, 1931, उज्जैन (ब) 22 मई, 1931, इन्दौर
(स) 23 मई, 1932, देवास (द) 24 मई, 1933, मुम्बई।
उत्तर– (अ) 21 मई, 1931, उज्जैन।

(26) शरद जोशी का संबंध मूलतः किस परिवार से है?
(अ) मराठी–ब्राह्मण (ब) मद्रासी–ब्राह्मण
(स) गुजराती–ब्राह्मण (द) कोई नहीं।
उत्तर– (स) गुजराती–ब्राह्मण।

(27) 1990 में शरद जोशी किस उपाधि से सम्मानित हुए?
(अ) पद्म विभूषण (ब) पद्मश्री
(स) पद्मभूषण (द) उपर्युक्त सभी।
उत्तर– (ब) पद्मश्री।

(28) अन्न की अधिष्ठात्री देवी कहा गया है–
(अ) इल्ली को (ब) इला को
(स) लल्ली को (द) बिल्ली को।
उत्तर– (ब) इला को।

(29) इल्लियों को किसकी पुत्री कहा गया है?
(अ) पृथ्वी (ब) सृष्टि

(स) आकाश (द) वायु।
उत्तर– (अ) पृथ्वी।

(30) 'जीप पर सवार इल्लियाँ' किस विधा की रचना है?
(अ) कहानी (ब) निबंध
(स) नाटक (द) व्यंग्य निबंध।
उत्तर– (द) व्यंग्य निबंध।

(31) शहर के अखबारों में किसकी चर्चा जोरों पर थी?
(अ) गेहूँ की (ब) बाजरे की
(स) चने की (द) सभी की।
उत्तर– (स) चने की।

(32) अखबारों में किसकी तस्वीर छपी थी?
(अ) अफसर (ब) इल्ली
(स) किसान (द) जीप।
उत्तर– (ब) इल्ली।

(33) अफसर को किसकी कविता याद आई?
(अ) माखनलाल चतुर्वेदी (ब) मैथिलीशरण गुप्त
(स) महादेवी वर्मा (द) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला।
उत्तर– (ब) मैथिलीशरण गुप्त।

(34) प्राकृतिक विज्ञान के अनुसार इल्ली से तितली बनती है, यह किसने कहा?
(अ) लेखक ने (ब) अफसर ने
(स) लेखक की पुत्री ने (द) अफसर के पुत्र ने।
उत्तर– (स) लेखक की पुत्री ने।

(35) रामकथा का मूल आधार है–
(अ) बाल्मीकि रामायण (ब) वरवै रामायण
(स) कम्ब रामायण (द) राघव चरित।
उत्तर– (अ) बाल्मीकि रामायण।

(36) भारतीय वांड्मय में आदि कवि किसे कहा गया है?
(अ) वाल्मीकि (ब) तुलसीदास
(स) कृतिवास (द) कालिदास।
उत्तर– (अ) वाल्मीकि।

(37) 'अमानक जातक' किस परंपरा का ग्रंथ है?
(अ) बौद्ध (ब) सिख
(स) जैन (द) गुणभद्र।
उत्तर– (अ) बौद्ध।

(38) 'पउमचरिउ' किसकी कृति है–
(अ) स्वयंभू (ब) रविशेण
(स) परमार भोज (द) गुणभद्र।
उत्तर– (अ) स्वयंभू।

(39) कुवेरनाथ राय की कृति है–
(अ) रामायण महातीर्थम् (ब) रामायण
(स) रामचरितमानस (द) रामरसायन।
उत्तर– (अ) रामायण महातीर्थम्।

(40) भारतीय भाषाओं में रामकथा का जिन आयामों में वर्णन किया गया है, उसे कहते हैं
(अ) रामकथा (ब) रामोपाख्यान
(स) रामचरितमानस (द) रामसागर।
उत्तर– (ब) रामोपाख्यान।

(41) कम्ब रामायण किस भाषा का काव्य है?
(अ) तमिल (ब) तेलुगु
(स) कन्नड़ (द) मलयालम।
उत्तर– (अ) तमिल।

(42) 'कृतिवास रामायण' किस भाषा का काव्य है?
(अ) उड़िया (ब) बांग्ला
(स) हिन्दी (द) घासी।
उत्तर– (ब) बांग्ला।

(43) 'रंग रामायण' किस भाषा में लिखी गई है?
(अ) तेलुगू (ब) तमिल
(स) गुजराती (द) मराठी।
उत्तर– (अ) तेलुगू।

(44) राम के पिता का क्या नाम था?
(अ) रघु (ब) दशरथ
(स) अंशुमान (द) अज।
उत्तर– (ब) दशरथ।

(45) 'उत्साह' निबंध के लेखक कौन हैं?
(अ) आचार्य महावीर प्रसाद (ब) आचार्य हजारी प्रसाद
(स) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (द) रघुवीर सहाय।
उत्तर– (स) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

(46) इनमें से उत्साह का प्रकार कौन–सा नहीं है?
(अ) युद्धवीरता (ब) दानवीरता
(स) बुद्धिवीरता (द) धनवीरता।
उत्तर– (द) धनवीरता।

(47) इनमें से शुक्ल जी की आलोचनात्मक रचना है–
(अ) अभिव्यंजनावाद (ब) काव्य में रहस्यवाद
(स) काव्य में रसमीमांसा (द) चिंतामणि।
उत्तर– (द) चिंतामणि।

(48) 'चिंतामणि' किस तरह के निबंधों का संग्रह है?
(अ) आलोचनात्मक (ब) निबंधात्मक
(स) ऐतिहासिक (द) विवरणात्मक।
उत्तर– (अ) आलोचनात्मक।

(49) 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' किस तरह का ग्रंथ है?
(अ) आलोचनात्मक (ब) निबंधात्मक
(स) ऐतिहासिक (द) विवरणात्मक।
उत्तर– (अ) आलोचनात्मक।

(50) उनका अनूदित 'शशांक' उपन्यास किस भाषा का है?
(अ) बांग्ला (ब) तमिल

(स) मलयालम (द) अंग्रेजी।

उत्तर– (अ) बांग्ला।

(51) कर्म के अनुष्ठान में जो आनंद होता है, उसका विधान कितने रूपों में दिखाई पड़ता है–

(अ) दो (ब) तीन

(स) चार (द) पाँच।

उत्तर– (ब) तीन।

(52) 'बुद्धि द्वारा पूर्णरूप से निश्चित की हुई व्यापार–परंपरा का नाम ही प्रयत्न है।' यह किस निबंध का सूत्र है?

(अ) उत्साह (ब) क्रोध

(स) नाखून क्यों बढ़ते हैं (द) बूढ़ा बरगद।

उत्तर– (अ) उत्साह।

(53) शुक्ल जी का अनूदित ग्रंथ 'विश्वप्रपंच' मूलतः किस भाषा का है?

(अ) बांग्ला (ब) तमिल

(स) मलयालम (द) अंग्रेजी।

उत्तर– (द) अंग्रेजी।

(54) सूर, तुलसी जायसी ग्रंथावली किसकी हैं?

(अ) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (ब) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

(स) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (द) इनमें किसी की नहीं।

उत्तर– (ब) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

(55) 'प्रकृति ने भारतवर्ष को भी एक स्वतंत्र देश के रूप में सिरजा है, जो दुनिया से अलग और अपने–आपमें पूर्ण है तथा जिसके भीतर वसने वाले सव लोग भारतीय हैं।' किसका कथन है?

(अ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ब) विद्यानिवास मिश्र

(स) रामधारी सिंह 'दिनकर' (द) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

उत्तर– (स) रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(56) भारतवर्ष के नक्शे को ध्यान से देखने पर यह साफ दिखाई पड़ता है कि इस देश के प्राकृतिक दृष्टि से भाग हैं–

(अ) तीन (ब) चार

(स) पाँच (द) दो।

उत्तर– (अ) तीन।

(57) 'भारत का कोई भी भाग समूचे भारत से अलग जाकर स्वतंत्र होने की चेष्टा करे, यह अस्वाभाविक वात है।' किसने कहा?

(अ) दिनकर ने (ब) प्रसाद ने

(स) अरविंद ने (द) गाँधी ने।

उत्तर– (अ) दिनकर ने।

(58) पहाड़ों और समुद्रों से घिरे हुए इस विशाल देश में जो मौलिक एकता का भाव है, वह किसकी देन है?

(अ) भूगोल की (ब) राजनीति की

(स) धर्म की (द) अंग्रेज की।

उत्तर– (अ) भूगोल की।

(स) मलयालम (द) अंग्रेजी।
उत्तर– (अ) बांग्ला।

(51) कर्म के अनुष्ठान में जो आनंद होता है, उसका विधान कितने रूपों में दिखाई पड़ता है–
(अ) दो (ब) तीन
(स) चार (द) पाँच।
उत्तर– (ब) तीन।

(52) 'बुद्धि द्वारा पूर्णरूप से निश्चित की हुई व्यापार–परंपरा का नाम ही प्रयत्न है।' यह किस निबंध का सूत्र है?
(अ) उत्साह (ब) क्रोध
(स) नाखून क्यों बढ़ते हैं (द) बूढ़ा बरगद।
उत्तर– (अ) उत्साह।

(53) शुक्ल जी का अनूदित ग्रंथ 'विश्वप्रपंच' मूलतः किस भाषा का है?
(अ) बांग्ला (ब) तमिल
(स) मलयालम (द) अंग्रेजी।
उत्तर– (द) अंग्रेजी।

(54) सूर, तुलसी जायसी ग्रंथावली किसकी हैं?
(अ) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (ब) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(स) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (द) इनमें किसी की नहीं।
उत्तर– (ब) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

(55) 'प्रकृति ने भारतवर्ष को भी एक स्वतंत्र देश के रूप में सिरजा है, जो दुनिया से अलग और अपने–आपमें पूर्ण है तथा जिसके भीतर वसने वाले सव लोग भारतीय हैं।' किसका कथन है?
(अ) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (ब) विद्यानिवास मिश्र
(स) रामधारी सिंह 'दिनकर' (द) अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
उत्तर– (स) रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(56) भारतवर्ष के नक्शे को ध्यान से देखने पर यह साफ दिखाई पड़ता है कि इस देश के प्राकृतिक दृष्टि से भाग हैं–
(अ) तीन (ब) चार
(स) पाँच (द) दो।
उत्तर– (अ) तीन।

(57) 'भारत का कोई भी भाग समूचे भारत से अलग जाकर स्वतंत्र होने की चेष्टा करे, यह अस्वाभाविक वात है।' किसने कहा?
(अ) दिनकर ने (ब) प्रसाद ने
(स) अरविंद ने (द) गाँधी ने।
उत्तर– (अ) दिनकर ने।

(58) पहाड़ों और समुद्रों से घिरे हुए इस विशाल देश में जो मौलिक एकता का भाव है, वह किसकी देन है?
(अ) भूगोल की (ब) राजनीति की
(स) धर्म की (द) अंग्रेज की।
उत्तर– (अ) भूगोल की।

(59) 'ज्यादा मुसलमान तो ऐसे ही हैं जिनके पूर्वज हिन्दू थे और जो इस्लाम धर्म में जाने के समय अपनी हिन्दू आदतें अपने साथ ले गये।' यह किस निबंध का कथन है?
(अ) भारत एक है (ब) हमारी धरोहर
(स) मातृभूमि (द) एकता के सूत्र।
उत्तर– (अ) भारत एक है।

(60) भारतीय जनता की एकता के असली आधार हैं–
(अ) भारतीय दर्शन और साहित्य (ब) भारतीय दर्शन और राजनीति
(स) भारतीय साहित्य और नदियाँ (द) भारतीय खेल और साहित्य।
उत्तर– (अ) भारतीय दर्शन और साहित्य।

(61) फारसी लिपि को छोड़ दें तो भारत की अन्य सभी लिपियों की वर्णमाला–
(अ) एक ही है (ब) एक नहीं है
(स) अनेक हैं (द) सभी विकल्प गलत हैं।
उत्तर– (अ) एक ही है।

(62) रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म कब हुआ?
(अ) 23 सितम्बर, 1908 (ब) 24 सितम्बर, 1905
(स) 24 सितम्बर, 1908 (द) 24 सितम्बर, 1902
उत्तर– (अ) 23 सितम्बर, 1908

(63) दिनकर जी भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार कब से कब तक रहे?
(अ) 1965 से 1971 ई. (ब) 1964 से 1971 ई.
(स) 1965 से 1976 ई. (द) 1962 से 1974 ई.
उत्तर– (अ) 1965 से 1971 ई.

(64) 'संस्कृति के चार अध्याय' ग्रंथ कब प्रकाशित हुआ?
(अ) 1955 (ब) 1951
(स) 1956 (द) 1953
उत्तर– (स) 1956

(65) दिनकर जी किस विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष रहे?
(अ) बिहार (ब) नारायणपुर
(स) काशी (द) दिल्ली।
उत्तर– (अ) बिहार।

(66) दिनकर जी को ज्ञानपीठ से किस रचना के लिए सम्मानित किया गया?
(अ) उर्वशी (ब) रेणुका
(स) कुरुक्षेत्र (द) संस्कृत के चार अध्याय।
उत्तर– (अ) उर्वशी।

(67) दिनकर जी को 'पद्म विभूषण' से कब सम्मानित किया गया था?
(अ) 1950 में (ब) 1959 में
(स) 1953 में (द) 1954 में।
उत्तर– (ब) 1959 में।

(68) 'संस्कृति के चार अध्याय' के लिए दिनकर जी को कहाँ से सम्मान मिला था?
(अ) संस्कृति परिषद (ब) राजस्थानी अकादमी
(स) भोजपुरी अकादमी (द) साहित्य अकादमी।
उत्तर– (द) साहित्य अकादमी।

(69) इनमें से कौन–सी कृति दिनकर जी की नहीं है–

(अ) हुंकार (ब) रसवंती
(स) साकेत (द) रेणुका।
उत्तर– (स) साकेत।

(70) 'द्वापर युग' की ऐतिहासिक घटना महाभारत पर आधारित दिनकर जी के प्रबंध काव्य का नाम है–
(अ) 'कुरुक्षेत्र' (ब) 'द्वन्द्वगीत'
(स) परशुराम की प्रतीक्षा (द) 'हुंकार'
उत्तर– (अ) 'कुरुक्षेत्र'।

(71) हे राम! किसकी रचना है?
(अ) महात्मा गाँधी (ब) विद्यानिवास मिश्र
(स) रामधारी सिंह 'दिनकर' (द) विनोवा भावे।
उत्तर– (स) रामधारी सिंह 'दिनकर'।

(72) धर्म, नैतिकता और विज्ञान किस सन् की रचना है?
(अ) 1961 (ब) 1969
(स) 196 (द) 1959
उत्तर– (ब) 1969

(73) शंकराचार्य ने कितने ज्योतिर्लिंगों की स्थापना की?
(अ) 11 (ब) 7
(स) 9 (द) 12
उत्तर– (द) 12

(74) शृंगेरी मठ, कहाँ पर है?
(अ) दक्षिण भारत (ब) उत्तर भारत
(स) पश्चिम भारत (द) पूर्वी भारत।
उत्तर– (अ) दक्षिण भारत।

(75) वैशेषिक दर्शन किसका है?
(अ) कणादि (ब) गौतम
(स) जैमिनी (द) व्यास।
उत्तर– (अ) कणादि।

(76) पूर्व मीमांसा के प्रवर्तक कौन थे?
(अ) कणादि (ब) गौतम
(स) जैमिनी (द) व्यास।
उत्तर– (स) जैमिनी।

(77) चांडाल को गुरु मान जिन श्लोकों से उनकी वंदना की उसका नाम है–
(अ) नरपंचक (ब) प्रभुपंचक
(स) मनीषपंचक (द) गुरुपंचक।
उत्तर– (स) मनीषपंचक।

(78) कृष्ण के विषय में माता को बताने के लिए शंकराचार्य ने जिस अष्टक की रचना की उसका नाम है–
(अ) कृष्णाष्टक (ब) माधवाष्टक
(स) निम्बाष्टक (द) मधोष्टक।
उत्तर– (अ) कृष्णाष्टक।

(79) शंकराचार्य ने माँ को अद्वैत दर्शन समझाने हेतु किस ग्रंथ की रचना की?

(अ) जगतबोध (ब) कनकबोध
(स) तत्वबोध (द) ज्ञानबोध।
उत्तर– (स) तत्वबोध।

(80) शंकराचार्य के नर्मदा की प्रार्थना के स्तोत्र किस नाम से प्रसिद्ध है?
(अ) रूद्रधारा (ब) अलकधारा
(स) कपिलधारा (द) कनकधारा।
उत्तर– (द) कनकधारा।

(81) 'बृहतशंकर विजय' किसका लिखा ग्रंथ है?
(अ) चितसुखाचार्य (ब) निम्बकाचार्य
(स) शायणाचार्य (द) भागवतपाद।
उत्तर– (अ) चितसुखाचार्य।

(82) 'मंदिर में वही पहुँचता है जो धन्यवाद देने जाता है, धन्यवाद माँगते नहीं?' किस कथन है?
(अ) शंकराचार्य (ब) माधवाचार्य
(स) निम्बकाचार्य (द) रामानुजाचार्य।
उत्तर– (अ) शंकराचार्य।

(83) शंकराचार्य की माता का नाम क्या है?
(अ) आर्यम्बा देवी (ब) लक्ष्मी देवी
(स) आट्टुकाल देवी (द) निम्बका देवी।
उत्तर– (अ) आर्यम्बा देवी।

(84) शंकराचार्य के पिता का नाम क्या है?
(अ) शिवगुरु (ब) रामगुरु
(स) पिनराई (द) गोविन्द गुरु।
उत्तर– (अ) शिवगुरु।

(85) सदा + एव = सदैव में कौन–सी संधि है?
(अ) यण संधि (ब) वृद्धि संधि
(स) गुण संधि (द) दीर्घ संधि।
उत्तर– (ब) वृद्धि संधि।

(86) कला + आकृति = कलाकृति में कौन–सी संधि है?
(अ) दीर्घ संधि (ब) वृद्धि संधि
(स) गुण संधि (द) यम संधि।
उत्तर– (अ) दीर्घ संधि।

(87) पो + अन = पवन में कौन–सी संधि है?
(अ) दीर्घ संधि (ब) अयादि संधि
(स) गुण संधि (द) यण संधि।
उत्तर– (ब) अयादि संधि।

(88) नीरस का संधि विच्छेद होगा–
(अ) निः + रस (ब) नी + रस
(स) नीः + रस (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) निः + रस।

(89) यशोगान का संधि विच्छेद होगा–
(अ) यश + गान (ब) यशो + गान

(स) यशः + गान (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) यशः + गान।

(90) दृगंचल का संधि विच्छेद होगा–

(अ) दृक् + अंचल (ब) दृग + अंचल

(स) दृगः + अंचल (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (अ) दृक् + अंचल।

(91) अभ्युदय में कौन–सी संधि है?

(अ) यण संधि (ब) वृद्धि संधि

(स) गुण संधि (द) दीर्घ सधि।

उत्तर– (अ) यण संधि।

(92) चंद्रोदय में कौन–सी संधि है?

(अ) वृद्धि संधि (ब) यण संधि

(स) गुण संधि (द) दीर्घ संधि।

उत्तर– (स) गुण संधि।

(93) उत् + हार = उद्धार में कौन–सी संधि है?

(अ) गुणस्वर संधि (ब) व्यंजन संधि

(स) वृद्धि स्वर संधि (द) विसर्ग संधि।

उत्तर– (ब) व्यंजन संधि।

(94) तत् + उपरान्त में संधि का सही रूप होगा–

(अ) तदोपरान्त (ब) तदुपरान्त

(स) तदूपरान्त (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (ब) तदुपरान्त।

(95) निम्नलिखित में से वज्र का पर्यायवाची शब्द कौन–सा है?

(अ) शर (ब) अरण्य

(स) वण्य (द) कुलिश।

उत्तर– (द) कुलिश।

(96) निम्नलिखित में से शरीर का पर्यायवाची शब्द कौन–सा है?

(अ) उर (ब) पट

(स) वपु (द) शुचि।

उत्तर– (स) वपु।

(97) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द प्रकाश का पर्यायवाची शब्द नहीं है?

(अ) पुलिन (ब) द्युति

(स) दीप्ति (द) प्रभा।

उत्तर– (अ) पुलिन।

(98) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द सिंह का पर्यायवाची शब्द नहीं है?

(अ) मृगराज (ब) भृंगराज

(स) वनराज (द) मृगारि।

उत्तर– (ब) भृंगराज।

(99) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द विवाह का पर्यायवाची शब्द नहीं है?

(अ) परिणय (ब) पाणिग्रहण

(स) प्रणय (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) प्रणय।

(100) निम्नलिखित में से उच्छवास का अर्थ है–
(अ) ऊपर आने वाला श्वास (ब) नीचे जाने वाला श्वास
(स) साधारण श्वास (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) ऊपर आने वाला श्वास।

(101) निम्नलिखित में से कृतघ्न का अर्थ है–
(अ) उपकार मानने वाला (ब) उपकार न मानने वाला
(स) अच्छी बुद्धि वाला (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (ब) उपकार न मानने वाला।

(102) निम्नलिखित में से छिद्रान्वेषण का अर्थ होगा–
(अ) दूसरे के गुण देखना (ब) दूसरे के अवगुण देखना
(स) दूसरों की भलाई करना (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (ब) दूसरे के अवगुण देखना।

(103) निम्नलिखित में से सव्यसाची का अर्थ है–
(अ) बाएँ हाथ से भी बाण चलाने वाला
(ब) सिर्फ दाएँ हाथ से बाण चलाने वाला
(स) शब्दभेदी बाण चलाने वाला (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) बाएँ हाथ से भी बाण चलाने वाला।

(104) अपने कर्तव्य का निर्णय न करने वाला कहलाता है–
(अ) गूढ़ (ब) किंकर्त्तव्यविमूढ़
(स) विमुग्ध (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (ब) किंकर्त्तव्यविमूढ़।

(105) कुश की नोंक की तरह तेज बुद्धिवाला व्यक्ति कहलाता है–
(अ) तीक्ष्ण बुद्धि (ब) तीव्र बुद्धि
(स) कुशाग्र बुद्धि (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (स) कुशाग्र बुद्धि।

(106) चिकीर्षा का अर्थ होता है–
(अ) कार्य करने की इच्छा (ब) आराम करने की इच्छा
(स) भोजन करने की इच्छा (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) कार्य करने की इच्छा।

(107) अनाहूत का अर्थ है–
(अ) जो बुलाने पर आया हो (ब) जो बिना बुलाए आया हो
(स) जो तुरन्त आ गया हो (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (ब) जो बिना बुलाए आया हो।

(108) जिसे प्रमाण से सिद्ध न किया जा सके अथवा जिसकी नाप–तौल संभव न हो, उसे कहते हैं–
(अ) प्रमेय (ब) अप्रमेय
(स) अज्ञेय (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (ब) अप्रमेय।

(109) क्षीणकाय का अर्थ होता है–
(अ) सबल शरीर वाला (ब) लम्बे शरीर वाला
(स) दुबले–पतले शरीर वाला (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (स) दुबले–पतले शरीर वाला।

(110) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द अनाविल का विलोम शब्द है?
(अ) आविल (ब) स्वच्छ
(स) निर्मल (द) पंकरहित।
उत्तर– (अ) आविल।

(111) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द हर्ष का विलोम शब्द है?
(अ) प्रसन्नता (ब) अमर्ष
(स) विषाद (द) प्रतिसाद।
उत्तर– (स) विषाद।

(112) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द वैमनस्य का विलोम शब्द है?
(अ) बुराई (ब) बैर
(स) सौमनस्य (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (स) सौमनस्य।

(113) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द अपकर्ष का विलोम शब्द है?
(अ) निष्कर्ष (ब) पराभव
(स) उत्कर्ष (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (स) उत्कर्ष।

(114) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द प्रतीची का विलोम शब्द है?
(अ) उदीची (ब) ईची
(स) प्राची (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (स) प्राची।

(115) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द अर्वाचीन का विलोम शब्द है?
(अ) आधुनिक (ब) नवीन
(स) प्राचीन (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (स) प्राचीन।

(116) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द मूढ़ का विलोम शब्द है?
(अ) निष्कर्ष (ब) पराभव
(स) उत्कर्ष (द) विद्वान।
उत्तर– (द) विद्वान।

(117) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द आकर्षण का विलोम शब्द है?
(अ) प्रकर्षण (ब) कर्षण
(स) उत्कर्षण (द) विकर्षण।
उत्तर– (द) विकर्षण।

(118) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द तिमिर का विलोम शब्द है?
(अ) अंधकार (ब) तमस
(स) प्रकाश (द) अंधेरा।
उत्तर– (स) प्रकाश!

(119) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द विधि का विलोम शब्द है?
(अ) विधान (ब) प्रावधान
(स) निषेध (द) उत्सेध।
उत्तर– (स) निषेध।

(120) अंग्रेजी के 'रिलीजन' शब्द का सही अनुवाद होता है–
(अ) मत–पंथ (ब) धर्म

(द) इनमें से कोई नहीं।
(स) धार्मिक
(द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (द) इनमें से कोई नहीं।

(121) प्राचीन भारत में प्राकृतिक आपदाओं से प्रजा को मुक्त करने हेतु राजाओं के पास विशेष संचित धनराशि कहलाती थी–
(अ) आपदा कोष (ब) न्याय कोष
(स) धर्म कोष (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) धर्म कोष।

(122) भारतीय चिंतन में धर्म के दो कार्य बताए गए हैं, पहला कार्य है कर्म तो दूसरा कार्य है–
(अ) धन संग्रह (ब) भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति
(स) अध्यात्म (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) अध्यात्म।

(123) याज्ञवल्क्य स्मृति में धर्म के कितने लक्षण बताए गए हैं?
(अ) दस (ब) पाँच
(स) नौ (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) नौ।

(124) भारतीय संस्कृति में पहला पुरुषार्थ कौन–सा माना गया है?
(अ) काम (ब) मोक्ष
(स) धर्म (द) अर्थ।

उत्तर– (स) धर्म।

(125) अद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक दार्शनिक हैं–
(अ) आदि शंकराचार्य (ब) माधवाचार्य
(स) गोविंदाचार्य (द) बल्लभाचार्य।

उत्तर– (अ) आदि शंकराचार्य।

(126) 'अहं ब्रह्मास्मि' कौन–से सिद्धान्त का महावाक्य है?
(अ) अद्वैत (ब) विशिष्टाद्वैत
(स) द्वैत (द) द्वैताद्वैत।

उत्तर– (अ) अद्वैत।

(127) अद्वैत सिद्धान्त के अनुसार परम तत्व कौन–सा है?
(अ) माया (ब) जीव
(स) ब्रह्म (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) ब्रह्म।

(128) ब्रह्म का स्वरूप लक्षण है– 'सच्चिदानंद', सच्चिदानंद में सत् का अर्थ है–
(अ) चेतना (ब) आनंद
(स) अस्तित्व में होना (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (स) अस्तित्व में होना।

(129) आदि शंकराचार्य के गुरु का नाम है–
(अ) गौड़पादाचार्य (ब) मध्वाचार्य
(स) गोविंदाचार्य (द) बल्लभाचार्य।

उत्तर– (स) गोविंदाचार्य।

(130) भाषा का सबसे पहला संबंध है–
(अ) बोलने से (ब) पढ़ने से

(स) लिखने से (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) बोलने से।

(131) भाषा का मानकीकरण है–
(अ) विकल्पों में से एक का चयन (ब) अनेक विकल्पों का चयन
(स) वैकल्पिक प्रयोगों की छूट (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) विकल्पों में से एक का चयन।

(132) शासन–प्रशासन एवं राजकाज की भाषा कहलाती है–
(अ) राज्य भाषा (ब) राज भाषा
(स) राष्ट्र भाषा (द) सम्पर्क भाषा।
उत्तर– (ब) राज भाषा।

(133) भाषा की तुलना में बोली का क्षेत्र होता है–
(अ) असीमित (ब) सीमित
(स) वृहत्तर (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (ब) सीमित।

(134) जब कोई बोली भौगोलिक विस्तार के कारण किसी प्रांत या उपप्रान्त में प्रचलित हो जाती है तब कहलाती है–
(अ) भाषा (ब) उपबोली
(स) विभाषा (द) राजभाषा।
उत्तर– (स) विभाषा।

(135) अवधारणा का स्वरूप है–
(अ) मूर्त (ब) अमूर्त
(स) वैकल्पिक (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (ब) अमूर्त।

(136) अवधारणा का स्थान महत्वपूर्ण है–
(अ) सिद्धान्त निर्माण की प्रक्रिया में (ब) भौतिक निर्माण की प्रक्रिया में
(स) प्राकृतिक निर्माण की प्रक्रिया में (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) सिद्धान्त निर्माण की प्रक्रिया में।

(137) अवधारणा से स्पष्ट होता है–
(अ) सामान्य अर्थ (ब) विशिष्ट अर्थ
(स) संक्षिप्त अर्थ (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (ब) विशिष्ट अर्थ।

(138) अवधारणा की सृष्टि होती है–
(अ) अनुभवजनित तथ्यों के आधार पर (ब) कल्पना के आधार पर
(स) स्वभाव के आधार पर (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) अनुभवजनित तथ्यों के आधार पर।

(139) अनुसंधान की प्रक्रिया में अवधारण है–
(अ) परिवर्तनशील (ब) अपरिवर्तनशील
(स) स्थिर (द) इनमें से कोई नहीं।
उत्तर– (अ) परिवर्तनशील।

(140) आर्थिक उदारीकरण का उद्देश्य है–
(अ) शासन द्वारा नियंत्रित बाजार–व्यवस्था का निर्माण करना
(ब) स्वतंत्र बाजार–व्यवस्था का निर्माण करना

(स) आर्थिक प्रतिबंधों को सशक्त करना
(द) इनमें से कोई नहं।

उत्तर– (ब) स्वतंत्र बाजार–व्यवस्था का निर्माण करना।

(141) आर्थिक उदारीकरण की स्थिति में–
(अ) व्यापार व्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप बढ़ जाता है
(ब) व्यापार व्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप कम हो जाता है
(स) व्यापार व्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप पूर्णतः स्थापित हो जाता है
(द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (ब) व्यापार व्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप कम हो जाता है।

(142) आर्थिक उदारीकरण की प्रक्रिया में शामिल नहीं है–
(अ) उदारीकरण (ब) निजीकरण
(स) वैश्वीकरण (द) सरकारीकरण।

उत्तर– (ब) निजीकरण।

(143) पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की पूरा मॉडल योजना केन्द्रित थी–
(अ) ग्रामीण विकास पर (ब) नगरीय विकास पर
(स) बड़े उद्योगों के विकास पर (द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर– (अ) ग्रामीण विकास पर।

(144) भारत में आर्थिक उदारीकरण का सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है–
(अ) कृषि क्षेत्र पर (ब) उद्योग क्षेत्र पर
(स) सेवा क्षेत्र पर (द) लघु एवं कुटीर उद्योगों पर।

उत्तर– (अ) कृषि क्षेत्र पर।

❑❑❑

विगत वर्ष परीक्षा में पूछे गये महत्वपूर्ण प्रश्न

(1) मैथिलीशरण गुप्त की रचना है–
(अ) कामायनी (ब) पुष्प की अभिलाषा
(स) मातृभूमि (द) माताभूमि पुत्रोहम् पृथिव्याः। उत्तर–(स)

(2) 'मातृभूमि' कविता किस युग में रची गई है?
(अ) भक्ति युग (ब) छायावादी युग
(स) द्विवेदी युग (द) राष्ट्रवादी युग। उत्तर– (स)

(3) धनपतराय किस लेखक का असली नाम था?
(अ) शरद जोशी (ब) प्रेमचन्द
(स) दिनकर (द) उपरोक्त में से कोई नहीं। उत्तर– (ब)

(4) 'जीप पर सवार इल्लियाँ' है–
(अ) एक ललित निबन्ध (ब) एक आप बीती
(स) एक हास्य कथा (द) एक व्यंग्य निबन्ध। उत्तर– (द)

(5) मातृभूमि किसकी सगुण मूर्ति है?
(अ) गुरु की (ब) माता की
(स) ईश्वर की (द) उपरोक्त सभी की। उत्तर– (स)

(6) आचार्य शुक्ल का लिखा हुआ निबन्ध है–
(अ) उत्साह (ब) गेहूँ बनाम गुलाब
(स) ठेले पर हिमालय (द) अशोक के फूल। उत्तर– (अ)

(7) 'चिन्तामणि' किसका निबन्ध संग्रह है?
(अ) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी (ब) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी
(स) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (द) आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी।

(8) निम्न में से भावमूलक निबन्ध है– उत्तर– (स)
(अ) अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा (ब) कुटज
(स) मातृभूमि (द) उत्साह।

(9) अन्न की अधिष्ठात्री देवी किसे कहा गया है? उत्तर– (द)
(अ) नष्ठार्थी देव की (ब) इल्ली को
(स) इला को (द) उपरोक्त में से कोई नहीं। उत्तर– (स)

(10) तुलसीदास द्वारा लिखित रामकथा कौन–सी है?
(अ) रामायण (ब) रामचरित मानस
(स) रामचन्द्रिका (द) सुन्दर काण्ड। उत्तर–(ब)

(11) रंगनाथ रामायण किस भाषा में लिखी गई है?
(अ) तमिल में (ब) उड़िया में
(स) तेलगू में (द) कन्नड़ में। उत्तर– (स)

(12) भारतीयों को एक रखने के मूल में है–
(अ) सांस्कृतिक एकता (ब) संविधान
(स) भाषायी विविधता (द) राष्ट्रगीत। उत्तर– (अ)

(13) अद्वैतवाद के प्रतिपादक हैं–
(अ) स्वामी दयानंद सरस्वती (ब) आदि शंकराचार्य
(स) रामकृष्ण परमहंस (द) स्वामी विवेकानन्द। उत्तर– (ब)

(14) आदि शंकराचार्य द्वारा गुजरात में किस पीठ को स्थापित किया गया था?
(अ) गोवर्धन पीठ (ब) शारदापीठ
(स) श्रृंगेरी पीठ (द) ज्योतिष पीठ। उत्तर– (ब)

(15) सारंग शब्द है–
(अ) अनेकार्थी (ब) विपरीतार्थी
(स) समानार्थी (द) विधेयार्थी। उत्तर– (अ)

(16) जिसका जन्म पहले हुआ है, वह कहलाता है–
(अ) वरिष्ठ (ब) सहोदर
(स) बड़ा (द) अग्रज। उत्तर– (द)

(17) प्रत्यक्ष का विलोमार्थी शब्द है–
(अ) छद्म (ब) अप्रत्यक्ष
(स) परोक्ष (द) अदृश्य। उत्तर– (ब)

(18) 'जो अच्छे कुल में उत्पन्न हुआ हो' इस शब्द समूह के लिए एक शब्द है–
(अ) उच्चवाणी (ब) कुलीन
(स) रक्त का निर्माण करना (द) उपरोक्त में से कोई नहीं। उत्तर– (ब)

(19) भारतीय संविधान में कितनी भाषाओं को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है?
(अ) 18 (ब) 19

(स) 22 (द) 20

(20) भारत की राष्ट्रभाषा है– उत्तर– (अ)
(अ) हिन्दी (ब) संस्कृत
(स) खड़ीबोली (द) उपरोक्त में से कोई नहीं।

(21) रात्रि का सही विलोम है– उत्तर– (अ)
(अ) दिवस (ब) सूर्योदय
(स) दिन (द) दिवसा।

(22) 'इत्यादि' शब्द में कौन–सी संधि है? उत्तर– (अ)
(अ) व्यंजन संधि (ब) यण संधि
(स) दीर्घ संधि (द) उपरोक्त में से कोई नहीं।

(23) 'अन्नाभाव' का संधि विच्छेद है– उत्तर– (ब)
(अ) अन्न + अभाव (ब) अन्ना + भाव
(स) अन्न + भाव (द) अन् + अभाव।

(24) निम्न में से स्वर संधि का उदाहरण है– उत्तर– (अ)
(अ) उल्लास (ब) वागीश
(स) मनोयोग (द) विद्यार्थी।

(25) 'मातृभूमि' कविता में भारतवासियों की देह किससे बनी हुई बताई गई है? उत्तर– (द)
(अ) संस्कारों से (ब) देवभूमि की रज से
(स) मातृभूमि की मिट्टी से (द) उपरोक्त सभी से।

(26) 'मातृभूमि' कविता की रचना किस युग में हुई है? उत्तर– (स)
(अ) भक्ति युग (ब) छायावादी युग
(स) द्विवेदी युग (द) राष्ट्रवादी युग।

(27) 'सोज वतन' किस लेखक की पहली कृति का नाम है? उत्तर– (स)
(अ) शरद जोशी (ब) प्रेमचन्द
(स) दिनकर (द) उपरोक्त में से कोई नहीं।

(28) इनमें से कौन–सा व्यंग्य निबन्ध है? उत्तर– (ब)
(अ) उत्साह (ब) करुणा
(स) अशोक के फूल (द) जीप पर सवार इल्लियाँ।

(29) मीर साहब के पास घुड़सवार को किसने भेजा था? उत्तर– (द)
(अ) मीर साहब की बेगम ने (ब) मिरजा ने
(स) नवाब वाजिद अली शाह ने (द) फौजी अधिकारी ने।

(30) आचार्य शुक्ल के निबन्ध संग्रह का नाम है– उत्तर– (द)
(अ) चिंतामणि (ब) निबन्ध मंजूषा
(स) निबन्धावली (द) मनोभाव।

(31) लखनऊ पर किसने अधिकार किया? उत्तर– (अ)
(अ) वाजिद अली शाह की सेना ने (ब) ब्रिटिश शासन ने
(स) मीर साहब की बेगम ने (द) ईस्ट इंडिया कम्पनी की फौज ने।

(32) निम्न में शरद जोशी का व्यंग्य लेख है– उत्तर– (द)
(अ) ठेले पर हिमालय (ब) अफसर
(स) जीप पर सवार इल्लियाँ (द) उपरोक्त में से कोई नहीं। उत्तर– (स)

(33) चिंतन का सही विलोम है–

(अ) अचेतन (ब) निश्चेतन
(स) जड़ (द) उपरोक्त में से कोई नहीं। उत्तर– (अ)

(34) गुजराती भाषा में कौन–सी रामायण लिखी गई है?
(अ) रामायणपुराण (ब) अध्यात्म रामायण
(स) रंगनाथ रामायण (द) कृतिवास रामायण। उत्तर– (अ)

(35) 'यद्यपि' का सही संधि–विच्छेद है–
(अ) यदि + अपि (ब) यद्य + अपि
(स) यद्य + पि (द) उपरोक्त में से कोई नहीं। उत्तर– (अ)

(36) आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित प्रथम पीठ है–
(अ) गोवर्धन पीठ (ब) शारदा पीठ
(स) श्रृंगेरी पीठ (द) ज्योतिष पीठ। उत्तर– (ब)

(37) निम्न में से अनेकार्थी शब्द है–
(अ) सारंग (ब) आकाश
(स) विवेक (द) उपरोक्त सभी। उत्तर– (अ)

(38) गोद लिया हुआ पुत्र, कहलाता है–
(अ) ग्रहीत (ब) सहोदर
(स) अंगीकृत (द) दत्तक। उत्तर– (द)

(39) 'आभ्यंतर' का विलोमार्थी शब्द है–
(अ) प्रकट (ब) प्रत्यक्ष
(स) बाह्य (द) बाहरी। उत्तर– (स)

(40) 'जो सब कुछ जानता है' इस शब्द समूह के लिए एक शब्द है–
(अ) सर्वज्ञाता (ब) सर्वज्ञ
(स) ज्ञानी (द) उपरोक्त सभी। उत्तर– (ब)

(41) मध्यप्रदेश की राजभाषा है–
(अ) हिन्दी (ब) संस्कृत
(स) खड़ी बोली (द) उपरोक्त में से कोई नहीं। उत्तर– (अ)

(42) 'स्वागत' शब्द में कौन सी संधि है?
(अ) व्यंजन संधि (ब) यण संधि
(स) दीर्घ संधि (द) उपरोक्त में से कोई नहीं। उत्तर– (ब)

(43) 'अन्तर्गत' का सही संधि विच्छेद होगा–
(अ) अन्तः + गत (ब) अन्तर + गत
(स) अन्त् + गत (द) अन्त + र्गत। उत्तर– (अ)

(44) निम्न में से स्वर संधि का उदाहरण है–
(अ) उल्लास (ब) बागीश
(स) मनोयोग (द) वीरेन्द्र। उत्तर– (द)

(45) मातृभूमि कविता साहित्य के किस युग की कविता है?
(अ) भारतेन्दु युग (ब) द्विवेदी युग
(स) छायावादी युग (द) प्रगतिवादी युग। उत्तर– (ब)

(46) मातृभूमि कविता में मातृभूमि के स्तुति के गीत कौन गाता है?
(अ) पक्षी (ब) सूर्य चन्द्र
(स) ईश्वर (द) वृक्ष। उत्तर– (अ)

(47) शतरंज के खिलाड़ी कहानी का उद्देश्य क्या है?

(अ) शतरंज के प्रति विरक्ति पैदा करना
(ब) मीर व मिरजा की नाराजगी दिखाना
(स) गुलामी के कारणों के प्रति सचेत करना
(द) व्यक्तिगत स्वार्थों का चित्रण करना।

(48) मुंशी प्रेमचन्द का वास्तविक नाम क्या था? उत्तर– (स)
(अ) नबाबराय (ब) मुंशी प्रेमराय
(स) धनपतराय (द) कोई नहीं।

(49) जीप पर सवार इल्लियाँ साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है? उत्तर– (स)
(अ) व्यंग्य (ब) कहानी
(स) संस्मरण (द) निबन्ध।

(50) अन्न की अधिष्ठात्री देवी किसे कहा गया है? उत्तर– (अ)
(अ) इल्ली को (ब) इला को
(स) खेत को (द) जलवायु को।

(51) दुनिया का आदि कवि किसे माना जाता है? उत्तर– (ब)
(अ) वेदव्यास को (ब) विमलसूरि को
(स) बाल्मीकी को (द) क्षेमेन्द्र को।

(52) चम्पू रामायण के रचनाकार का नाम क्या है? उत्तर– (स)
(अ) परमार भोज (ब) तुलसीदास
(स) केशवदास (द) कालीदास।

(53) उत्साह निबन्ध किस मनोविकार पर आधारित है? उत्तर– (अ)
(अ) क्रोध (ब) प्रेम
(स) आनन्द (द) श्रद्धा।

(54) 'भारतीयों' की एकता के मूल में मुख्य क्या है? उत्तर– (स)
(अ) संविधान (ब) सांस्कृतिक एकता
(स) स्वभाव (द) कोई नहीं।

(55) आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित शृंगेरी पीठ की स्थापना किस वेद के आधार पर की गई? उत्तर– (ब)
(अ) ऋग्वेद (ब) युजर्वेद
(स) सामवेद (द) अथर्ववेद।

(56) अन्तःकरण में कौन–सी सन्धि है? उत्तर– (ब)
(अ) गुण सन्धि (ब) व्यंजन सन्धि
(स) स्वर सन्धि (द) विसर्ग–सन्धि।

(57) रत्नाकर शब्द का समानार्थी शब्द कौन–सा है? उत्तर– (द)
(अ) समुद्र (ब) तालाब
(स) नाला (द) नदी।

(58) निखट्टू शब्द है– उत्तर– (अ)
(अ) देशज (ब) तत्सम
(स) आगत (द) तद्भव।

(59) निम्नलिखित में से कौन सा शब्द 'कमल' का पर्यायवाची नहीं है? उत्तर– (ब)
(अ) नीरज (ब) नीरद
(स) जलज (द) अम्बज।

(60) अनुग्रह शब्द का विलोम क्या है?

(अ) आग्रह (ब) संग्रह
(स) ग्रहण (द) विग्रह। उत्तर– (द)

(61) 'ईश्वर में विश्वास करने वाला' के लिए एक शब्द होगा–
(अ) अतुलनीय (ब) अकथित
(स) आस्तिक (द) नास्तिक। उत्तर– (स)

(62) निम्न में से 'अनेकार्थी' शब्द समूह का चयन कीजिए–
(अ) कनक–धतूरा (ब) क्षत्र–छत्र
(स) कोश–कोष (द) तुहिन–तिमिर। उत्तर– (अ)

(63) छीना–झपटी किस प्रकार का शब्द समूह है?
(अ) पर्यायवाची (ब) अनेकार्थी
(स) विलोमार्थी (द) शब्दयुग्म। उत्तर– (द)

(64) धर्म शब्द किस भाषा के रिलीजन शब्द का शुद्ध रूपान्तरण है?
(अ) फ्रेंच (ब) डच
(स) अंग्रेजी (द) इनमें से कोई नहीं। उत्तर– (स)

(65) मिथक शब्द किस भाषा के 'मिथ' शब्द का समानार्थी है?
(अ) अंग्रेजी (ब) संस्कृत
(स) प्राकृत (द) पाली। उत्तर– (ब)

(66) अद्वैतवाद का सम्बन्ध निम्न में किससे है–
(अ) सामवेद (ब) ज्योतिष
(स) वेदान्त (द) पुराण। उत्तर– (स)

(67) हिन्दी भाषा की लिपि क्या है?
(अ) ब्राम्ही (ब) मंदारिन
(स) देवनागरी (द) लेटिन। उत्तर– (स)

(68) मातृभूमि कविता के रचनाकार का नाम क्या है?
(अ) सियारामशरण गुप्त (ब) मैथिलीशरण गुप्त
(स) जगदीश चन्द्र गुप्त (द) रामधारी सिंह दिनकर। उत्तर– (ब)

(69) शतरंज के खिलाड़ी कहानी के माध्यम से दिखाया गया है?
(अ) भारतीय शासकों का पतन (ब) शतरंज खेल का महत्व
(स) अंग्रेज शासकों द्वारा दमन (द) हारने वाले खिलाड़ी की मनोदशा।
उत्तर– (स)

(70) 'जीप पर सवार इल्लियाँ' में इल्लियों को किसकी पुत्री कहा गया है?
(अ) पृथ्वी की (ब) चने के पौधे की
(स) गोबर की (द) जलवायु की। उत्तर– (अ)

(71) बाल्मिकी रामायण किस भाषा में रचित है?
(अ) संस्कृत (ब) हिन्दी
(स) पालि (द) प्राकृत। उत्तर– (अ)

(72) साहित्य मीमांसकों ने उत्साह के कितने भेद बताए हैं?
(अ) चार (ब) पाँच
(स) तीन (द) दो। उत्तर– (ब)

(73) भारत की विविधता का सबसे बड़ा लक्षण है–
(अ) हमारा पहनावा (ब) हमारी भाषा
(स) हमारा साहित्य (द) हमारी चिन्तनधारा। उत्तर– (ब)

(74) शंकराचार्य ने वेदान्त के किस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया?
(अ) बौद्ध दर्शन (ब) न्याय दर्शन
(स) द्वैतवाद (द) अद्वैतवाद। उत्तर– (द)

(75) ज्योतिपीठ पीठम का निर्माण आदि शंकराचार्य ने इस वेद के आधार पर किया था–
(अ) ऋग्वेद (ब) अथर्ववेद
(स) सामवेद (द) यजुर्वेद। उत्तर– (द)

(76) ब्रह्मसूत्र भाष्य के रचनाकार का नाम है–
(अ) बाल्मिकी (ब) आदि शंकराचार्य
(स) स्वामी विवेकानन्द (द) वेदव्यास। उत्तर– (ब)

(77) जीप पर सवार इल्लियाँ विधा है–
(अ) कहानी (ब) संस्मरण
(स) निबन्ध (द) व्यंग्य। उत्तर– (ब)

(78) सर्वप्रथम किस मुगल शासक ने रामकथा का फारसी में अनुवाद कराया?
(अ) बाबर (ब) हुमायूँ
(स) अकबर (द) जहाँगीर। उत्तर– (द)

(79) शंकराचार्य का जन्म स्थान है–
(अ) महाराष्ट्र (ब) उड़ीसा
(स) केरल (द) बंगाल। उत्तर– (स)

(80) 'शंतरंज के खिलाड़ी' कहानी में घटित घटनाक्रम का किस शहर से सम्बन्ध है?
(अ) लखनऊ (ब) बनारस
(स) इलाहाबाद (द) दिल्ली। उत्तर– (स)

(81) साहसपूर्ण आनन्द की उमंग का नाम है–
(अ) उदारता (ब) उत्साह
(स) क्षमा (द) क्रोध। उत्तर– (अ)

(82) 'भारत एक है' नामक निबन्ध श्री रामधारी सिंह दिनकर की इस पुस्तक से लिया गया है।
(अ) उर्वशी (ब) संस्कृति के चार अध्याय
(स) भारत एक खोज (द) हमारी सांस्कृतिक एकता। उत्तर– (ब)

(83) 'जनता द्वारा जनता का जनता के लिए शासन' को 'जनतंत्र' कहते हैं। जनतंत्र शब्द है–
(अ) एकार्थी (ब) समानार्थी
(स) अनेकार्थी (द) विलोमार्थी। उत्तर– (अ)

(84) नग शब्द पर्यायवाची है–
(अ) नाग का (ब) हाथी का
(स) पर्वत का (द) रत्न का। उत्तर– (द)

(85) अत्यधिक का सन्धि विच्छेद है–
(अ) अत्या + धिक (ब) अति + अधीक
(स) अती + अधिक (द) अति + अधिक। उत्तर– (द)

(86) जल–पान शब्द है–
(अ) पर्यायवाची (ब) युग्म
(स) समानार्थक (द) विलोम। उत्तर– (ब)

❑❑❑